

344

ॐ नमः श्री व ऊ स ला य ॥ ॥ कृपां दि का या वि धि वा स्य त या ॥ ॥ कृपां पूर्व सि वा न ॥ ताल
ला व क ॥ ना यः पा ना सः धूः गुं गुं सि फलः अ ऊ नः ॐ का य काः वि लः थू लिः ताल ला का श
दि गु द क स जा उ म न ॥ ॥ था प ना थः र्थः स ग नः सि फ नः सा ह निः उं वाः था पिंः दि गु व लिः
कृपा धर्म था कालि नः ग्व ल १० ग्व यः सा हा छि द डि ना ज्ञान काः अ (ख) ख ना या क रु नः
य ता ॥ ॥ थ ना धर्म था कालि नः पू जा लाल जा य य क ॥ धू यः जा प थ नः स्वरु गु ध य जा
गु न म लु लः शि स मा धिः वि धि पूर्व क थः पू जा या द श ह य ॥ थ न उ पा थ रु नीः ॐ का
प काः अ ऊ नः गुं गुः सि फः वि लः ता व न या यः च वा पा ह सीः आ वं म जा य या य ॥ ॥ वि
धि र्थ क र्म धू न का डाः ऊ डा य म लु ल सः स्था प ना या य ॥ खा ऊः था पिंः म ताः का वि न्न न

कृपासुः ग्वयनं लतयः चक्रसम्बन्धवज्रवावाहीः स्वद्वयं पूजायाय ॥ गुन्मलुल
सिमाधिदानं ॥ दवपूजाधूनकाडाः चाकपूजायाय ॥ दगुवलिविय ॥ स्वानकि (गमना
नः गून्मलुलः दकिनाः क्रमापनयाय ॥ पंचाकसकाय ॥ सिद्धः माहनिः सगदीकाकाय
सिद्धलेतिक ॥ थनाउपाध्वानेः नन्दिपालयः नमस्कात्रकाय ॥ गितधन्नादिय ॥ स्वा
यकाय ॥ गीतद्वंद्वदह ॥ ॐ ॥ **थुतिपूर्वसिवायाविधिस्तोत्रा ॥**

ॐ नमः श्रीलोकनाथाय ॥ ॥ थनाश्रमवृत्तविधिसाधनाया ॥ कृपाकलमपूजावि
धिरूपायनायाय ॥ अमाद्यपाशलाकम्बनयापतिमावाय ॥ स्वावकिजाकिनडयीकम
लुलसः अमाद्यपाशकलसतया ॥ ग्वलदवाकलमवायाडाः मलुलसडयकः कलः

न वायु कर्म थ ॥ पूर्व स न्न कृ ग वि द्वा ॥ उ पा ध्या य ता ॥ द क्षि त न्न प स्ना न पा थ क
य ता ॥ प चि म न्न क य ध्वा ॥ थ वि वा ॥ उ रु न कं धा न ॥ क ल्या गु ल ॥ न्न ए न्न पू रु क ॥
ध म्ब धा लि को ता ॥ नै अ ल्प ए व त य ध्वा ॥ उ रु न सा ध क ॥ पो वा वि क ॥ वि प्र का न धा
॥ वा यु द्य ड लं ग त रु ल ॥ वि ता का नि य ता ॥ ॐ न्न स न्न क य ध्वा ॥ रु क क्रि य ता
॥ म (ध्व) स (ध्व) त य ध्वा ॥ गु न्न रु ज वि ॥ ॥ थ ना सूर्या र्घ्या य ॥ गु न्न पा दा र्घ्यं
या ॥ प च्छ ग द्य (ध्व) ध न या य ॥ पू जा श्री गु ॥ आ स न्न रं दि ॥ पू जा स क ल्या य ॥ सूरु स
ध न या ॥ गु न्न म लु ल ॥ लो क पा ल व लि ॥ वि स र्ज न ॥ न रु स्य ध्वा ॥ ॥ प्रि स मा धि ॥ क ल
स पू जा धू न का ड ॥ न्न मा ध पा स म लु ल पू जा या य ॥ जा प ॥ धू य ॥ नि वा र्ज न ॥ म

ता ह्या॥ चालचा॥ सगनं स्वाया॥ ॥ स्वरासुद्रा॥ ॐ नमो नमो माघ पाग मणुल हृदा
व काय पाया च मनार्घ्य प्रती कृत्वा हा॥ ॥ पूष्य न्यास॥ ॐ नमो माघ पागाला कृत्वा
नाय कुरुदु स्वाहा॥ ॐ कौशेला कविजया यज्जो स्वाहा॥ ॐ मलिय श्रद्धा॥ ॐ नमि
ता हाय स्वाहा॥ ॐ नमो माघी कृत्वा य स्वाहा॥ ॐ तां नाय स्वाहा॥ ॐ एक टिका नाय
स्वाहा॥ ॐ सुधन कृत्वा नाय स्वाहा॥ ॐ शार्वा वला किर्तनं वाय स्वाहा॥ ॐ खेख
सर्पल य स्वाहा॥ ॐ हय ग्रीवाय स्वाहा॥ ॐ नमो जिताय स्वाहा॥ ॐ नमो यत्रा जिताय
स्वाहा॥ ॐ मात्र सेनय मर्दनाय स्वाहा॥ ॐ वनदाय स्वाहा॥ ॐ नमो काल नृक्षत्र
ममनाय स्वाहा॥ ॐ रुयाय स्वाहा॥ ॐ विजयाय स्वाहा॥ ॐ अय विजयाय स्वाहा

॥ ॐ नूरुय प्रदाय स्वाहा ॥ ॐ धन न्दाय स्वाहा ॥ ॐ वसुन्धवाय स्वाहा ॥ धूलि मरध्वस्त
॥ ॥ ॐ पुण्य कवचाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वार्थवर्धाय स्वाहा ॥ विनन्दित वाजाय तथा गता
य स्वाहा ॥ ॐ सिंह विकीर्तित वाजाय तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ सूर्य प्रिय वाजाय
तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ नि पूर्वस ॥ ॥ ॐ समस्त वसिष्ठी कृत वाजाय तथा गता
य स्वाहा ॥ ॐ विपश्चिन्त तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ विश्वरुद्र तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ
तिदक्षिण ॥ ॥ ॐ नमो ककुब्धाय तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ कनक मून तथा
गताय स्वाहा ॥ ॐ काश्या पात तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ माक मून तथा गताय स्वा
हा ॥ ॐ नि यश्चिमा ॥ ॥ ॐ सूर्य प्रिय किर्तिना मरध्वयाय तथा गताय स्वाहा ॥ ॐ सम

कावला विदितग्रामप्रियाय तथगताय स्वाहा ॥ ॐ ह्रून् कुरुधुः प्रियाय तथ
गताय नमस्वाहा ॥ ॐ वत्स प्रलास स्वराजाय तथगताय नमस्वाहा ॥ ॐ मित्र
॥ ॐ पूषतायाय नमस्वाहा ॥ **आग्नेयसः** ॥ ॐ धूयतायाय नमस्वाहा ॥ **नेम**
त्यसः ॥ ॐ दीयतायाय नमस्वाहा ॥ वायूयसः ॥ ॐ गन्धतायाय नमस्वाहा ॥
ॐ भानसः ॥ ॐ ह्रून् डाय नमस्वाहा ॥ ॐ वृन् क्षाय नमस्वाहा ॥ ॐ वृन् वनाय नमस्वा
हा ॥ ॐ अग्नेय नमस्वाहा ॥ ॐ **नेमत्याय नमस्वाहा** ॥ ॐ वायूयाय नमस्वाहा ॥
ॐ ॐ भानाय नमस्वाहा ॥ ॥ यना पूजा ॥ वाग्ध्या ॥ मुक्ति ॥ ॥ किण्णानन ॥ ॐ
वृद्धं नमामि गतं गतं नमः पूनः पूनः धर्मवत्स च संधी च नमामि गतं तथा ॥

॥ ॥ शुद्धकृन्दुषात्रसदृसंपन्नवलसनल्लिती, सवहृविदधानमाहयवन
नीयामजायाहमी॥ वामहितं कमलुचकमलंद (अहमं पूक्तको वन्दहंयन
मध्वदनुमित्रसा, लीकानूकयामया॥ ॥ धनाधमूथाकालिधलंदांक॥
संखलंखविय॥ ॐ खलुनाहंरुद्र॥ ॥ पञ्चगव्यविय॥ ॐ नन्दाहडाऊया (ओ
म्या, कपिलाचक्रपावति। सर्वपापविनाशार्थ, दहिमपञ्चगव्यके॥ ॥ धनसि
पूजासंकल्ययाक॥ गुन्ममुल॥ लंखवलि॥ विसर्जुन॥ ॥ धनाहमि (आधनया
या॥ ॥ हृमिसत्ताहातिनधियकेतय॥ ॥ ॐ शुंखंरुद्र॥ ॐ मदनिवजिलव, वज्र
वन्धहं॥ ॐ वज्रवज्ररुद्र॥ ॐ तिरुमिस्वधन॥ ॥ धनाथास्तानममुलथाय॥ ॐ सर्व

काथागतासाक. सर्वकाथागतलयी. सर्वधर्मगनेत्रात्मा. दशमसुलमूलमः
 ॥ गानकधर्मगंसीरुतं. इतचयविश्वधकासमनरुडवेगाय. दसमसु
 लमूलमः॥ ॥ सवलकलसीपूर. सर्वनकुविवक्तितासमनरुडविहाय. म
 नासुलमूलमः॥ ॥ सर्वसत्वमहाविरु. पुद्गेयकीर्तिनीमलीसमनरुडवा
 चाय. द्वाखसुलमूलमः॥ ॥ सुलमसु. द्वाखसीकृदा१०य. आकासम
 खानथातिदाओ. लाहागहाओलकंतय॥ ॥ ॐ समन्वाहनकुमान्नुषात्रुषा
 दिशसीरिता॥ अणाममूकाहिशच. वृषपूजापत्रारुवा. ॐ मूनि२महामूने
 हा॥ ॐ आकर्षलवृषसुलरुदात्रकाय. पाशाचमता३र्घ्यपतिच्छाहा॥ ॥

[illegible]

कलूखहनं. कामलाहार्यवक्तं. तद्वंदमकसिहं. पलमित्तिलसा. सर्वकान
नमामि॥ ॥थनादसनाखाकान॥ तगुगुनूलापिदमित्तव्यं॥ दक्षिणजानूमुल्ल
पृथिव्यासिखाय. हस्ताङ्गलिकत्वा. गुनूलादमित्तव्यं॥ ॥**द्रुपीसिष्यपूनिशुल**
सां. पुलिनयुधिविस्रयाडा. लाहाहाङ्गलयाडा. गुनूयाहडा नवाडा. दसना
खानन॥ ॥साहेनामादमित्ताखय. ॐमीवलायां मूपादाय. यावदावाधिमलु
निषदनाह॥ वृद्धगच्छामि मननं. रगववक्तमहाकानूलिकं. सर्वरु सर्वदर्शितं.
सवरुयरु नवरुयातिता॥ महापूरुषं. नूरुअकाय. निरुलनकाय. धर्मकाय
मननं गच्छामि. द्विपदानामग्री. ब्रुवद्वित्रपि. त्रित्रपिअयायिकं. साधूकानम

यात् ॥ ॥ थना सिष्य न गुन्या के विनतिया ती ॥ ॥ हना थ ह गुन्या कित शला सी
थ गुना मया के न ग थ छल पाल सी आरु दय का न थ उ गु वला स आ न र
या दा ॥ ग लो ला धल सा वा धि विरु लून मला तल प व म ख न ग्री वृद्ध र ग वा
नया के ग व न या य वृद्ध र ग वान ग थि क्ता धल सा महा क नू ला वक्त सम
रु द का सिष्य विष्ठा क सम सखा द सम स रु य ना स या क महा पू नू ष सुना
न र द या य म जि डा धर्म स विन थ थि द क्ता वृद्ध र ग वान या के ग व ल या य स
म स म नू ष या नू ग रु स थ गु पु का वन न पाल सा पाल वा व वा वं कित स
न न या य ध का सिष्य न विनतिया ती ॥ ॥ सिष्य न थ क्ष डी गु गु नू न न दा गू नू न

धदधदसा धूऊनधका. आरुशुल॥ ॥ थानानिर्यातनयाय ॥ ॐ ह्यपिमारुग
वान्. संम्यक् वृद्धाविद्याचवनसंयन्ता. सुगतालाकविदनरुन. पूनृषदम्यसा
नधि. मासादवानांच सनृष्यानांच. वृद्धारुगवान्. तस्मै वृद्धनत्ताय. ॐ दं प्रुष्य
मधुलनिर्यातयामि॥ ॥ थानावलिविय॥ ॥ ॐ नूकानमुखसर्वधर्माती॥
ॐ दायया. त्यादि॥ ॥ ॐ नमा वृद्धाय. महाकनूलावरामितद्वययाय. यन
त्मासमचिराय. ॐ भगवत्सूर्य. सर्वसत्त्वानां दृष्टवकनकापिथ. ॐ सं वलि
दिव्यगन्धनसायन. उपरुं ऊमां सर्वसत्त्वा. नरुनाया संम्यक् वीक्षे. महापति
स्वायनाय. ॐ न्नाः सुगतवज्रुखहासाहा॥ ॥ ॐ ति वृद्धमधुलप्रजा॥ ॥

॥ धनं लि धर्म मधुला ॥ ॥ भक्त धर्म गंगी हतं स्नान चर्या विन्ध धका सम न रुड
कायाग्र हाष मधुल मूल मं ॥ ॥ ॐ धर्म मधुल रु दान काय पाशं प्र तिष्ठ स्वा हा
॥ ॥ प्रथम्या स ॥ ॐ नाराय प्र ह्ना पात्र मिता य व पृ ष्यं प्र तिष्ठ स्वा हा ॥ ॐ गन्धर्व हा
य स्वा हा ॥ ॐ द ग रु मी श्व ना य स्वा हा ॥ ॐ समा धि ना ग्रा य स्वा हा ॥ ॐ ली का व ना ना य स्वा
हा ॥ ॐ ल लि त वि क्त ना य स्वा हा ॥ ॐ स र्व धर्म प्र भु नी का य स्वा हा ॥ ॐ सू व र्ण्य रा सा
य स्वा हा ॥ ॐ त था ग त यु क्त का य स्वा हा ॥ ॥ **प्रजा मुक्ति** ॥ ॥ या सर्व रू त या न य
त्य प स मं भं ते वि न्ना व का या मार्ग रू त या उ ग धि त क ता ला का र्थ सं या लि का
स र्व का न मि द व दं ति मू न या वि श्व य या संग ता त स्मै आ व क वा धि स त्व ग सि

नाबुद्धस्य मातु नमः ॥ ॥ प्रह्लापा नमिता नित्यं प्रह्लाप्य निवृण्यती। प्रह्लापस्य
सदा वन्द्यं प्रह्लापमूर्ति नमाम्यहं ॥ ॥ **ध्यानादसनाखाकानां** ॥ ॥ साइहं दं गिताः
त्रयं ॥ मां वलायी मूपादाय यावत्वा धिमलु निखनात् धर्मस न लंगका मि
विनागनां प्रवत् ॥ ॥ वंदित पि धिच पि ॥ ॥ शायिकी साधू का नमदात् ॥ ॥ ॥ हेनाथः
हंगुत् गथ कुल पाल स्यत् ॥ ॥ आह्लापु मन्त्र शला ॥ ॥ ॥ धं धनी या दिन स ॥ ॥ थुगु वला सः
आन कृया दाता ॥ ॥ पत्र मन्ध्र धर्म या क स न लयाय ॥ ॥ गथि क्ता धर्म धाल सा ॥ ॥ समस्त
दका नाग आदिन ॥ ॥ माया ताल ताता विष्ठा क क्ता ॥ ॥ गथिं गु माया धाल सा ॥ ॥ नाग दं ध
माह माया ॥ ॥ समस्त ताल ताता विष्ठा क क्ता ॥ ॥ थधि क्ता या क ग न लयाय ध की ॥ ॥ नयाल

[illegible]

रुद्रा न कायया दार्धः आचमनी प्रतिकृत्वा हा ॥ ॥ पूषा न्यासः ॥ ॐ आर्या विला कित
स्वनाय वज्र पूषी प्रतिकृत्वा हा ॥ ॐ मे प्रियाय वज्र पूषी प्रतिकृत्वा हा ॥ ॐ गगन गंगा
य स्वा हा ॥ ॐ समन रुद्राय स्वा हा ॥ ॐ वज्रा पानय स्वा हा ॥ ॐ म श्रेयाय स्वा हा ॥ ॐ स
वर्त्तु वर्त्तु विस्तृताय स्वा हा ॥ ॐ किति गहाय स्वा हा ॥ ॐ स्वगहाय स्वा हा ॥ ॥ धनापचा
यचान पूजा ॥ ॥ स्तोत्र ॥ ॐ ब्रह्म नमामि सवनं वनयन्मया लि मे गतं कंग गन गं
ज समन रुद्रं यजाधिपाय वहिताय तम श्रेयाय विस्तृति नं किति नूचन मा मि
रुक्ता ॥ ॥ श्रीं का न स रु व ना थं लोक ना थं न मा मि ही न्र मा ध पा स ना न्ना लोक ना थं
न मा मि ही ॥ ॥ धनाद स ना खा कान ॥ ॥ सा हं द मि ता ल्ययी ॥ ॐ मां वलायां मूपादाय ॥

यावदावाधिमं शुद्धनिखदन्तं रुसं च स वरगच्छामी॥ गनानामग्रं सं
घकिं श्वरवर्धः विगात्रनर्धः द्विदुर्गः वनेयमत्र कमलहस्तं उस्थित्वा आ
आर्यवलाकिं श्वरसं वरगच्छामी॥ गनानामग्रं ॥ ॥ शगुर्जिनश्च
सोः क्षनविहानमनश्चिकायमनसाः वचसा कर्मधनयानापापनं ॥ दगक्ष
यानानंः थनियाश्चगुवलासः आले मयानां ॥ वाधिमं धुपः पर्यक्तं विव्या
कः संघरुदात्रकं सर्वं स वरगच्छामी ॥ ॥ थनयं नूतवाच ॥ ॥ शकु
लपुत्रसाधुश्चनिर्यक्तनकुत्र ॥ ॥ थननिर्यक्तन ॥ ॥ सतिमं ध्ये ॥
श्वनापतिरुलपतिपन्नागम ॥ ॥ थन ॥ ॥ श्वनापन्ना ४ सतिमं ध्ये ॥ स

कृदागामि रु लपति पंनगाः सङ्कष्टमिगमनम४ श्रुनागामि रु लपति पंन
गाः श्रुनागामिना॥ अर्हन्त उषव रु गवानां पर्यवन्ति क वाधिसत्त्व४ सद्य
वावहनिय पाषहनिय॥ समावावतिय श्रुजली कचनिय॥ श्रुन रुचपुन्यड
उदगनाथः लाकास्य नस्य नमै संघवत्ताय॥ ॐ दं पूष्यमद्युलानिष्पतिमि
॥ ॐ ॥ **थनवलिवीय॥** ॥ ॥ ॐ नमावद्धाय४ देवास्वनतवयडवाड
सादिरि विदिनपादपनाय॥ श्रु(गखानाव कद्धवगविनागत्यनायमहाः
कानुशीकाय ॐ दं वलीपवामनादि सहिते॥ गृह्ण २ सर्वसत्त्वानां चनवका
दि ३४ खाखावय४ उद्धव २ सर्पधन २ वृद्धसश्वन धर्मसि श्वन संघसश्वनस

प्रवासप्रन॥ ॐ श्रीं हूँ स्वाहा॥ ॥ ॐ निसिद्यमधुलपुजा॥ धननिमत्त
मधुवपुजायाय॥ ॥ नमो नमः मधुलपुजा॥ ॥ ॐ सर्वसत्त्वमहाचिह्नं॥
गुह्यपद्मनिमित्तनः समन्तरुद्रचिह्नं धाप्रमधुलसावथ्य॥ ॐ ॥
धनध्यानयाय॥ ॥ गुह्यकृष्णगुहाचारसप्तपञ्चवचसस्थितं सर्वं ह
विदधानमारुयपदं॥ ॐ पागजापारुमः वामेनापि कमधुलचक्रमधुलं द
क्षिणरुसपुस्तकं वदहपञ्चमपत्तनं॥ गुह्यं साहायानुर्वपामय॥ ॐ
ॐ श्रीं हूँ स्वस्ववस्तुः सर्वधर्मात्मः स्वस्वगुह्यं ॥ गुह्यं नाहानवजस्वरा
त्मकं इन्द्रिणी सर्वसत्त्वधनरहं॥ जीवालयन्माद्यपागमलावकं च

मात्मानरावयम् ॥ ॐ ॥ उं आशी आर्य्य अमा घया गला कश्च नरु दान का
यपायाचमनाघेषनिकस्वरा ॥ ॥ **थनपूष्यन्याग** ॥ ॐ ॥ उं अमा घया
गला कश्च वायकी स्वाहा ॥ उं ॐ ला क विजयायकी स्वाहा ॥ उं मतिपुत्र इ ॥
अमिताभाय स्वाहा ॥ उं अमा घ क गाय स्वाहा ॥ उं ना वा ये स्वाहा ॥ उं इ व न
स्वाहा ॥ उं सु धन कु मा ना ये स्वाहा ॥ उं आर्य्य वला कि न थ ना स्वाहा ॥ उं स्वर्ग
पना ये स्वाहा ॥ उं इ पथा वाय स्वाहा ॥ उं अजि नाय स्वाहा ॥ उं अय ना जि ना
य स्वाहा ॥ उं मान से न्य प म द ना ये स्वाहा ॥ उं व न दाय स्वाहा ॥ उं अकाल म
य्य प ग म थ य स्वाहा ॥ उं जया य स्वाहा ॥ उं विजयाय स्वाहा ॥ उं जय वि

जयाय स्वाहा ॥ ॐ श्रुतय प्रदाय स्वाहा ॥ ॐ धनदाय नमः स्वाहा ॥ ॐ वसुंधरा
याय स्वाहा च मना च परिच्छ स्वाहा ॥ ॥ **थन पूजा गाथायाय ॥** ॥ जीवाले
संरुवनाथं कलनाथं सिग्धमानसा श्रुमाद्यगनामाथं लाकनाथं नमामि हं ॥ ॥
थनदग्नाथकन्या ॥ ॥ ॐ मावला मूपादाय यावदावातिगमिगमन्या स्वस
र्यादिर्यत न सर्वपातिवक्षान्नपनस्व हं वक्षान्नपाथान्न ॥ बीजासनान्न ॥ माला
वर्धनः कन्यागितल्लितासनान्नः श्रुवन्नचर्यान्तः गथावागर्ददन्न ॥
दापुजल्यनान्नः उक्तितासनान्नः श्रुयाहं विवन्नः कथामिहः गावश्चिद्व्यं
हिवग्लोः निभामिखा नवः ॥ ॐ वक्षान्नचाविहत्वा ॥ ॐ ॥ हनाथमग

नृगाथ कलपालस्य नम्रा हृदयकाथः थानिया दीनसः थामर्य उदय इस्पति
कद्रु सयाथी मर्य उदय मश मल्पः समरु पाति वध माल नः ॥ हनम्यवयावस्व
कसला रुस उान्यः मध्व पानसस्य वन्यः थउथ क्रक मतास्य चान्य ॥ हनमालाध
यत्वा कस्वानन क्य मम्य उः निम्य मयया खन इयः गिरध्वय म्य हा ल्यः थ कालिप
निक्क मतास्य चान्यः वक्र चर्य धवन पधकाः हनरु साख मरुतायः हनथ उा द
खनमवयाता मविय धकाः हनखाता समचान्य धका ॥ ध्व छाताया द खनाडिः
नमाच नः धकाः हनः लाः छाः चि। चिकी ॥ मयः ध्व आदिन समरु माल नः वक्र च
र्य धवन पधकाः ध्व गुकथनं इल सांः गुरुया क गिष्यय निस्प न ०० नापया ना

॥ ॥ धन धानया वा ॥ ॥ शुद्ध कृष्टुं दुखा नारुं संसद्गप नववसस्ति नं सर्व
हृविदध धान गारुय पदं पीपाग जा पा रुमं वा मना पि काम सु लव वा मना दं उ
रुमं पु रुकं वद हप न म ध वं दु गि व सा ला का पा य न म ४ ॥ शकुल पु र आ उ
शुल साः थ क्र प न म्प थ व थ्री म्मा घ पा ग ला कं थ व याः ग र्थ व र्ही या ख क न्प ध वा
ग थि न्प क्र प न म्प थ वी धा न साः म ह श उ द्ध नि र्म श या उ चानः च न वा ना उः वा व ल्प क
द धा या दा रुा खान थ चानः च्वा पु थि ग व र्ही ना यः ह न स ह स प न या द उ न्प वि आ
कः थ थि न्प क्र स र्च ह र्थ ग र्थ या न न म स्था व या ना उ वि आ वा क्रः ह नं उ उ वा हा
न न म्प र्थ म डाः क उ पा गः जा प मा ला थ न रु ल सा उ उ ध र्थ न ध व न पा उ वि आ

कञ्जः हनखडाधखनः धनधवलपाडाविष्ठाकाः कमधुवः पल्पस्वानः गिदंथु
पुस्तकाः ध्वनीजानाडाविष्ठाका॥ थथित्यमपवम्यधनयानः कपनिस्यथडाकपा
लनंरुकापुस्यः नमस्कावयाडाधकाः थिगवूनशनसाः आहृदयकला॥ ध्र॥
थुमिधूनकाडाश्रुधयाचका॥ थनवत्तामधुलसमयकाः गंखसः थडागताय
इइडाहाकन॥ श्रुधसदाहाननयाडाः वाक्कयाया॥ ॥ श्रुकादनीवहिविहान
पुष्पवागगेयापूर्यहसमहितायसिधिसरुवां॥ लाजासूकरुल्लिनिमिल
गंधपुष्पैः कियावूरिः सूपेविपूवितमधेः पाका॥ उंगनरगिवाश्कनरपनर
हनरहाहाडीक्रीरउंकाववप्रवगाधनरधिविरधूनरगनरमनरवसिंस

मसहस्रपविमदिनां गवावकाचरुगवनसामादिषः यमवन्तः कुवन्तः धन
न्दाः सखिदवगन्तः चिरुश्रमाद्यपागमयववदायश्रुचपमिह स्वाहा ॥ ॐ ॥
निधानाय स्वाहा ॥ ॐ पद्मनिधाय स्वाहा ॥ ॐ ॥ **थनगमथा ॥** ॥ ॐ नमस्कुरुग
वननाथगमस्माजिनजगन्नाकिवनः सदाकसवतः स्वास्मिन् नतकुवृष्यदया
मयि ॥ **॥ थनजापदकास्पनजापयाचका ॥** थनमद्रविय ॥ ध्यालिडाश्र
ऊचवव२१ दाहास्वान२१ धर्मसदुलसकृत्तिका ॥ थनमद्रविय ॥ ॐ ॥
ॐ नमोवत्तयाया ॥ ॐ नमः श्रीश्राव्यविज्ञाकिरुववायः वाधिसत्त्वायः महास
त्त्वायः महाकावृषीकायः नमः ॥ ॥ ॐ श्रीमाद्यसिद्धिः ॥ ॐ श्रीमाद्यसिचंमहा

गिलं: उद्धमत्वरुवरसंरुवरपद्मविरुषितकुजधवसमन्तावलाकिनश्चवा
याउंआइरुट्स्वाहा॥ ॐ ॥ **थनमूलवलिविय॥** ॐ ॥ **उंनमालाकनाथ**
यः श्रुमाघपाभयाकुलाकदर्पनायः सरुकावावृष्टाकायः प्रकायचिन्तायः स
कवदाविदइइखः सर्वइष्टइष्टविष्टगमनायः ॐ दंवल्लिइष्टादिसहिताग
हीत्वापउऊरगानिकुवः पूष्टिकुवः नजाकुवः म॥ उंआइरुट्स्वाहा॥ ॐ
॥ **थनपूष्पधूपदीपः** यधर्माः **थनजापवियः** **थनदेवपूजाकाय॥** **थनउपावाहा**
तिसस्वानवायक॥ **थनमहावलिविय॥** **थनपविवाचपूजा॥** **थनदंगवलिवि**
य॥ **थनस्नानकिमन्त्र॥** **थनगुरुपूजाकाय॥** **दक्षिणाकाय॥** **ऊमापनयाय॥** व

खाडा हाय ॥ मज्ज ॥ ॥ उं न मा शु मा च पा ग ला क थ ना य ध र्म स रू प व द्वा मि
 व र्ज ध र्म डी ॥ ॥ थ न व त्का हा का ॥ थ न क व ग्ग रि ख क विय ॥ थ न आ गि वा द
 विय ॥ ग ग न का य ॥ ॥ थ न म धु ल डाय स्तान स का य ॥ थ न म हा व लि का य ॥
 वू नि श्रु द्मि व र्क या ध र्म क थ स मा फ ॥ थ नि श्रु द्मि व र्क या वि धि श न रू
 ॥ ॥ ॥ ॥ उं न मा शी व ज स त्वा य ॥ थ न कि न स च या वि धि वा स त या ॥
 थ न थ प ना या य ॥ व व १ सू व र्क या क व स ॥ स ग न व ग वा स ॥ द्र स क सि द्र मू ॥
 म हा व लि ॥ व व २ वा क व स ॥ व स धा वा ॥ व व १ क ग या ण ॥ सि द्र मा ह नि ॥ खा
 ऊ था पि ॥ ल धः स त ॥ दि ग व ली ॥ प व प ना का ॥ वा य ॥ थ नि स्था प न या य ॥ ॥

थन सूर्याद्याय ॥ गुरुपादार्चकाय ॥ थन पंचगव्यं धनयाय ॥ कायवियः थन
पूजाशुभापकं ॥ थन महादानकाय ॥ श्रद्धाकाय ॥ दानपत्रिकाय ॥ थन देवयास्य
नृपनस्य रावपूजाय ॥ थन नात्रलक्षधनपूजाय ॥ थन दिगसमयकाय ॥
थन गवमलुलहनकं ॥ गीतश्रुष्टं गतचन ॥ थन सिधुवपूजा ॥ सिद्धलतनकं ॥
थन वरुस्य किकाय ॥ निसमाधिकर्म ॥ ॥ गीतश्रुनील ॥ थन कलसपूजा ॥ ॥
गीतकवगाचन ॥ थन वासुकीपूजा ॥ ॥ गीतचकवर्ष ॥ ॥ थन पारुपूजा ॥
गीतचकुदहन ॥ ॥ पायन्याग ॥ ॥ गीतसहजस ॥ रुमिधधन ॥ मलुलम
धस ॥ पंचसुकाप्यनाश ॥ कजरयाश ॥ धूपः जायः निवाजन ॥ मगरुनालचान

हाया॥ ॥**धनध्यानगिससाधनकन**॥ ॥मधुलसध्वनिषयपत्रिकनपूष्य
घनिकादिरि॥चक्रुष्का॥(सचक्रुद्धानः वूपघटिकायदिरि॥नम्यगातादिरिचसं
पूअरु॥रुक्तन॥सपसमधुलाधिपतिःमधुगागुगन॥गंताजवचगफधपनि
वावापत्रिअप्यनरुवताचक्रुष्कावयंसंवचसयिकति॥ ॥**धनपत्रापहा**
वपुजा॥वास्याचंक्षवाजनरुक्ति॥ध्वनिरुमि(ध्वधनविधि॥ध्वयालिशमधुव
यामध्वग्रुददवपयवायाअःध्वनरुसकिवनदवकयाअ॥ध्वमधुलसकयाअ
धनमूलग्रश्रावायनध्वनयानाअवात्य॥ ॥**कृष्णपारुष्कायजगद्वज**
रुतपदंप्रायकिडु॥निद्धिप्रंकवामिनिविचिष्यमधुलरुपयगु॥पूर्वाः

रिमूरवसनः। अतिदिग्गुणाननकन॥ वज्रानवविद्य॥ इजिचिधवजस्तुतं॥ ह
कावकिवशशाकल्पविसर्गः। निमलध्वनखदिहर्गः। वज्रपाकावः। वज्रपञ्चन॥
वज्रसन्जालं॥ वज्रविमानं॥ मयध्वकलइसहाल॥ विश्वकालिसंः। मयहमि
विश्वय॥ ततमध्वइतिठवजस्तत्त्ववृपात्मकपत्रावृण्णादलाव्यविजयाः। प
वमावजइकावाविधवजस्तूर्यस्कारुनवकाशिवाग्याः। वाविठचवशद्वयसा
प्रिचक्रस्पकध्वसध्वकल्याणानवज्ज्ञाहलपन्मवाविवसन्वय॥ कवनय
निवनिखीलः। जगदीश्वरविदनिनीवपीतहनिनः। मन्मूरवसव्यतवव्या
भवकंश्रया॥ दष्टात्वागललजिह्वापतिमूरव॥ सङ्कलगाः। कृतिवचकचउ

त्रःसंगिवगधाःप्रित्तगरवत्सद्राःललाटखं॥पचवपाचःगलावलवित
गतिगतिरूपिणंसमधुलमेखलासज्जकं॥व्याघ्रवर्त्तचमःनित्तावनकव
लयिताहृदलकमलेकुक्कुलं॥तज्जकादिनागवाज्जकतमधुलावज्जरघ
हृन्निगतकजाभ्यावज्जमृष्टिद्वय॥पृष्ठलग्नंकनेष्टद्वयःगृह्यतर्ज्जुनिद्वय
निपसितानिनी॥कुलाव्यविजयमृद्रायास्वाहाहृपृष्टासमापन्नःसव्यकना
स्यांश्रुकुसयाभाःवामास्याखत्वागदक्षनागर्ज्जवृकावमृखवःदीमृखंस्वहृदयं
इकावातप्ररुतवस्तिरिद्धगदिष्टानुक्कष्यःइकावस्त्रयीतःदगाकाध्वस
मप्यथत॥

॥थयालिङ्गपचसुगुक्कानहिन्य॥जापःधूपःमनरुःगात्रा॥

निनाऊनयाय॥ ॥ गीतश्रवणनि॥ थनवऊनथिय॥ ॥ उं आ ईं ॥ ॥ गखलं
षनहाय॥ ॥ उं आ ख गु ना ह ईं रु ट स्वा हा ॥ ॥ थनपचाम्ननस्नानयाच
क॥ ॥ उं सर्व (ॐ) धनीय ईं ॥ ॥ थननव्यापवचाय॥ ॥ उं व ऊ वे ऊ ईं
॥ ॥ थननकचन्दनस्नानयाचक॥ ॥ उं व कां व वा य स्वा हा ॥ ॥ आउमि
द्र॥ आसुसिध॥ ॥ आउस्नाननय॥ थनपचापहावपूजाकीउ॥ ॥ उं नम
स्तुकाधनाज्ञानं सर्वदृष्टिनिवाचनं कुलाख्यविजयादीनां सर्वकाधनमस्तु न॥
नमस्तु ॥ ॥ ईं का न प म्र द वः ईं का व सिद्धि हाऊनः ईं का वायनमस्तु न॥ ॥
थनवलिविय॥ श्रुकाचमुख॥ ॐ निदशकाधयाविधि॥ धयातिशयिचन

थ कालिनः न कं नय ॥ गमथः पत्रप्य ॥ ॥ उ कस्मिन्ना कन कपूष्यं शख र्खी ॥ न च द
श का ध कि न का म्प के क ना रु च दः ॥ उ क सू वा वा वा प्रर्या म्प्यः की ला वं क ल्या न
कल मन मिता ॥ वाम मू छि नाः द क्रि स प धान वि दः प वा वि त मू रु वः व त्र पूष्य
शख र्खी गृ ह्नी त्वा दी र्घ ना दौ च्चा वि तः इ उ द ग क ग प र्खू य व श य त् ॥ ॥ थ
या लिता गू वृ त्त रु मा प न या य ॥ व रु घ र्छ ज्ञा ना उ क मा प न या य प द क्रि श्म या य
०० ग म न का न ध इ विय ॥ गी त पृ र्व छा त्र ॥ ग वृ त्त स्या य ॥ थ कालिन द व विय
०० वा प का गी थू ता उ ॥ वा व गी स स्था य ॥ म रु ॥ ॥ उ य मा न रु रु त्त र्च इ रु
उ प्प दः प वा वा ना शः किल य र्इ रु रु स्था हा ॥ ॥ थ न व रु न ना य ॥ ॥

थन आकर्षणपाद्यादिस्नानवाय ॥ ॥ उं यमानकाय स्वाहा ॥ उं ॐ हाय स्वाहा
उं वाकासाय स्वाहा ॥ उं वधुप्रदाय स्वाहा ॥ ॥ धनप्रचीपहानपूजा ॥ ॥
पूर्वकृष्णमहाकृतैः वर्जसूक्तवर्जनिपागहस्तं ॥ महाविनः यमानकानमा
सिहं ॥ ॥ थयालिङ्गदक्षिणस ॥ गीतदक्षिणद्वान ॥ उं घघघाटय २ सर्व
दष्टयमादिसप्तरीवानानाकालय २ इरुं ट्वाहा ॥ ॥ वजननाय ॥ ॥ उं वज
सूक्तलकागकोरय २ इरुं ट्वाहा ॥ ॥ ३ ॥ ॥ धनस्वरावशुद्धा आकर्षण
पाद्यादिपूष्यन्वाग ॥ ॥ उं प्रहापोत्रमिताय स्वाहा ॥ उं यमाय स्वाहा ॥ उं गुवा
य स्वाहा ॥ उं कवकखिखनाय स्वाहा ॥ ॥ धनप्रचीपहानपूजा ॥ ॥

जाम्बुगुहं मरुविलं वक्राकिनसुइइहि ॥ नर्जनिपागह संवय ह्वानमा
मिहं ॥ ॥ पश्चिमसगीनपूर्वद्वय ॥ ॥ ॐ आइं पद्मानककृतः सर्वइष्टगज
मानस्यस्यपीवावनः किलयइंरुट् ॥ ॥ **थनवज्रनगाय ॥ ३ ॥** ॐ वज्र
मङ्गलाकोटाकाठयइंरुट् स्वाहा ॥ ॥ **थनआकर्षणपायादिपुष्पन्याग ॥ ॥**
ॐ प्रार्थनकाथस्वाहा ॥ ॐ वज्रकाथस्वाहा ॥ ॐ श्वानास्वायस्वाहा ॥ ॐ कालाशु
लाथस्वाहा ॥ ॥ **थनपञ्चपुत्रपूजा ॥ ॥ ३ ॥** ॥ पञ्चयागवृक्षेतासवः च
कृपागकतजनि वरुजनीपागह संवः पद्मानककृतमानिहं ॥ ॥ **थनउरु**
गगिगउगनद्वय ॥ ॥ ॐ आइं विइं विद्यानककृतः सर्वइष्टान्तः शुभवास

सुखदुःखानः सपविवायानः किलय २ ईरुदुस्वाहा ॥ ॥ **थनवजननाय** ॥
उं वजसूद्रजावाकाकातय ईरुदुस्वाहा ॥ ॥ **थनआकर्षधपायादियुष्मंहास** ॥
॥ ॥ उं विद्यान्तकायस्वाहा ॥ उं कुववायस्वाहा ॥ उं उरुकासायस्वाहा ॥ उं ग
कवस्तभानायस्वाहा ॥ ॥ **थनयत्रापहानपूजाहा** ॥ ॥ **निलवर्धमहाविज**
वजदं अदाकसुखिरुत ॥ हस्तनिपादसहस्रं चः विद्यान्तकनमामिहं ॥ ॥
ध्यालितां गभानस ॥ गीतं गभानका ॥ ॥ उं आ ई सर्वदुःखानः ॥ गभानस
पविवायानः कालय २ ईरुदुस्वाहा ॥ ॥ **थनवजननाय** ॥ ॥ उं वजसूद्रला
काकाकातय ईरुदुस्वाहा ॥ ॥ **थनआकर्षधपायादियुष्मंहास** ॥ ॥ उं अच

त्राय स्वाहा॥ ॐ ॐ गानाय स्वाहा॥ ॐ यममथनिय स्वाहा॥ ॐ किलिकिलाय स्वा
हा॥ ॥ **थनपचापहनपूजा॥ ॥ ॐ ॥** ॥ ॐ कृष्णवर्त्मसहाविलंः स्वप्नवागम
रुनी॥ रुमन्तीपागहसंचः श्रुचविचनसामिहं॥ ॥ **थनश्रुगितवानस्वत्यः श्रुग**
नीका॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ श्रुद्रुतकिनाऊसर्वइष्टानः श्रुगनयसपविज्ञानः किलय
इष्टु॥ ॥ **थनवजनताय॥ ॥ ॐ ॥** ॥ ॐ वज्रमूला किलावाह्यइष्टु स्वाहा॥ ॥
थनश्रुकर्षनपाशादिपुष्पन्याग॥ ॥ ॐ रुकिनात्राय स्वाहा॥ ॐ श्रुगनयस्व
हा॥ ॐ यमदाकिनीय स्वाहा॥ ॐ श्रुगनिहासाय स्वाहा॥ ॥ **थनपचापहन**
पूजा॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ हिनागनासहावायः विरुत्सर्वकोधंविग्रहं॥ वज्रदक्षि

ताराणीतकिनाजानसामिहं॥ ॥ ध्यालिउनेमृन्का॥ ॥ उं आइं निस
 दधुसर्वइष्टानःनेमृन्तसर्वपनिवानशःकिलयइंरु॥ ॥ धनवजने
 ताय॥ ॥ उं वरुस्रुनाकाठाकातयइंरुदस्वाहा॥ ॥ आकर्षशपायादिप
 ध्याग॥ ॥ उं नीलदधुयस्वाहा॥ उं नेमृन्नायस्वाहा॥ उं यमयस्वाहा॥
 उं धागाधकासागनायस्वाहा॥ ॥ धनपचापहजयुजाभाउ॥ ॥ उं नेम
 नेमृन्स्रुष्रुवक्षीरानिलदधुकापागंरुतःकाधनाद्विविधस्त्रात्रःनिन्द
 दुतसामिहं॥ ॥ ध्यालिउवायुवका॥ गीतवायुवका॥ ॥ उं आ
 इंसहावलसर्वइष्टानवायुसर्वइष्टानःसपनिवानशकीलरकीलरयइं

ॐ ॥ **थनवज्रनाय** ॥ ॥ ॐ वज्रमूला किला कोट्य ईरुट स्वाहा ॥
थनश्राकर्मशपाशादिपूषां न्याग ॥ ॥ ॐ महाबलाय नमस्वोहा ॥ ॐ वायु
व्याय स्वाहा ॥ यमदहतीय स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्मीवर्धिता सनाय स्वाहा ॥ ॥
थनयचोपहावपूजाकारु ॥ ॥ तमानामिहालिना कायः वज्रा कपाशतर्ज
ना विघ्नानि विघ्नं हंता चः महाबल नमामिहं ॥ ॥ **थनउद्धवसः उद्धवान** ॥
ॐ श्रीरुचक्रवर्तिः सर्वद्वन्द्वः चन्द्राकापिनामरुपनिवा जघः कीलेय ईरुट
॥ ॥ **थनवर्जनाय** ॥ ॥ ॐ वज्रमूला कोटा कोट्य ईरुट स्वाहा ॥ ॥ थन
स्वरावशुद्धाश्राकर्मशपाशादिपूषां न्याग ॥ ॥ ॐ उष्नीवजाय नमस्वोहा ॥

ॐ वज्रशेनमस्वाहा ॥ ॐ सूर्यामिनमस्वाहा ॥ ॐ चन्द्रायनमस्वाहा ॥ ॥ थनप
वापहनपूजा ॥ ॥ नीलाशधकायनुरुचकाकपागतर्जनीः मानात्रीमान
हस्ताच ॥ ॐ श्रीपञ्चकनसामिह ॥ ॥ थनश्रीध्वानगीनसहस ॥ ॥ ॐ श्री
इंद्रसुतारुसर्वइष्टव्यामन्त्रि ॥ ॥ पृथिविदवतासपत्रीवानाधकोलय २ इंद्र
॥ ॥ थनवर्जनाय ॥ ॥ ॐ वज्रमृदलाकाणकोनयइंद्र ॥ ॥ थनस्व
रावशुद्धाश्रुकार्पनपाद्यादिपूष्यन्याग ॥ ॥ ॐ सुतुनाजायस्वाहा ॥ ॐ पृथि
वियस्वाहा ॥ ॐ तागस्यस्वाहा ॥ ॐ नृसुवराधेयस्वाहा ॥ ॐ सर्वदेवदिगं
लाकपायस्वाहा ॥ ॥ थनपवापहनपूजा ॥ ॥ नीलदंष्ट्रसहाकः

माः हिरवनाश्रुतिरिखनं॥ वज्रचक्राकपाशं चः स रुजाजं नमस्तुते॥ ॥ **थनद**
हृदि हृदि गिता॥ नागनाग॥ ॥ वप्यन्ता हवन्ति दधु कव च व (ध) सिता हवथा व
वक॥ कव्यादापवनविलः गसधत्रा वक्रासूता रुत्रि॥ उका वेदगदिग्यन्ति स
हृगा (ध) डष्टान्पमात्रादयं॥ काधसपत्रि किलयन्ति॥ उगता विघ्रापसान्धु व
॥ ॥ **थनप्रमादितमीत॥** निरुपयायधूननाडिः॥ **आलिटाकाय॥** ॥ उं आत्रि
यत्तुष्टमाना कुचतन् रुगः रुववसास्यपप्रः चावृधः कात्रिनागीः निरुव
नः सन रुजाः धा (ध) वेताः रुदविद्याः आनेन्दः पूषमाना॥ निरुपप्रः सगताः
स्वागविध्वा॥ गस (गः) आवाधः नक्रमानाः जिनः गनः निरुपपातुच ह॥ थं

धिसंवलरुव॥ ॥ **थननागायत्राकंकाय॥** लिहानविद्याय॥ **नेमृन्पुकोनधउय**
थठाश्रमसविद्यानाउः वाङ्मयूजायाय॥ समयमतयधर्मा॥ ०००तिविद्यानकविन
धविधि॥ धयालिवसूक्ष्मादिवास्तनयाविधियान्यह्य॥ पितवास्तन॥ मृदुदलचाया
अः॥ उमरुथापनयाय॥ आसूत्रदशजतय॥ मृदुसकातय॥ ॥ नृमृषप्रितय॥ गीतवरुव
सूक्ष्मा॥ पंचसूक्तानप्यनकाशजययाय॥ धूप॥ नीराजन॥ मरुतानचाननीय॥ संग
ननीय॥ ॥ **स्वस्तिवाक्**॥ **थनध्यानयाय॥** ० ॥ वरुववसूक्ष्मायवितावय॥ कनचंद्र
रुद्रंकात्रयविचिन्ममूल्यागत॥ रुमजीह रुसूत्रनधनिरुद्रंकात्रकिनहाधः स
चादनाइकिंत॥ हानसूत्रनृपः पृथिविदवताहताः पिता सोम्यासिताविचिनावन

ना कनकारुड घटाहया॥ वासकनकालहया॥ न कवकापूनरस्कितामघादिकवक्या
न॥ संपूज्य॥ ॥ थनश्राकर्षनपायादिपूष्यन्तास॥ ॥ उं शं कं वसुधायनमस्या
हा॥ ॥ थनपचापहनपूजात्वज्याय॥ ॥ उं वसुधात्रासदानत्वादानिदानवता
न॥ ॥ साधनापायकवकः लघिसिद्धिवपदा॥ ॥ थनश्रघ्याय॥ गं खसइइ
थना॥ नअनत्ततयाअः कर्जघट्टांता॥ थनश्रयदानपतिकाय॥ ॥ उं उ
हिमहादविष्पथिविलाकमाननसर्वनत्तसंपूर्ण॥ दिव्यालकारुषन॥ हानना
पूननिघरिवजसत्त्वपयूजं॥ गृहित्वा००० दंसघचउं नकर्मसाधय॥ उं डीडी
डीडीइंरुट्साहा॥ ॥ थनत्वज्याय॥ ॥ उं त्वदविरुत्वासाकितारुगानिःस

वैवृद्धानुतायिता चर्या नय विश्व ख वृः रुमि पात्र मिता सूच ॥ यथा न वृत्त रुम्ना ॥
साव्य सिंह न तायिता ॥ कथा साव वन क्रिन्ता ॥ सधुल म्प ख या म्प ह ॥ ॥ थन वृत्त न
थिय ॥ ॥ उं मद निव क्रि रु व वृत्त व धन ई ॥ ॥ थन पचाप हान पूजा ना ॥
थन वलि विय ॥ ॥ उं वसु धाना सर्व दानि इ इ ख रु नि तीः सर्व य ऊ नी स म न्ता
प स म धि ॥ द व लि ग ॥ इ र ख खा हि ॥ धान सि धा नी नि स्वा रु ॥ ॥ थ नि व स
धना दि वा स न या वि धि ॥ ध या लि श क लु गा धि वा स न या वि धि ॥ स धु ल या म
ध स ॥ पि रु वा स न नः श्रु द न वा या अः वि रु य क व स स्था प ना या य ॥ क ल स
या रु उ न्पा ॥ सू उ था प ना या य ॥ क ल स या रु उ ख उ व र्ज था प ना या य ॥

कनसयालिङ्गान्यगखथापनायाय॥ कनसयाखड्गसद्यंछथापनायाय॥ हनकन
याखड्गान्निलनगथापनायाय॥ श्रुग्नकोला॥ मायूलगथापनायाय॥ नेष्टन्य
कानसपिकनंगथापनायाय॥ वायुव्यकानसः क्षाउत्रगथापनायाय॥ ॐ शान
कानसः आउलगथापनायाय॥ कनसयाखड्गान्निलनगथापनायाय॥ थनि
धूनकाडा॥ गीतनिर्मितरुज॥ ॥ थनजापधूपः निवाजनः मगरुतात्रचान
थनध्यानयाय॥ ॥ उं वज्रासुतदक ००० इ॥ ॥ थनगालखनय॥ ॥ उं नफन
फसहानकवज्रासुतदक ००० स्वाहा॥ ॥ उं आइसफजफहानासुकल
स्यः पचासुतः सुगंधजलशुक्लरुकावजय॥ पूषासुगंधवाधिविरुपासुत

॥ **थननिनाजनमरुतानवातनाय** ॥ **थनस्वरावगुह्याश्रक**
र्षनपाद्यादिपूष्यन्याग ॥ **थनपाद्यादिनय** ॥ **थनपचनथागतयोस्वतृपनयूजाया**
नाडास्वानवाय ॥ **थनपचापरात्रयूजात्रास्याना** ॥ ॥ **उं नमशीवजसन्वायः व**
जनत्वायनमः ॥ **उं नमवजधमयिनमः** ॥ **उं नमवजकसयिनमः** ॥ **॥ थनवलि वि**
य ॥ ॥ श्रुवात्रमुखं न्यादि ॥ ॐ निकात्रसाधिविधि ॥ थनसुजादिवासन ॥ सु
सुवजनथिस्यनय ॥ ॥ उं इं शङ्गीखमृश्रा ॐ ॐ ॐ उं उं मृ मृ ॐ ॐ स्वस्वमस्तु ॥
श्रुश्रीत्यादिदेवतासुपुन्यस्यन ॥ उं वजसमयसमादिकर्मति ॥ ॥ थ
नपूजास्तुति ॥ ॥ ॐ श्रुसुजादिवासनयाविधि ॥ ॥ थनवजाधिवासन ॥ ॥

गीतवज्रधनपंचवृद्धाथनवर्जनंथिय॥ ॥उंकात्रपंचसच्चिकावजंविशब्द॥
थनपूजास्तुति॥ ॥उंशिवज्रहृत्कजकिरीजालसम्बन्धस्वाहा॥ ॥ॐतिव
जाधिवासनयाविधि॥ ॥उंउरुवसन्त्यासखादिवासन॥ ॥उंनमःसमंक्त
कायवाकचिरुःश्रुनक्तवासकित्तुकाःकंर्कतका॥पत्रःसहापत्रःगंखपात्र
कृत्रिका॥द्रवविद्रवःविद्रवादिभ्यामृत्युमहानागनाद्रवःपुष्पःधूपःद्रव
स्वाहा॥ ॥ॐतिसिखादिवासनयाविधि॥ ॥ॐयातिडीचथादिवासन
याविधि॥ ॥तमाचंखविशब्द॥उंवज्रघट्टमृमृस्वाहा॥ ॥ॐति
पुष्पदिवास्तनयाविधि॥ ॥थनकलसयादशान्तिलनग॥ ॥थनव

जनधिया॥ ॥ॐ वृक्षाचिरुयसमयई॥ ॥ॐ निनिलकलस॥ ॥ॐ वृ
चिरुवृक्षसमयई॥ ॥ॐ मिश्रकृत्रगत॥ ॥ॐ आवृक्षाचिरुयसमय
ई॥ ॥ॐ निपिनरगत॥ ॥ॐ जीवृक्षाचिरुसमयई॥ ॥ॐ नित्र
कृत्रगत॥ ॥ॐ रवृक्षाचिरुसमयई॥ ॥ॐ निहेनितनंगस॥ ॥थ
नपचापरात्रपञ्चाङ्गति॥ ॥यधर्मगिगथ॥ अकात्रमूरवलि॥ थनरुमाप
न॥ थयथयसंतय॥ थनत्रगादिवासनयाविधि॥ थयालिङ्गामथुलमध्व
सपितवासननश्रुष्टदलवाया॥ सुष्ठुथयनायाय॥ ज्ञापधूपयाय॥ ॥
रावनियाय॥ ॥ नमोमथुलरुमध्वविषयपूजाहिमूवाना॥ चक्रसंनय

उरुनसाधनः खयुत्रा कान्पिवा विरुव्या ॥ उं वरु ह ह नूवा ईरुदुस्वाहा ॥
जाकिरी गोलसवल स्वाहा ॥ ॥ नमो मनु सन न च उ सूर्य सन नृपः च रु ध
उं दिवा हृ कति न विन्दुः उं नृ नृ ४ नृ नृ स्वाहा ॥ ॥ ॐ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ ॥
थनशापदनाश गनूमा नान स उ नृ नृ ॥ ॥ ॐ गनशा ने नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ
रुने नृ नृ नृ नृ नृ ॥ ॥ मा शा ॐ गन स चानृ ॥ ॥ मनु ॥ ॥ उं नृ नृ नृ नृ नृ नृ
सर्वधर्मापन स चानृ गन सर्वधर्मा ॥ नृ नृ नृ नृ गन सर्वधर्मा ॥ उं नृ नृ नृ ॥
॥ ॥ नृ नृ मनु पन पाश स उ नृ नृ ॥ ॥ ॐ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ ॥ ॥ ध
या लिता ह वना धिवा सन या विधि मा ह ॥ ॥ थन गनूमा शा नृ नृ नृ नृ नृ नृ नृ

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ ॐ तत्सत्सु लक्ष्मिनिषयपश्चिमासः सूर्वाधिपति
सुलक्ष्मिनिदेवता ॥ न्यासवक्रमतः पचामस्तसुग (वेचकुनगस्तुताः ॥
सुषुः सुलक्ष्मिः सुद्विजमयूखाकु (गी ॥ देवतासु लयथायोगः नामकु
प्यषुः प्रवर्गित ॥ ॥ थनश्राकर्षनयानाशः पचगधनप्रपनयानाशः वचस्वा
नवाय ॥ गिरुसमलय ॥ ॥ थनसस्वलयस्वानवाय ॥ शिचक्रम सुलस
हिरुनरुल ॥ ॥ ॐ वज्रसुनस्वगिमावरुय (गधयकी ॥ ॥ ॐ निसुल
किष्ठा (धधन ॥ थनधूपदहनजीनाशः वज्रघट्टजीनाश ॥ धूपवाक्कनधूप
थन्य ॥ ॥ ॐ रुगवक्तुस्तवजविद्यानाशनसस्तु ॥ ॥ थनयचीपहान

पूजास्तुति ॥ **थननगर्पतः वलिः** श्रुकालमुखं न्यादि ॥ ॐ नित्यं वनाधिवासनया
विधि ॥ श्रुयालिङ्गसूत्रथाययाविधि ॥ श्रुयालिङ्गध्यानयानाङ्गचान्द ॥ ॥ ॐ रु
भोमधुलमध्वः पूर्वोक्तिमखाः मधुलयागवानः गध्यापलिफहमराजनः
रुः वलितुमसुसस्काप्य ॥ ॥ ॐ श्रुवृश्रुजिषहंकारनरेष्यन्तः पचनथाग
तस्करावानिः दानसूत्रानिरावयत ॥ ॥ **थनवज्रमपचवृद्धः** श्रुथावना
यानाङ्गः थमङ्गापदनाङ्गः पचगधसंथनाङ्गः पर्वङ्गापथिमङ्गाचानाङ्गसूत्रथा
य ॥ ॥ **मनु** ॥ ॥ ॐ श्रुसाग्वरवज्रसूत्रमप्रयक्त्वा महामधुलसूत्रनाग
यहं ॥ ॥ **हनदजिनअउरुनसचानाङ्गसूत्रथाय** ॥ ॥ **मनु** ॥ ॥ ॐ श्रु

[illegible]

स्ववलिविय॥थनऊमापन॥ॐ निस्रुपयाननविधि॥थयालिनारि किल
पूजा॥थनसखवनयाय॥ ॥ॐ नमानारिकिलयः ईकालनत्तापय॥स्वक
नवऊन॥मृनुलावयन॥ ॥थनपचापहात्रयूजाः यधमागिंथा॥वलिविय
थननारिकिलतिनाअः पचगधनथन॥गमथापनय॥ ॥ॐ धर्मधुन
यगुद्धः सखाधुपमानकं॥स्वयवजाधलानाशः सर्वशेषविनिमृकं च
काशकंनारिकिलं॥ ॥धर्मगमथापनयाअवडधंरुजाताशः लगनःॐ शान
अः पूर्वशानचकडुगमला॥ ॥ॐ वजाशकस्य ई॥ ॥हाननगसात्रे॥
ॐ नमानगानः कषूसासचकंपिरुगिरःॐ निविहापयन॥ ॥थन

[illegible]

[illegible]

ॐ नमः श्रीवक्रसम्बन्धनाय ॥ ॥ यत्नमधुलाधिवासनयाविधिथक्कापनाया
या ॥ ॥ क्रापासिंघासनदयक ॥ श्वसिंघासनसवसात्रायाऽथपनायाया ॥ प्रमिसा
वाया ॥ सानादवा ॥ वसुधना ॥ ॐ नायकवत्र २ ॥ नूरुंदा ॥ वत्र २ कत्राक ॥ श्वन
दवनायाखडीमनय ॥ ॥ मधुलसवत्रा १० कलसवीया ॥ वत्र १ पंचसालि ॥ वत्र
१ पंचपात्र ॥ वत्र १ वाद्यथापि ॥ खाडपात्रवत्र १ सूवर्ह्याकलस ॥ सगनव
गनास ॥ ५ स्वसिंधुमूल ॥ माहनिपचाकृ ॥ पचास ॥ काखपान ॥ विरु
हाहृद्वला ॥ नूरुद्वला ॥ तारुकि ॥ सूत्राकाल ॥ खादवखाय ॥ पचकृ ॥ खाय
दिगपनाकवाय ॥ ॥ धाननय ॥ वाकलसयाविधिनय ॥ ॥ निथलिरव ॥

साइइ॥ पचशषधि॥ ॥ **पंचप्रत्यव॥** ॥ पोह॥ प॥ ॥ लायधना॥ ॥
किसलि॥ कलसयावस्त॥ ॥ **दारुखानकाचा॥** ॥ **स्वर्गक॥** ॥ **पचन॥**
दिक्ति॥ ॐ॥ का॥ प॥ का॥ सा सो न स्प नान न नय॥ ॥ कयखविपननचिय॥ पं
चसुफानहिन्य॥ ॥ **धूमिकलसयाविधिइल॥** ॥ धूमिथपनायायधूनकाश
थनसूर्याधियाय॥ गनुपादार्थ॥ पंचगाव्य॥ ग॥ धन॥ धनपूजाकलशीपेक॥
धनखरावपूजा॥ नानपूजा॥ नधपूजा॥ गीतमूक्तग॥ चने॥ ॥ धनग
नमधुल॥ लखवालि॥ सधुलविगीजन॥ ॥ धनसिंधुनपूजा॥ ॥ नहस्य
मधुल॥ ॥ **गीतमूनिल॥** ॥ **कलसपूजा॥** ॥ गीतकल॥ चन॥ धनवानूशीय

ॐ गीतनकाय ॥ ॥ धनपापपूजा ॥ गीत (गमक) दहन ॥ ॥ धनविनशद्व
पूजा ॥ धन ॥ ॥ ॐ कृष्णपतिमीशुन्यनानमत्रं ॥ त्रय्याचकिविद्याकितनादि
विविधपूतसलं ॥ एविनमशुलंस्वपनिष्पाय ॥ वादगादिकीषाय्य ॥ तसत्त
त्रितं । धनिरिः समानितहानमशुलं ॥ ॥ धनगीतमृतननी ॥ ॥ जापधूप
पाद्यादिस्नानवाया ॥ ॥ ॐ यमाक्तकायनमस्वाहा ॥ ॐ अक्षयनवायनमस्वा
हा ॥ ॐ विद्याक्तकायनमस्वाहा ॥ ॐ अक्षयनवायनमस्वाहा ॥ ॐ उर्विजाजायनम
स्वाहा ॥ ॐ नीलदंशयमनमस्वाहा ॥ ॐ मरुवलायनमस्वाहा ॥ ॐ उर्वीख
चकायनमस्वाहा ॥ ॐ मरुजाजायनमस्वाहा ॥ ॥ धनपूजास्थानी ॥

ॐ जमानकं महाविलं पृथक् न कथं च ॥ पञ्चातकं विद्यातकं ॥ अचलं
न किञ्चाकायः निलदं पुमहाविलं ॥ उषिषः सूर्यः दशकाधनसक्तं ॥
थननर्पणं ॥ ॥ **थनश्रुत्वात्मनः खलिवियं** ॥ ॥ **थनप्रचापहानपूजा** ॥
थनविजयकालसथियकं ॥ वक्तुं ॥ ॥ ॐ वज्रयज्ञं ॥ ॥ वंरुथियं ॥ ॥ ॐ
हं हं हं हं हं हं ॥ ॥ **पञ्चाकृगथियं** ॥ ॥ ॐ श्रीगिरिहं ॥ प ॥ पञ्चात्मन
थियं ॥ ॥ ॐ सर्वरुथिगानकायविः ॥ धनियस्वाहा ॥ ॥ **गीसनथियं** ॥ ॥
ॐ श्रीहं ॥ ॥ मोहनिथियं ॥ ॥ ॐ रुक्मिणः रुक्मिणः मोहनिश्रुत्वात्मन
हा ॥ ॥ **थनसिद्धयथियं** ॥ ॥ ॐ वज्रसर्वविजयेशान्वनीयस्वाहा ॥ ॥

थनमथुलपूजागीतमथुलसया॥चक्र॥ **ध्यान॥** ॥तनामथुलाधिपतिस्त
दलायविलास्य॥स्वस्वस्थानेषुःस्वस्वदेवताविचित्र्य॥ **॥थनजाग्रदध्यानिना**
जनःमनःतन्वा॥गीगन॥आकर्षणपाशादिपूष्यन्माहा॥**थनस्नानवाय॥** ॥
पूजाता॥ **॥थनमथुलाधिवासनयाविधिशुला॥** ॥थनपद्माकाय॥कृमा
प्रतयाय॥ **॥थनमथुलपदक्रियायाय॥** **॥स्वस्तिवाक्याय॥** ॥यकस
चिक॥ ॥ॐ रुटिठिइंरुट् ॥ ३ ॥ॐ द्वात्राद्याकयसमयप्रवगायइं॥ **॥थन**
दिगवधन॥ ॥ॐ सरुनि२इंरुट् ॥ॐ गृद्र२इंरुट् ॥ॐ गृद्रापय२इंरु
ट् ॥आनयहृगवनविद्यानाजइंरुट् ॥ **॥थनदिगपूजा॥** ॥गीतपूर्वदी

मचन॥ ॥थुनिभनकाषाप्रथमकायाअविश्याय॥ ॥थनलिद्वपूजा॥ गीतादि
धूपचवा॥ ॥त्रिचक्र॥थनज्ञाप॥ ॥निनाजनमकरुतात्रवा॥ ॥गगन॥पूष्यन्याग॥
थनसहबालिविय॥दिग्वलिविय॥स्नानकिटन्या॥गनपूजा॥दक्षिनाकाय॥दग
समयकाय॥थुनिद्रिकिलायाविधिशुल॥ ॥ ॥

उंनमशीवस्तुत्वाय॥ ॥थनलिअधिवासनयाविधिसाह॥ ॥कनसगगश
वगनास्त॥मक॥गणसमहाकानपूजा॥ ॥थनवृद्धधर्मअसाद्यपाशप्रतिमा

श्रीदिनासिचि

वाय॥ ॥ ॐ ॥ पूजायाय॥ धनसिष्यगुरुमधुलदनके॥ ॥ पंचगव्यविय॥ लंघ
बलि॥ धनविर्गजिन॥ निराजनमकरुतात्रचानताय॥ ॥ आगतभायाउक्तय॥
धनराहातज्ञाजलयंगय॥ ॥ धनदशनाखकन्य॥ ॥ उं पत्रम्यसहजानन्दमानिकाय
महासूर्यनिष्पादिभ्यः सनदिभ्यः सिद्धवज्रसिष्यसिद्धस्कृतं॥ ॥ शिष्यसः थक्क
पत्रम्यधनयाश्रुदिवास्तनः तमस्कात्रयानायास्वरुवनः महाश्रानन्दयानाउक्त
धगतविश्रान्तं॥ श्रुदिमइश्रुक्तमइः श्रुषिष्यकथिगरुवद्वायशुल॥ ॥ कुरुशि
ष्यदोमकदीवा॥ ॥ शिष्यसः थथिगुसुद्धरुमिसः श्रुषिष्यकनायनिमिरुिनः
शिष्यपनिस्पनशुलसां॥ ॥ ननरुशः निन्ननरुशः वइत्रंवा॥ ॥ श्रुदिवासुन

काशम्यडा॥ ॥ धनलि॥ शिष्यसः रुडयापूलिनपथि विसृयाडाः ख॥ नाह न
शालपडाः स्वानमालाजानाडाः गन्याक०० नापयानं॥ ॥ नहलोककदयार्थ
नापिप्राजाकसुदयार्थ॥ किंरुनथागताकाय॥ रुसंपदपानयन॥ ॥ इनाथ
हगनः०० हलोकसः सुखसंपत्तिनायया अर्थनसषः हनपत्रलोकससुखसंपदनाय
या अर्थसमषः कवत्यनथागतया सनीत्रशयकामनारामषः धकः शिगन्याकविमः
नियानं॥ ॐ ॥ मधुलपुवगकार्यः नथामन्यकदयः ससुदयित्वा॥ ॐ ॥ शिगू
नरुः धगजतसहनसानंः नथागतया धर्मसहोगाययानः०० कयानाः धम
धुलसइविचकंपगान्नशयमालधकः ॐ बालसः शिगन्याकसुदयकलं॥ श

गिष्य आसथ्य नाशुलसाः योपनिस्तमसुधर्मसुद्वियमाह धर्कः शीगन्तु नर
नसा आह दत्तं ॥ ॥ स्वस्तनिलमखनव्यः वज्रानिगनः प्रहाप्रानानः रुदिज
किनेः नाकम् मुखनप्रविनेः संयज्ञनथागन ॥ ॥ रुगिष्यतः श्वक्रपनम्य श्वनशीच
कुसुवनयानुपः आत्मा रुयाजः पंचामरगणिका थडी क्रुडुसथनाडीः थडी हृदयस
पंचमथागतयाविद्यामनउत्यमिशुशानप्रप्यमान ॥ ॥ मरुजन्मजानकः नादिरु
यानकाः रुगवाप्यउत्रकउद्धः त्वमसास्मासहानु ॥ ॥ इनाथरुगन्तुः श्वससाजरा
नानः समुद्रनथकायूडीः कलपालस्यनः श्वससाजराहयधायगथाः गगथाय
सहिनिमंशुपयारुयः गगथायससुचयारुयः गगथायसहायारुयः गगथा

यस्य गुरुया रुया ॥ मृत्वा धस सा नया रुय धाय ॥ ॥ ॐ कामि हं स हानाथः महावाधिय
नय इट दहि म्यसमय न चः वाधिवि कच दहि म ॥ ॥ हनाथ हं गजः जिन शलः
सांः श्री गथागतया हाननाय वाक्यानाः हनाथ धम वृत् ॥ श्री बृद्ध धर्मया के स नया
काशः प्रगन्त शलय माला ॥ ॥ बृद्ध धर्म च संघ च दहि म स न नयः प्रव गाय स्वमा
नाथः महा मा कृ पू न वं ॥ ॥ धन लिता गन्त शल सांः शिष्य या रुडा न्य धालः ॥
शिष्य सः श्री बृद्ध धर्मया के स न नया नाशः मा कृ या पू न मः जिन शल सांः प्रस्थ धाय स
जिन शल साथ काय धकः ध कृ गन्त शल सांः शिष्य या न धाल ॥ ॥ उदिवत्स
महायानः सज्ज चर्या नित्य विधिः दगायि ष्या मि न स न्य कः राजन त्व महा न ॥ ॥

हृदिष्वातः श्वसनायानमनुचर्याभिः न्यतनः विधानतः दशानानः धगुलिङ्गाग
श्लोः॥ ॥ **वृद्धाडियध्वसनादगाः** कायवाकचिरुवजानसंप्राप्य ह्यनमस्तुतः व
दमनुप्रकाशः॥ ॥ हृदिष्वातः श्वसनायानमनुचर्याभिः न्यतनः विधानतः दशानानः धगुलिङ्गाग
चक्रधायः वेनाचनतथागतया कतउत्पल्लिङ्गागः वाकचक्रः हाकनंश्रुमिना रु
तथागतया कतउत्पल्लिङ्गागः चिरुचक्रः श्रुश्रुत्यतथागतया कतउत्पल्लिङ्गा
गः थथित्यश्रुदुल्य ह्यननाययानः मनुयाप्रकाशनः पचतथागतस्य ननात॥
लाकानुवृत्तिमागस्यः चक्रवर्त्तिनिविदिता॥ तस्मात्सर्गिमिमावत्सह कुलसच
दृष्टाफय॥ ॥ **हृदिष्वातः श्वसनायानमनुचर्याभिः** न्यतनः विधानतः दशानानः धगुलिङ्गाग

यानां उः समस्त ला कया कं मूत रुतः वृद्धि चक्र हिल थ हिल का उः अगम्य गता ल मा
उः सर्व ह हान नाय या नः सत निरु न्य ॥ ॥ नत्त रुय सन नः सर्व प्र ति दि गा म्य च ॥
मूत मा य ग गत्य न्यः वृद्धि वा (धो) द (ध) सन ॥ ॥ **हनाथ कल स्य न** द स वि या थः स
मस्त या प क र्त्त ला ल गा उः अगत्स सा न न का या य को म नानः मथ ग ग या दान वा य ॥
॥ ॥ न व स मा न्य स ति नः आ वा र्थ स ह न ग ह न रु ति ष्य ॥ ॥ अन लिः गि ष्य न श व
ताः ग न्या क वि म ति या नः ॥ ॥ चक्र वे व म्य स म्य क दत्ता ना थ रु व स्व व च क्रुः द
व ना या थ त्वा ॥ आ वा र्थ म्पा रु ति म्य सः सर्व स त्वा ना थ का व ना न ॥ ॥ ह ग न्यः स म
स्त थ न भा ग ना या दानः रु न ग द्ध स र्तिः आ च क्र स म्ब ल या दान ॥ आ वा र्थ ह न नाना
उः समस्त प नि स्त न का या य का व न सः स त स्त वृ द्ध या दान ना ना उः थ थि ग य का न

नयायमान॥ मृथ्वा खलु जानातिः समस्त हानयनप्यमाला॥ ॥ समन्वाहत्रंदुमाः स
र्ववृद्धवाधिसत्त्वाः मूर्ध्ना मृकनामा ० रसायाला मृपादायः शवजवाधिसमुल्लुनि
षमग ॥ ॥ हनाथः समस्त कथागत आदिनः समस्त वाधिसत्त्वपनिस्तनः मृनेय
हयानातिः वाधिहानपदमलाहाल्यः न जायान्यप्रगन्त शयमाला॥ ॥ उत्पादयामिप
नमः वाधिविरुमनूकवः यथाश्रियधिका नाथ सवाधेकननिश्चयं॥ ॥ हनाथ
धधिन्यप्रनम हाननाकातिः मनहर्यमानरुलः गथधधलमाः कायवाकचिरुः मृका
सुतथागतः धधिग हाननिश्चयननायुतिः ॥ विविधसिलसिष्यान्वः कुगलधर्म
सुग्रहं॥ सखाथलक्रियाशिलः प्रनिगदक्ररुत्वग ॥ ॥ हनाथः सत्त्वयाननिमिरुिन
क्रियाकर्मयायसिलरिनकातिः समस्त देवयासिनः देवः धर्मप्रवस्यधनः वरुसत्त्व

यापुर्मसहानः वृद्धधर्मासंघयाहानः जिनत्रायधकः गिष्पनरुलसां गनुउपाध्म रुया
कविमनिर्यातं ॥ ॥ महानेत्तकूलशुद्धः समयवचमनाचम ॥ सधर्माप्रतिगुद्रामि ॥
वाध्वगुद्रशिपानिक ॥ ॥ **रागनः** तमधत्तवत्तया कूलसञ्चानाओः समस्तहानदका
जिमनहर्षमानधकः वाध्वयाकथाः गध्वयाकथाः त्रारु ॥ वाध्वयाताधकः गिष्पन
धालं ॥ ॥ महापद्मकूलशुद्धः महावाधिसहवसर्वत्रसर्वसंयुक्तः पुक्तिगुद्रामिस्त
र्वत ॥ ॥ **हनाथः** कडीधत्तशीसम्बन्मापद्मया कूलसः शीसम्बलननानाओः तयाहानः
समस्तजिनत्रायः कूलपालपनिसयाजिन ॥ **हनाथः** पयाना ॥ ॥ मृतास्वस्थानासयिः
प्यामिनिवर्त ॥ ॥ **हनाथः** कूलपालयाप्रदतः सत्यसंपत्तिनीकभयातः सपसंप
तिविय ॥ समस्तलोकस्वर्गस्वास्तकस्यप्रगन्तुस्यविश्रायतालधकः शीगन्तयाक

गिष्पपनिस्यतशूलसंप्रार्थनायानाशविमनियानं॥ ॥थननिनाजनमगरुतालवा
गगनशुकाभायाशुभय॥गत्रयाककिमनःथनगत्रनमशुक्त्य॥ ॥उंखगुलाहं
रुद्र॥ ॥थनगिष्पयातिलसस्नानमय॥ ॥उं गिसिलपूष्यं॥ ॥थनद्रदयसचे
तनमिचक॥ ॥उं हदिगधदशान॥ ॥धूमककन्य॥ ॥थनशिकायशुधस्थानः
याय॥ ॥उं आहं॥ ॥थमडीपथन॥ ॥पूर्वस्वचकआमाशुतमनय॥ ॥नासिचक
॥उं डीमसमजिवनस्वाहा॥ ॥दं दृकादविय॥ ॥उं वज्रहासहं॥ ॥कलसया
त्रवविय॥ ॥उं धर्मविशुद्धसर्वपापानपननास्या॥धयसर्वविकल्पानशुवाः
स्वधयउं॥उं मचिनियस्वाहा॥ ॥उं माकसियस्वाहा॥उं दलत्रियस्वाहा॥

ॐ असलजिवकस्वाहा॥ ॥ **थननागका**॥ अधुकिहायकंनलसुशकाप्यन्य॥ ॥ ॐ न
कसुहगिष्यपमान्यनइ॥ ॥ **स्वध्माध्माय**॥ ॥ वज्रघनि॥ ॥ **नाहानसहाय**॥ ॥ ॐ
वज्रनिक्ध॥ ॥ **थनवजनथिय**॥ ॥ **थनवानुकापालविय**॥ ॥ ॐ बुद्धमेशीनक
२सासर्वसत्वानास्वाहा॥ ॥ **थनसकल्पधूनकाडा**॥ ॥ अय २ सनयाअः दशानाखक
न्य॥ ॥ अतंगकल्पकामिरियरुनपापापनातः तत्सर्वकृत्यंयान्तिदृष्टामधुलमिद
॥ ॥ ॥ **हगिष्यः** ॥ अश्रुधिवासनयामधुलदर्शनियातायापूथनः कल्पकानियानाण
पसमसुंतागश्रुयुडा॥ ॥ सर्वहानाकदालोक॥ सर्वज्ञायकनचा॥ ॐ इवनभकुस
संः कदाचिकहचिरव॥ ॥ **हगिष्यसः** ॥ अतयापुकोननः तानाइखयाथायसडा

न्यमस्वालाः धनपूष्यानिमिर्निनः थअगानिलनिर्मशला ॥ उत्तमाना इर्गतिगितः
खाः सर्वइवस्वरुवायाख्याचन्यवेलअसिमतिः अन्पुननिलमला ॥ हसिष्यस
वअसन्पानशलासाः थगलिचय्याधनलपायापुन्यनः इर्गतिकुमात्रयाथायसअ
न्यमालिमालिअमधुधकः इर्गतिगियाथायसअन्यमस्वालाः थयापूष्यननिर्मल
सलिइयिअ ॥ **अथशय्याहिः** अउनाबप्रनालात्तहमति ॥ यतइयंजिनिसर्वः स
पूअहित्रसासना ॥ थतलिअककात्रनः किसतस्त्यनः अउत्यहानकपनिस
सस्त्यननातः थनननथागनयापूअइअः सित्यकालसज्जन्तइयिअः धकः थिग
नूनआहादयवाअविअन ॥ ॥ ॐ सर्वपत्रिगहीनास्तुजायमानासहसता

रि॥ ननययंजितिसर्वः सजाताहिरविष्य४॥ ॥ **रुगिष्यगः** धर्मप्रतिकारनं
धर्मसमस्तकल्लहानः काययागः धर्मसमस्तपुत्रपश्याडाः सजातिः स्वध्याथायस
रुल्लाः रुतकायडाधर्कः धर्मपत्रमध्वनस्पनः गननआहविलं॥ ॥ उपमार्गवि
संशासानः सहयानसहादयनः रुयगमिष्यति॥ हविष्यतिनधगनं॥ ॥ **रुगि**
ष्यगः धधित्यगसहायानचर्पाधर्कः धर्मत्रपाडाः सहआनन्दश्याडाः श्रीकथागकया
हानजाडाः रुतकायडाधर्कः श्रीगनरुनउपाध्यानरुनहृदयकलं॥ ॥ धनग
न्याकिकिन्य॥ रुतसाचक्षिपदप्यमडा॥ ॥ **रुससुद्रुनप्यम**॥ वृगलासाहृग
रात्रप्यः कनाडाचानसाम्यवयाकन्यममडा॥ ॥ **धनलिः** गगनविय॥ **रुनन्य**

स्नानविनियोगः॥ गुरुपूजा॥ दक्षिणा॥ क्रमापन॥ आशिवादनं॥ यतः गुरुसाक्षात् स्नानं स्वा-
नक्रियायाः॥ मधुलया गुरुसद्वृत्तान्तः॥ ॥ यतः सनूयं १४ वादनं तस्य स-
धुलपदविनियोगः॥ ॥ ॐ इन्द्रं कर्मादावाः श्रीं श्रीं वातरुयानं कंतिनावजपदं नृ-
वज्रवर्धनमधुल॥ ॥ यतः स्नानक्रिया॥ ॥ ॐ प्रविसं दुरुगवनसदा मां नृप-
त्रव इन्द्रं इन्द्रं सिद्धिं कुरु मां जलनाथं वज्रपुष्पप्रभं कुरु स्वाहा॥ ॥ यतः शिष्य-
पाठ आशिवादनविनियोगः॥ पञ्चाङ्गविनियोगः॥ यतः नयाचक्रं॥ यतः गुरुरूपनिर्णय-
विनियोगः॥ यतः नयाचक्रं॥ ॥ यतः शिष्यादिवासनयाविधिः॥ ॥ ॐ १० ३ १ १

ॐ
१०
३
१
१

॥ ॐ नमो श्रीवज्रसत्वाय॥ ॥ यतः चाकिलायाविधियान्तं हय॥

थनलिङ्गहयपतिस्तन्य॥ ॥पानकमथुलगाकिनमथुलथिल॥ ॥द्राकि
नस्नानवाय॥ ॥पचगव्यविय॥ ॥बीसऊन॥थनस्नानकि कायगन्तूमाशस्य
तं॥ ॥थनधूपथन्यपूर्वद्वाननिस्य॥ ॥बचनयाय॥दवगादकाकुनाअशिष्य
पनिरुःधूपथन॥ ॥हृतागलियाचकंतथ्य॥थनगूत्रसाशरुमथुलयामध्व
सइहनेअय॥ ॥उंइंइंकालचगादाखःकीकीकालरुयानकःनिनोवऊप
दनिस्यःवरुनागधनमथुल॥ ॥थनस्नानचय॥ ॥उंप्रविमदुहगव
नःसाहामाऊपूलवन॥सर्वसूखचन्द्रपन्नसूखातससिद्धिगहंवहंसिद्धि
कसूमागलिनाथंवरुपूष्पयतिकस्वाहा॥ ॥हनपूर्वद्वाननिस्यधूपयाय॥

ॐ शुभमस्तु नमः शिवाय ॥ श्री कान्ताः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ सर्वगताः सर्वविघ्नहर्त्राः ॥ वज्र
सूत्रं श्रीविष्णुः ॥ ॥ **थन चतुर्दशानवचनयाय ॥** ॥ **सक्तु ॥** ॥ ॐ इन्द्र इन्द्र पूर्व ॥ श्री
कुरु ॥ ॥ ॐ हनमालय २ सर्व इन्द्र नद्यानय २ श्री श्री इन्द्र ॥ ॥ **पश्चिमे नायल ॥**
ॐ श्री इन्द्र इन्द्र ॥ ॥ **थन पश्चिमपका ॥** ॥ ॐ उॐ श्री श्री इन्द्र ॥ ॥ **थन उरुन**
०० का ॥ ॥ **थन द्वात्रिंशत्वाचन ॥** ॥ ॐ द्वात्रिंशत्वाचनय सप्तय प्रवर्गाय ॥ ॥
थन वज्रथक्तिन ॥ ॥ ॐ इन्द्र किन इन्द्र ॥ ॥ **थन दिगवंधनयाय ॥** ॥ ॐ सुरुनि २ रु
द्र ॥ ॥ **पूर्व ॥** ॥ गुरु ॥ इन्द्र ॥ ॥ **दक्षिण ॥** ॥ ॐ गुरुपाय २ इन्द्र ॥
पश्चिम ॥ ॥ ॐ श्री नय हारुगवन विद्याना इन्द्र ॥ ॥ ॐ रुद्र ॥ **थन दिगपूजा**

याय॥ पूर्वघ्नान्निस्यं॥ थनगप्रसाकस्यनरतामकूननपूय॥ ॥ गीतचउग्रहसस
गान॥ थनपूर्वसु०५५ हवपूजायाय॥ थनमूकर्षनपाद्यादिस्नानवाय॥ ॥ उं०००
द्रायनमस्वाहा॥ उंयमायनमस्वाहा॥ उंनितुवर्क्षीयनमस्वाहा॥ उं गरुवाहनायं
मस्वाहा॥ उं वरुपूष्यप्रतिकृस्वाहा॥ ॥ थनपूजानास्वाहा॥ ॥ उं००० द्रायनी
लवर्क्षीयमहाविलंः वरुपमरुसं चः गरुवाहनायनमस्तु०॥ ॥ थनदक्षितस
रुसदवेनापूजा॥ मूकर्षनस्वाद्यादिस्नानवाय॥ ॥ उंयमाककायनमस्वाहा
उं हनिरुवर्क्षीयनमस्वाहा॥ उं महिरुवाहनायनमस्वाहा॥ उं वरुपूष्यप्रतिकृ
हा॥ ॥ थनपूजानास्वाहा॥ ॥ उंयमायहनिरुवर्क्षीयमहाविलिः रुसददं च

हस्तचमहिरवाहनायनमस्तु ॥ ॥ **थनपत्रिमसवत्ररादवनापूजाः आकर्षतया**
यादिस्नानवाय ॥ ॥ ॐ वत्रुधायनमस्वाहा ॥ ॐ (श्वरवर्धनयनमस्वाहा ॥ ॐ अस्तु नवा
हनायनमस्वाहा ॥ वज्रपुष्पं प्रकिञ्च स्वाहा ॥ ॥ **थनपूजानास्यानाययाय ॥ ॥ ॐ व**
र्धनय (श्वरवर्महवित्रः तारापागाहस्तं च वत्रुधायनमस्तु ॥ ॥ **थनउरुनसकव्य**
लदवनापूजा ॥ ॥ आकर्षतया यादिस्नानवाय ॥ ॥ ॐ कव्यलायनमस्वाहा ॥ ॐ पि
तवर्धनयनमस्वाहा ॥ ॐ कुलगवाहनायनमस्वाहा ॥ वज्रपुष्पं प्रकिञ्च स्वाहा ॥ ॥
थनपूजानास्यानाय ॥ ॥ ॐ कव्यनायपितवर्धनहविलः नत्तकसनहस्तचः क
व्यनायनमस्तु ॥ ॥ **थनअग्निनिदवनापूजा ॥ आकर्षतया यादिस्नानवा**

य॥ ॥ॐ अग्निदेवताय नमः स्वाहा॥ ॐ त्रकवर्धय नमः स्वाहा॥ ॐ रूपमागकि
धय नमः स्वाहा॥ ॐ कागवाहताय नमः स्वाहा॥ वज्रपुष्पपतिक स्वाहा॥ ॥
थत पूजानास्यानां ॥ ॥ॐ अग्नि यत्र कवर्धः महाविलः रूपमालागकि हस्तं च
अग्निदेवि नमः स्तुत॥ ॥ थत नेमः नाक्रसदेवता पूजा॥ आकर्षत पाशादिस्वानः
वाय॥ ॥ॐ नाक्रसदेवताय नमः स्वाहा॥ ॐ त्रकवर्धय नमः स्वाहा॥ ॐ धनाने वा
हताय नमः स्वाहा॥ ॐ खर्जपागधनाय नमः स्वाहा॥ वज्रपुष्पपतिक स्वाहा॥ ॥
थत पूजानास्यानां ॥ ॥ॐ नेमः यत्र कवर्धः महाविलः खर्जपागहस्तं च नाक्र
साय नमः स्तुत॥ ॥ थत वायुव्यसवायुदेवता पूजा ॥ ॥ आकर्षत पाशादिस्वा

नवाया॥ ॥ उं वायुदेवताय नमस्वाहा॥ उं स्यामवर्धय नमस्वाहा॥ उं गदाचक्र ध
रुधराय नमस्वाहा॥ उं मृगावाहनाय नमस्वाहा॥ वरुणपूष्यप्रतिक स्वाहा॥ ॥
थनपूजायास्तु॥ ॥ उं वायुव्यासामवर्धय महाविलो गदाचक्र धरु हस्तं चः वा
युदेवतमस्तु॥ ॥ थन० गानसमहं वनदेवतापूजा॥ आकर्षत पायादिपूष्यन्याग
स्वानवाया॥ ॥ उं महेश्वराय नमस्वाहा॥ उं (श्वरवर्धय नमस्वाहा॥ उं दसनृशिगुन
धराय नमस्वाहा॥ थसावाहनाय नमस्वाहा॥ वरुणपूष्यप्रतिक स्वाहा॥ ॥ थनपूजा
यास्तु॥ ॥ उं महेश्वराय (श्वरवर्धय महाविलोः दसनृशिगुल हस्तं चः महेश्व
रतमस्तु॥ ॥ थनसमयमतः धनाः यधर्माः ०० गिला कलपूजाशुल॥ ॥

श्वर्गधनकाशस्वानकाय॥ ॥उं पञ्चसूखाय। सत्रविनं विलासतिनं॥ नसासिरु
गवननंः रुद्रंः ब्रह्मंः क्रीडाक्रीडाक्रीडापुनिकः कसूजलिनाथ॥ ॥थनपञ्चापहान
पूजाताड॥ ॥थनगुप्तनम्रालिगनसुडायाताडादनाडानाथ॥ ॥उपाध्वानपद
प्य॥ ॥उं आकाशपानविदत्वाः मृनादिनिधनपत्रं॥ महावज्रमयसत्त्वः मृ
नादिनिधनपत्रंः महावज्रसमयसत्त्वमृषासः वजादगिरिसिद्धिमः सर्वतमाम
रुसिद्धिमहर्ष्यादिदेवताः सर्ववशाधनावाधिः सिद्धिमपत्रमाप्यच॥ निदावासा
सश्वापिः सञ्चनागानूनागथः तन्नातसिद्धिमः रुगवननमरुनागमरुजगत्॥
मृष्यक्तसूक्ष्मधर्मायः आदिसूक्तिरथागतः सप्तमरुन्दाः सर्वात्मावाधिसत्त्वप

सिधमः सर्वरुमहंसिद्धिः महव्याडसमूह्याः सिद्धिवज्रमहाकार्याः वज्रग
रुपेणममः सर्वसत्त्वमनाव्यापिः सर्वसत्त्वहृदिस्त्रितः सर्वसत्त्वपिनाचेमायः सम
यागितिः यनसत्त्वतसहानः पहापायाममधुलः ननसत्त्वनमानार्थः कामासाप
त्रिपुत्रय ॥ ॥ यनकिवननका ॥ क्रसकनकन्या ॥ ॥ ॐ प्रनिवृत्तमाधर्माः श्रुता
सूर्याहिनाविनाः श्रुता श्रुतकयाचः हृदकर्मसमूहवः ॥ ॥ तथातत्त्वनिर्या
ता ॥ ॐ निसत्त्वतमधुलप्रतिविंत्वरुगसिध्याः सर्वपदधतुकर्मरया ॥ ॐ निस्यथ
स ॥ ॥ यनदवताकनाडा ॥ ॥ श्रुतार्थनस्यया ॥ ॥ ॐ निस्रुतार्थपवसविधि ॥
यनचकसविद्याय ॥ ॥ क्रमापनयाय ॥ यनलिः सिधुनमाहनिसाधनयाय ॥ ॥

हिसमाधिजापधूपनिराजनः पाशादिपुष्पन्यागी ॥ थनमंगः क्रमापनः विगजन
थनदेवगायानागतस्यः गन्तुमात्रास्यनकिचक ॥ ॥ उपाध्याः चचापाः कल्याणलि
सूत्रिनथुतिधूनकाशः धर्मसिनासदकाकिचक ॥ धर्मधूनकाशः गन्तुमात्राचनसवि
श्रय ॥ ॥ थनतालहाय ॥ ॥ थनमंगहाल्य ॥ इकापिकायाय ॥ दनममंगडा ॥ थनन
दीपनय ॥ ॥ पचसुइकाप्यन ॥ जाप ॥ ॥ ॥ उं नमशीचकसम्भवा ॥ ३ ॥ रुस्रव
काशुखुः ग्रहनविसर्गं हनं ॥ कानकामः नगगः शास्यदिचकवातः पकिनप
निचकः तासकाकासजसः मरुशाचकविन्दवनसजिनसत्रिः सागनतासूनवा
हकाइक्रमपाशः नरुवनुरुवरुः शीचकनाथस्वनस्यः अपिचजासंसाजसाचकं

विनचयमिदं: सति जागमहि मासाधु: अस्य प्रगदा: दिसि तनि जरु वं: स्वामि
नतिष्पपंच: तचपचासद्य: ससुदयमिस्सकल्याना जालसूकं: कुर्यान्तस्वाधि पत्र
मित्रसिवितयनं: गतगसर्व कारंशुपि च॥ अस्या च रुजका काठिका सततपसरु
निष्पं: प्रष्पकमनिहि: सप्पारुवकु: शीपत्रमनस्पञ्जरी॥ ॥ **॥ धन: नमस्वाज**
काय॥ ॥ लचनागी क धर्मादया॥ ॥ धनश्रु क विय॥ धनदवातिदव: गजना
जस्य न विय॥ पाद सह॥ कमा कथन विय॥ गीत ई ई द रु॥ धनलि ह्याय धून का
अ: इत रुय त विषो: कि वन: न त्रयाचिन॥ सा इ इ: श्रु रु: इ वी कु शु: पत्र गार्व
कनस: गरुव: रु रु स का उ प्रिष: मूध व न: श्व क नान ला च वा अ: पि ह न डी य: कि

वियाडादिक॥ ॥थनधनमूनिनंकिलगियासगुलथित्रक॥ ॥पानकसगुल॥थ
नगाशुयाय॥विगजन॥थनपचगव्यविया॥ ॥उं सर्वरथमगानूरुनवाध्मलंका
वज्रपूजामघसमद्रलनसमयहं॥ ॥थनवजनथिया॥ ॥उं वजनद्रइ॥ ॥ॐ
महलिया॥ ॥नलयाचिद्रविया॥थरुसद्रसकनरयाडा॥द्रसकनसवायचिषो
कय॥ ॥उं महामध्वनमः वक्र॥ ॥उं श्रीमहामध्वनम॥ धनू॥उं नगावाधि
पायनमः शिवूत॥ ॥उं नंश्रूपत्रवजायनमः॥ ॥प्यकवाक॥उं आउरुनरु
वनायनमः॥ प्रनाक॥उं याउपधिपायनमः॥ मुनिगाला॥उं लाउपदीपा
यनमः॥ वज्र॥उं आउपदीपायनमः॥ कलस॥उं यंगजनत्रायनमः॥ कि

सि॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ मि॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ स॥ ॥ॐ वसु
नत्वाय नमः॥ मि॥ ॥ॐ याचक नत्वाय नमः॥ व॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः
खनग॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ कल॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ नत्वा
ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ वन्द॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ सूर्य॥ ॥ॐ व॥ सत्त्वगुण
वत्तम॥ द्वाक्षलस्थान॥ गुरुया नत्वाय नमः॥ थन नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ सहा
दानकाय॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ शी गुरुवत्तम॥ पक्षपाथाय नमः॥ पाक्षपाथाय नमः॥
धृष्टिनिष्ठ॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥
ॐ व॥ उ॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥ ॥ॐ नमः पूज्य नत्वाय नमः॥

सद्यासमद्रुलनसमयई॥ ॥थनअपुनय॥ ॥उंचकवधपमाशनई॥
॥थनवजनथिय॥ ॥उंचजनकई॥ ॥थनकिवायमृष्टिकानयाय॥ ॥उंच
मई॥ ॥चसपालसवजनथिय॥ ॥उंचविलई॥ ॥किविय॥ ॥थनअपद
न॥ ॥उंचयमानककई॥ ॥इकवन्त॥ ॥थनदगानाखकन्य॥ ॥कस्तुली
सूत्रनथिया॥ ॥शगिष्यसःशमानूष्यःकश्युआसुगम॥ ॥महासूखनि॥
हताथहगनःकलपालयाचननकसनसःवदुनायायनिमिरितं॥थथिन्यग
सूत्रउथायसुआयाभकः॥ ॥थनपचाकगविय॥ ॥उंचसर्वजागचिरुसून्याद
यासिःसूत्रनसमयसिधिवरुयथासूखं॥ ॥शगिष्यसःथथिचमृष्टनसिद्धि

सुइविनकाशः समस्तज्ञागयाकथा॥ उत्पत्तिरुयिअः समस्तसिद्धिनायीअः॥ ॥
श्रुयत्वसर्वतथागनाधिस्त्रिभारुविषयसिः नचत्वद्वसर्वतथागनः पञ्चनरु
सु॥ मधुलप्रतिनाय॥ वनवदनचा॥ शुद्धातव्यमिति॥ ॥ शशिष्यसः थनिया
श्रुयापि निस्यः कपनि समस्ततथागनयापञ्चज्ञाननानाअ॥ वक्रमनष्यनः थस
मस्तज्ञागथायाखः थमधुलदर्शनसलाकश्रयाहुअन्यः थखझायमन्यअः थ
लिश्रुसाध्वश्रयमन्यअ॥ शुद्धावनकश्रयमालध्वकं॥ ॥ थनचिराचझाचय
॥ ॥ उयमानककनः मरुनत्रसुहृदः सुनाखावजसत्त्वयसत्त्वायसिद्धित्वः
मा॥ ॥ थनदमनूद्यरुवाजनथाय॥ गनूननिन्याय॥ ॥ गिनप्रविगाहु॥

धनपचप्रमानयावकन्य॥ ॥ॐ सर्वतथागतपूजाः प्रस्तातायः आत्मानिर्या
न्यामिः सर्वतथागतवज्रधिरित्वसां॥ ॥ **हनाथ** ॥ हग्नः समस्ततथागत
यामसविष्वाकः शिवजसत्त्वपत्रमयनपूजायायनिमित्तिनः क्रिसलिनमा
नदाहरण्यः थथिनमवजसत्त्वपत्रमयनस्यनः क्रिखनागः अधिस्तानयान्त्यं
प्रगान्नश्यमालधकः॥ ॥ॐ बुद्धावज्ञाप्रस्तायानां आत्मानिर्यान्यामि॥
सर्वतथागतः वज्रवेनाचताधिरित्वसां॥ ॥ **हनाथ** ॥ हग्नः पूर्वदिगसवि
ष्वाकः सहवेनाचततथागतपूजायायनिमित्तिनः क्रिसलिनमा
नदाहरण्यः थस्तथागतस्यनः क्रिपदिनायाहप्रगान्नश्यमानधकः शीग्नया

कविमनियानं॥ ॥ॐ सर्वतथागतहृष्यकायाः आत्माननिर्याकयामिः सर्वत
थागतवज्रनत्वमूरिषिचत्वमां॥ ॥ **हताथहगत्रः** दक्षिणदिग्भसविष्णुक
कः नत्वसंरुवतथागतपूजायायनिमिर्हितः जिस्त्रिलमाजुनदाहन
प्यः जितशुलसाः ध्वज्रनत्वसंरुवतगतस्यनः मूरिषकनाचकां पगत्रशयमान
॥ ॥ॐ सर्वतथागतपूजापुष्कानायाः आत्माननिर्याकयामिः सर्वतथागतः व
ज्रधर्मपुवरुयमां॥ ॥ **हताथहगत्रः** पश्चिमदिग्भसविष्णुककः मूर्तिगारु
तथागतपूजायायनिमिर्हितः जिग्गीलमाजुनदाहनप्य॥ ध्वज्रमूर्तिगारु
तथागतस्यनः समस्तधर्मकर्मनाचकांः पगत्रशयमालधकां॥ ॥ॐ स

वृत्तथागतपूजाकर्मानः आत्मानिर्गन्तव्यमिः सर्वतथागतः वरु कृन्नुष्यमां ॥ ॥

हनाथहगन्त उरुनदिगसविष्ठा कम्पः असाचसिद्धिगतथागतपूजायायनिमिर्हितं
जिगात्रिलसाहनदोहनप्यः थथित्यन्नक्रमाचसिद्धिगतथागतस्यनः सकर्मात्रा
चकः पगन्त्रशयमालधकं ॥ ॥ ॐ गतगन्तुचलः (तः) प्रकृतायाः आत्माननिर्गन्त
तयामिः सकलसन्धयप्रितानाथः आत्माननिर्गन्तव्यमिः ॥ **हनाथहगन्त**
गथित्यन्नकलपालधालसाः समस्तदेवतायाः देवक्रः समस्तगन्तुयासिनगन्तु
थथित्यन्नकलपालयापाइकासः जिनममस्मानः थथित्यन्नकलपालस्यनः स
दृष्टियादः पगन्त्रशयमालधकं ॥ ॥ ॐ अथत्यसर्वतथागतः कूलप्रदितः सुद

हस्ततः वज्रस्तम्भपादायः शिखरान्नतसिद्धिप्रदायकः किम्पान्यासिद्धिचत्तजिनं
ॐ हस्तमधुलः पुत्रगानवकव्यः मातृसमयव्यथ ॥ ॥ **हृगिष्यः** धनियोन्मयापिनिस्त
कपनिसमस्तं तथागतयाकुलसदृशः श्रीशकपनिशुन्यगानजामनयुः वज्रस्तम्भया
परावतनः समस्तं तथागतयासिद्धिनायिकाः बालसकिमिसमस्तस्यनः **धमधुलद**
गमिलाकमयाकुशान्यः खड्गायमन्युः कृतसाकपनिसयासनिलसव्यथादयिडा
॥ ॥ **धनमालसवजनधिया** ॥ ॥ अथयनसमज्ञावज्रः शुद्धानकानयिष्यतिः दयि
त्वमसिमकाश्चिककश्चिव्यामिमकून् ॥ ॥ **हृगिष्यः** धमहाज्ञागंगकथायाष
वसस्तयाकुशान्यकृतसाः धवजनचसपालकास्यः वज्रमालककृशथः सियकृश

धनयानिमिरित्तंः धनमहागफयायमालः धनयानमालः कपनिसमस्तस्यनं॥
सिद्धिनाथिगधकं॥ ॥ धननगत्रसवजनथियः॥ ॥ सर्वसत्वस्यनंः हृदयस
मयस्किंतः निरुयत क्रयागः यदियावुयासिदकृत्॥ ॥ शशिष्यसः धनियाश्रयापि
निस्यंः कपनिसया हृदयसः धनपत्रमधनवज्रसत्वस्यनंः समस्तदानकापनाया
अविद्याकः वषुते कपनिस्यनंः हकिहितार्थया रुडान्तः शानसाः धनवज्रसत्वप
त्रमधनस्यनंः कपनिसयानुगलचक्रास्यपिहानविद्यायुडः धनयानिमिरित्तं
धनमधुलयाखमहागफयायमालः ॥ ॥ धनपचास्तनवियः॥ ॥ ॐ नमो नारायण
वालि॥ समयाकि कमादहं॥ समयसचनसिद्धिपिवावजान्तमादकां॥ ॥

शुभिष्पत्तः धनिरूपनिस्तुवियाडा तथा पदार्थः गतिन्यवधालसाः नत्रवनिस्त
सुदयल्लखः ध्यायप्रकाशियायसमंताः प्रकाश्यातसाः नत्रकसपदरपिडाः प्रः
कासमयातसाः श्रुस्तसिद्धिनायिडा ॥ **॥ धनलंखमानका ॥** ॥ उं वजास्तभादक
००० इं ॥ ॥ उं मृग्यरुतिवाह्यानिः वज्रपातिपदरुं ॥ वृयासिमदकूतः तत्तत्त्व
याहमसम्यासातपिरवसापलिहात्र ॥ काजक्रयास्तत्वातत्रकपतस्यात ॥ ॥
शुभिष्पत्तः धनित्याश्रयापिनित्यः शाग्नवज्रसत्त्वतुत्रयसालः धक्रग्न
यावचनतन्मदमन्त्राः धडाश्रुतिषेककायाक्रग्नरुयातः कष्टवियसम्पडा ॥
कष्टवित्रसाः धक्रमन्त्रानत्रसडानिडा शाग्न्यातनिडायातसाः नत्रकवास्तमा

ॐ ॥ ध्वजगुरुशगतनापनातः कृतसंस्कारयायमाला ॥ ॥ ॐ निसमश्रीदकविधि
॥ ॥ धनधूपदानविय ॥ ॥ ॐ ॐ न्यनातनमाकालशः श्रुतिगुरुगिष्याद ॥ सर्व
तथागतवाधिविनः वज्रसत्त्वश्रावणाय ॥ ॥ धनन्यासयाय ॥ ॥ ॐ हृदिलईं नि
वईं ॥ धकयईं ॥ श्रापादयईं ॥ ॥ धनधूपधन्यगीतनमईं का ॥ ॥ ॐ श्रावसय
त्वरयनवात्रयईं ॥ हृश्राद ॥ श्रावईं वज्राईं ईं श्रादम ॥ श्राववातिष्ठकाध्यागय
ईं ॥ श्राहृकायविशहृविश्रावायधिसहस्राह ॥ ॥ धनमतकन्य ॥ ॥ चक्रय
किहस्यस्यरावगिष्यति ॥ हनः गीतः पितः नक्तः हितः रुषः ॥ ॥ शगिष्यस ॥
श्राश्रुलसाः वगलिकपनिहृदयसः सश्रान्तन्यश्रुलः श्रगृखज्ञाममाला ॥

श्वतलिमधुलगावनायाचक॥ ॥ ॐ ह्यमधुलः सम्पकर्मथागिष्यप्रवर्गितः यथायु
धमिर्थास्वाउदवगानांकूलकर्म॥ ॥ **रुगिष्यचः** थथिंदसुक्रुसहितकंडकाया
आः पुष्पयासार्गस इकवियाआः दवनादकयाकूलसः उत्तरिण्यानाडीः थधधकंशी
गुनरुलसांः आसादयकलं॥ ॥ **गानिसगिद्धि** रुवदरुः (गानसिंचरुगनाया
दकंपुष्पानुरावतः तासादसाकूनसुतः॥ ॥ **रुगिष्यसः** वगसिद्धियारुलरुल॥
वगपुष्पयारुलरुल॥ आगमधुलगावनायाचक॥ ॥ थनपुष्पपातनकुचक॥
उंतिष्टवजुरुवदधमरुवसाः वतास्यरुवः हिदयश्रुविष्टितसर्वसिद्धिसप्रय
क॥ इहहहहहहह आखवलि कसुजलिनाथं वज्रपुष्पं प्रतिकरु॥ प्रतिकरु

मिमहावत्रिः पुष्पपातया नयाः श्रुतत्रयनपचतथागतया कुलसि य॥

ॐ निपुष्पपातया विधिः शुल॥ ॥ उं वज्रसत्त्वस्य रुद्रचक्र॥ उद्यातत्यत्र उद्यात
यति॥ सर्वेषां वज्रसत्त्वत्रनरुल॥ ॥ शशिष्यसः थ म्रवज्रसत्त्वपत्रम्यत्रः थ

मथ्यथमतविद्यानाडः कृपति समस्तया पापचक्राः कावायाडः पुष्पयाचक्र
न॥ ॥ थतवज्रनथियमृधपडलिकाय॥ दवलिकाय॥ ॥ उं हानवक्रुष्यमृस्याह

॥ ॥ उं वक्रसमकचक्रविश्वधयस्त्राह॥ ॥ थतमधुलदुर्गनयाचक्र॥ ॥ उं ॐ द
मधुलपगधुद्वं व (मनशुपति॥ लवक्रकृत्रज्ञानामृद्रामेजी॥ ॥ शशिष्यसः थ

मधुलदुर्गनयाकडासः समस्त रुकिशयमाल॥ थनलिः शुद्धावन्तशयमाल॥

आशुबुद्ध्याकूलसज्जनशयमालः मृदान्मवहितयात॥ ॥ सर्वदासर्वसि
द्धिनाशमया। गुरुविष्यसि॥ वज्रपदमायत्रिजं मनुपात्राधनकुत्र॥ ॥
सिष्यसः आशुसमस्तसिद्धिनाशसमयसत्यहानसत्ययाप्रलावनः कपनित्त
महाउत्तमशूल। उपायताः प्रहताः धर्मगन्तव्यास्तत्त्वस्ययमकुस॥ आशुहितयायइ
ति॥ ॥ ॐ वज्रमधुलं महामधुलं प्रविनाई॥ जागमधुलं महामधुलं दर्शिताई
॥ ॥ हताथः हगुरुः कलपालया मृत्युहने॥ ध्वजमधुलसः इवियाः ध्वजागमं
शुलदर्शनयाताताः धर्महागुधमधुलसः श्रीरिष्यकवाना॥ ॥ धनमधुलया
वकत्य॥ ॥ ॥ ॐ नमोचक्रसम्बन्धाय॥ ॥ प्रत्यक्षमधुलः गुरुबुद्धाना॥

कायमुकम॥ ॥ **हृषिष्य** कपतिस्वनश्लसांः श्वसुलस्वयाडादर्भनया इत्यः श्व
सुलश्लसांः महागुक्कश्याडाचानः हनकथागकयामहउत्तगनिमुक्कियाताडा
चानः थथिन्यग्वसुलश्लसांः रुक्मिपूर्वकननाहकडाश्लपाडाः नमस्वानयाडा॥
॥ ॥ उं वज्रसुलं महासुलं प्रविभाइं॥ आगसुलं महासुलदर्शिकाइं॥
गच्छसुलमहासुलउसिकाइं॥ ॥ श्ववज्रसुलधयः समस्तथापनायाना
अकयाः श्वपचगालिसमस्तः आगसुलधय॥ हिमनिवलकलसनउयकाडा
या॥ श्वगुक्कसुलमहासुलयाखरुइत्य॥ ॥ **पूर्वदिगगा** गाः वन्द्रागस्यासः
न॥ नदिनित्रकुशवानूववासिका॥ ॥ हवत्सः क्रिगश्लसांः अधिवासनदन

काऽः कृपनिस्तुवान् कापालविस्फुरयाः वरुणमवनामपूनाः किञ्च कृगोनिना
थुकाऽः जवाकधयानदियारुसलः आश्रमयानाऽः कृपनिस्तुवियाऽः ॥ ॐ
रुगनयासयिः रुगपवान् हस हसाः कायश्रुनयामानवशत्वाशयमित्वा ॥ ॐ
शगिष्यसः ध्वलसः सकिपूननसकाऽः मृनकाजतडापदनाऽः श्रुनदिताखः
ताऽः सनानयानाऽः ध्वलसः ध्वलसः तुलखनाऽः कृपनिगानाऽः न्यधकैः रु
द्रनपाऽः उकुडलाऽः रुडा ॥ ॥ रुगश्रुपिथस्तित्वाः सिद्धिगानसूखाश्वनः
रुत्वाकमनपूर्वपिथगान्द्रा ॥ पूर्वपिचन्द्रागपिथित्वाः सूखाकसिद्धागान ॥
॥ ॥ शगिष्यसः व्यागृष्टिपिथसूचासः सिद्धागानयासूगानयनाऽः कथनः

पूर्वयापिथसकपानिथनं॥ कथमथवलसः पूर्वसवानमममसिध्वननापना
नं॥ धवलसः कपानिसयाकृशान्यननं॥ ॥ **कथत्यसानवः** किमर्थं ०० हआरा
कन॥ ॥ **गशिष्यसः** हसानवः हसानुष्यः कपानिसमसंः कूयाकात्रनसथन
अयाधकंः थथिवमनूष्ययाग्नचवनमइथायसः सनूष्ययाग्नगम्ययाथायसः क
यशयाधकंः थमसिद्धाग्निराननइने॥ ॥ **नराशयवादनि**॥ ॥ **धनलिशिष्य**
नक्षलं॥ **गशि** द्वधनजिपानिससक्तं स्यतंः शुक्रादुसिबर्कदनाडाजिपानिडा
याः कलपालयासिष्यजिपानिमपूनाधकंः थपानिससक्तं स्यतंः थमसिद्धाग्निरा
या कान्यविमनियोकं॥ **गशि** द्वधनजिपानिस्यवजात्रनथनशयानपूः शच

कसंवनयादग्नियायनिमिर्हितथूकाः क्रियन्तिथनञाया॥ ॥ सिद्धधनउवाच
॥ साधूरमानवशर्यमाकंपुरावत॥ ०० ह आगतकेनः पूर्ववर्द्धनिमागकृति॥
हाशिष्यस्तः कपनिसप्तसक्तस्य नः थथ्वथाडुनुः थप्रसिद्धधननआह्लादयका
अविश्नात॥ साधूरनडाधन्यपून्यापरावनथूकाः अयागायाधकइनवीताजायने
शुक्राष्टमिश्रकदनडाशलसाः श्रवस्यनदग्नियाध्यधकं॥ थपूर्वमाननइनि
धकं॥ त्रकेनाडीछोकं॥ ॥ तदाश्रय० तिवचनश्रुत्याः पूर्वमाग्रानमागतं॥
हाशिष्यस्तः तदाथवलस्तः श्रयकपनिसप्तसक्तस्य नः थसिद्धाज्ञागिनियावचशनना
अः पूर्वयादानकपनिशलः धनलिः छात्रालिशनः वजाशलनः पद्माशलिनः

तथा धन्यव रुदनाशया मरुतः कः धनशयमइधकाशः धनकाशातिनः पत्रा
शालिनः वशाशालिनः ननयाशका न॥ ॥ कुरु हस्तिनाः काकाननादवि स
मखिन॥ काकाननादवि वृवाना किंमर्थ आगच्छ धमानश॥ ॥ **शशिपुत्र॥**
धनलिः चरुनक्षपुत्रपुनश्रुतिश्रुतनरुद्रनपाशशुशयलसः नगधपूर्वइउम
नसचाननः धकाकासादवि कपनिस्यतनापगनुरुतः धकाकासादेवि न
कपनिकंदन॥ हमावनहमानुष्यः कपनिकूधकधनशयाधकः धकाकासा
देवि न कपनिसमस्तयाकंदनिशः॥ ॥ **महाशयसमनागलिः** वदयववाह
शचक्रसंखलदग्नियायः पर्युपागनायः आगच्छः शदेविपचनथागर्गषुः श्रुत

माननिर्याः कृत्यगनावयं ॥ ॥ शशिष्यस्तः थकाकास्यादविनः थथ्वधाडाडु नू
श्य ॥ ॥ रूपनिस्यनेरुगाजलिना हातडाजेलपाडाः नमस्मानयाडाः थमकाका
स्यादवियाऊडान्यः थथ्वप्रार्थनायामं ॥ हाकाकास्यादविः शिपनिमनाकावराथ
तडायामधुः थमपनम थनगीवकसंम्वनयादठनियायः नमस्मानयायः तिअ
यायः पूशायामधकं शिपनिथनडायामधकं हनंपूर्वइआनयापनिवालः थमपन
म्वनः काकास्यादवियारखालरुकाः कखयाथ्वः मरुकाट्टिथ्व ॥ थमपनम
थ्वनतमकायकं संडान्यसइः हनंदकितयाइआलयापनिवानः थमपनम्व
वः उजकास्यादवियारखानरुकाः ००मायाथ्वः मरुकामान्पयाथ्व ॥ थमपनम

वचनसंकायकं॥ सशान्तमइ॥ ॥ **हृत्पश्चिमइआजयापनिवालः** ॥ अक्षप
रम्यवचः॥ स्वानास्यादवियाखालशकाः॥ विवायाथः॥ अक्षवमानुष्याथ
अक्षपत्रमवचनसंकायकः॥ सशान्तमइधकं॥ ॥ **हृत्उरुनइआजयाप**
निवाल॥ अक्षपत्रम्यवचुकास्यादवियाखालशकाधनयाथः॥ अक्षकसा
नूष्याथः॥ अक्षपत्रमवचनसंकायकः॥ सशान्तमइधकं॥ ॥ **हृत्पुवइआ**
जयापनीवालः ॥ अक्षपत्रम्यवचः॥ काकास्यादविनः॥ थथआसदयकलः॥ साधूर
धन्यरधकं॥ श्रीचक्रसंनयनयादगनियायूथकाधकः॥ अक्षपुवइआजनकास्यहनं
॥ ॐ ॥ **नउयंकेजकिशादविसमृखितः** शयवदित॥ ॥ **अगिष्यसः** शयक

पनिस्पतः श्वश्रुदलसविश्वकर्मः जाकिधादविखनतुनः नमस्त्वानयातं ॥

॥ ॐ ॥ नमो जाकिधादविववादेः आगकः श्रीरिष्यक ॐ हंगगाः ॐ मूत्वाचकु
पार्कषुः श्रुमन्तरादपुः पचामन्तकुगवजामन्तदकः गृह्णित्वा ॐ देवशोमन्तान्
पिडाः ॐ किरुनित्तदमि ॥ ॥ लागिष्यसः श्वदाकिधादविनक्तपनिक्तान्
थथधालः कामानवः कृपतिमवनाधकः थनअलमपुः श्रीरिष्यकजायधकः ॐ
क्यानाअलथकाः अथा २ धकं इतवानाअयनं ॥ थचकुपान्तचानः थगवस्तु
कथकागरायायगधकः श्वश्रुजाकिधादविनः आहादयकल ॥ ॥ नमो ॐ
लमधमहानिलः ॐ नदनसमप्ररः नकवर्मिरुदविः पत्रयागिशासम

परं॥ ॥ राशिष्यसः थथिं ह ग म हा म तु ल या म स विष्ठा क कः ॥ चक्र सं
स्वल पत्र म्य श्वनः सा कान्ति न्द निल थः महा ग्राह ल्य मान नं विष्ठा कः ॥ थ म्य
न म्य श्वनः ॥ चक्र सं स्वन पत्र म्य श्वल न शल साः क पति स म रु स्य न न म स्या ल
पाञ्च ध कः ह न थ क पत्र म्य श्वन गा थि स्य द ध न विष्ठा क धाल साः च उ मू र्व धा य
प पा त र चाल न पाञ्च विष्ठा क कः ह नं द्वा द ग्गा र्ज साः ॥ मि म नि का ना हा क ध न न पाञ्च
विष्ठा क कः ह नं र्ज आ पा उ ति त ल य न काञ्च विष्ठा क कः ॥ म हा रु न व म हा रु य क ल
मूर्ति ध न न पाञ्च विष्ठा क कः ॥ ॥ उं द व्या लि ग ना व र्ज व र्ज घ र्ज ध लः ॥ ॥ थ
न लि का ग्ना हा ति नः व र्ज घ र्ज म्हा या हं विष्ठा क कः ॥ थ व र्ज घ र्ज कू या का न न शी त

अविद्यात धालसाः श्ववर्गघं १४ था नाग यनः निपुधा यागीकु ह अयाय कावननस ॥
श्ववर्गघं १४ ज्ञाना अविद्यातः द्वितियरु ज्ञास्याः गज चर्मा धनः हनं नि कागू ना हा निते
कि सिया रू गलि ज्ञाना अविद्याकः रु नितियरु ज्ञास्याः स्व काना हा नितेः दम नृ एव त्याग
धन ल पाग विद्याक ॥ ५ ॥ वरुथरु ज्ञास्याः पन गु पाग धनः हन प्य कागू ना हा नितेः प
न पाग ज्ञाना अविद्याक मः पंचमरु ज्ञास्याः कर्त्तिक पा न धलाः हन छा कागू ना हा नि
तेः कर्त्तिक पा न धल न अविद्याक मः हन वरु मरु ज्ञास्याः शिगु न वरु मूल धनः ह
न पू कागू ना हा नितेः शिगु न अविद्या या मा गु धन ल पाग विद्याक म ॥ हन छा द ग रु
ज्ञास्याः तिम निका ना हा नन धन न पाग विद्याक मः अथि रु म पन म्य धनः शिव रु सं





344

संभववज्रवाहाहिनरुलसाः कृपनिस्वनदग्नित्याहन्य॥ ॥ गनदनुदनवा ॥
अष्टदलकमलः अकिन्यादिचतुदविः विदिक्कगत्यादिचतुका ॥ पचतुपाक
॥ ॥ ध्रुक्चतुपाकधलसाः अग्निसवजकनामकः नेष्टसतसमयकनाम
क॥ वायुवसविस्मयकनामक॥ ०० गानसः समयविस्मयकनामक॥ ॥ धन
कनामकसकापचामकः कावपानासध्यानः रुसा॥ ध्रुक्चतुपाकसः संपूर्णाना
अचान॥ ॥ गगिषासः हनदहन्यः ध्रुक्चतुपाकसविष्णुककः ध्रुक्चतुपाक
वाः धनानेनामादविः त्वशुनाहादविः नृपिमादविः हनधयालिशः आदिगतः च
तुवर्ग॥ ॥ पूर्वतनुमस्तुतुः दक्षितपित्तसंपूनः नाहिनपत्रिमस्तुतुगः स

गननवाजनादिक॥ ॥ **राशिप्यसः** हनपूर्वदिगसः दानसः (यनवर्धः दक्षिणदि
गसः ५ दालसपिकवर्धः ॥ पश्चिमदिगा दानसनकवर्धः ३ रुचया दानसः स्यामव
र्धः मृगन्यादिचतुका ॥ ५ ॥ जमजकि मादविः स्वतपिन मायूवानः मासुवाना ॥ जम
इतिदवि ॥ वकस्यामः आउवाना ॥ आउवानपिनः ॥ ॥ जमइमिदवाः स्यामस्वनाका
यूवाना ॥ ॥ आउवाना ॥ ॥ **धन** दंद रुपामनाहना ॥ रुद्र २ देवनायानिमावर्धः
यास्यविश्वक ॥ ॥ पंचनखासमाकितः पंचवृद्धस्वरूपकाः रुद्रस्यामनथाः वक्राप
नस्स्वरितं ॥ ॥ **हन** धनपिनग धालसाः पंचनथागतयाः मृजमनाश चानग
मृजासः मृमाद्यसिद्धिः मृमितारुः नत्वसंरुवः वेनावनः धयचनथागयास्वर

X

वः पचयन्नुधाय ॥ हनध्यापित्यदवगापउ ॥ खादगगागिनिधाय ॥ ॐ
कृकृधलसाः विनाधाय विनथानाञ्चानः हनवस्यधाय कृधलसाः वसपयाञ्चो
नः मृदगधाय कृधनसाः विनथानाञ्चानः हनमूर्जधाय कृधलसाः सित्रगथाना
ञ्चानः नास्याधाय कृधनसाः नास्याकयाञ्चान ॥ हनमालाधाय कृधलसाः स्वानमाला
ज्ञानाञ्चान ॥ हनगीगाधाय कृधलसाः मृदनाञ्चानः हननिम्बधाय कृधलसाः प्यावनर
याञ्चान ॥ हनपूष्पधाय कृधलसाः स्वानयाकारिज्ञानाञ्चान ॥ हनधूपाधाय कृध
लसाः धूपदहनज्ञानाञ्चान ॥ हदीपाधाय कृधनसाः दीपदहनज्ञानाञ्चान ॥ हन
वहस्यधाय कृधनसाः सञ्जाकयाञ्चानः हनहसनधाय कृधनसाः क्रसकनखयाञ्चानः

वान॥ हनपस्य भय कृधा वसा॥ यथिविसाधियाञ्चान॥ ॥ **धर्मधर्मचक्रसंसदा**
धियाञ्चान॥ धवलपाञ्चान॥ धर्मसखादगं जानिगाननउलाञ्चान॥ यथिनगर
मथुलदर्शनियाइत्यधकः हनध्यायिनस्वस्थ्यागप्रमिकाशलासां पाकवावाग्न
यावस्थः महामयइश्याञ्चान॥ हनाधयविकिनिजालनसशकश्याञ्चान॥
हनाधहानधय॥ विकिनिजालअमहास्वरायमानश्याञ्चान॥ ॥ हनध्यायिद
वकुलिकर्मसिखवकुलितखमां॥ ॥ महास्वरायमानश्याञ्चान॥ कोसिमाल
यथित्यमथुलदर्शनियाइत्यधकः॥ ॥ चरुवतंचरुद्वानः चरुमाननसशक
चरुसुइसमाशकः॥ ॥ हनचरुवतधायः प्यकुवाताञ्चोद॥ चरुद्वानवनाञ्

वान॥ चतुपुवनसंशकशयाउवान॥ हनधचतुसुनमहाधेलायमानशयाउवा
न॥ चतुदिगसयापूरथासनदुयाउवान॥ महाधेलायमानशयाउवान॥ हनश्रु
कलसनउलाउवानः चतुदिगसदिव्यप्रसादनयान्तउवान॥ ध्वश्रुमगलनउ
लाउमहाधेलायमानशयाउवान॥ ॥ उचतुपात्यधमचक्रपराहिन॥ ॥ हन
दीगमः धर्मचक्रमः संलगचक्रः महासुखचक्रः नितान्तिचक्रः ध्वस्वगचक्रसमहा
धेलायमानशयाउवान॥ ॥ पद्मपताविचिरादिः वज्रपावालयमदुलं॥ कालमा
लासहाकला॥ लाकपादिपावना॥ श्रुपिथचनयाच॥ नहंसपूरुमदुलं॥
हासिपसः चत्वालिपनालि॥ प्रियपतिः पद्मशालिनउलाउवान॥ हनवमाउ

लिनउलागवानः हनगालागलिनउलागवानः थथिन्यगसगुलदगनियाइत्य ॥
लागिष्यतः हननरुन्यः मृदलावापात्रायः कूरधलासा ॥ पूर्वसंयुद्वयवर्ष
दक्रि(शसः)गन्मशत्रुः निलवर्षः हनपात्रिमसवन्नस्ववर्षः हनउरुसः कु
वृत्तपिकवर्षः ॥ **॥ मृ(ग्नसमृतिद्वयः) ॥** ॥ हननेष्टुसः नाद्रसः वक्रव
र्षः ॥ **॥** हनवायुवसः वायुद्वयः सामवर्षः ॥ **॥** हन०००गानसः महवजः
वक्रवर्षः ॥ **॥** हनमृददिगधायः कूरधलासा ॥ **॥** कुक(धनदी) ॥ पू
सगधनदी ॥ **॥** हनवृद्धगधनदी ॥ **॥** य ॥ वनपनिनदी ॥ **॥** उ ॥ चन्द्रमगानदी
मृग(ग्न) ॥ **॥** नेत्रजनानदी ॥ **॥** ने ॥ नीत्रपार्वतिनदी ॥ **॥ वायु ॥** ॥ हसगनदी ॥

ॐ गान ॥ ॥ ह न मूढ नाग धाय कू र्धाल सा ॥ मून क नाग नाग प्रा पूर्व स विद्या
क म् ॥ वासु कि नाग नाग द क्रि न स विद्या क म् ॥ त र्क क नाग नाग प क्रि म स विद्या
क म् ॥ प म नाग नाग ॥ उ रु न स विद्या क म् ॥ स ह प म नाग नाग ॥ मू र्धन स विद्या क म्
ग र्व पा न नाग नाग ॥ ने म् म स विद्या क म् ॥ क र्क म नाग नाग ॥ वा य व स विद्या क
म ॥ क लि क नाग नाग ॥ ॐ गान स विद्या क ॥ ह न मूढ रु न या ना मः कू र्धाल सा ॥
मू सि ता ग रु न वः नू नू रु न वः च ल रु न वः आ ध रु न वः उ त्म रु न वः क पा न रु न वः
रि षा रु न वः ॥ ॥ ह न मू ग नि धाय कू र्धाल सा ॥ ॥ वृ षा य शीः नू डाय शीः कु मा
नि वि षु विः वा ना ही ॥ ॐ डाय शीः अ मू डाः मह ल शीः ध रु द वि या ना मः ॥ ॥ ह

नम्रुष्टमग्नयः ॥ ॥ कुरुक्षेत्रम् ॥ ॐ नमः ॥ ॥ यक्षग
मग्नयः इन्द्रियः ॥ ॥ कालाकूलसमग्नयः ॥ ॥ कनकसमग्नयः ॥ ॥ उरु
प्रसः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥ ॥
घानाधकसमग्नयः वायुव्यसः ॥ ॥ किलकिलसमग्नयः ॥ ॥ ॥
रुतनम्रुष्टसमग्नयः कुरुक्षेत्रम् ॥ ॥ गजितसमग्नयः ॥ ॥ पृथ्वीसमग्नयः ॥
दक्षिणः ॥ ॥ घनघानासमग्नयः ॥ ॥ पृथ्वीसमग्नयः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥
उरुप्रसः ॥ ॥ घनघानासमग्नयः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥ ॥ पृथ्वीसमग्नयः ॥ ॥ नम्रुष्टसमग्नयः ॥
॥ ॥ वर्षतानासमग्नयः ॥ ॥ वायुव्यसः ॥ ॥ चन्द्रतानासमग्नयः ॥ ॥ ॥

हनंश्रुष्टपर्वतधायकुक्कुधाय॥ विद्याचनधायपर्वत॥ श्रुष्टाचनपर्वत॥ इकु
न्दापर्वत॥ हस्तानयपर्वत॥ विष्णुतपर्वत॥ विद्याचनपर्वत॥ वपूकपर्वत॥ केली
गपर्वत॥ ॥ हनश्रुष्टवक्रधायकुक्कुधाय॥ ॥ इइवजवक्र॥ मानवक्र॥
पडुवक्र॥ मालवाल्यवक्र॥ ॥ श्रुष्टवक्र॥ चक्रविक्र॥ श्रुष्टधनामवक्र॥
पूष्पनामवक्र॥ ॥ हनंश्रुष्टसिधायधायकुक्कुधाय॥ **विष्णुपाकनामसिध**
धव॥ जाहिपानामसिधधव॥ ॥ दसनूपाकनामसिधधव॥ इइनामसिधधव॥
मिकनाधनामसिधधव॥ सकिन्दुनामसिधधव॥ पर्वनामसिधधव॥ सिधध
ननामसिधध॥ ॥ ॥ हनश्रुष्टयक्रधायकुक्कुधालसा॥ ॥ सिधसूखानाम

यक्रनागासिंघयास्वानथं॥ ४॥ व्याघ्रमुखानामयक्रनागा॥ ६॥ व्याघ्रयाथं
स्वान॥ ॥ गार्पमुखानामयक्रनागा॥ नागयाथंस्वान॥ ५॥ वसुमुखानामयक्र
नागा॥ सायाथंस्वान॥ ३॥ हस्तिमुखानामयक्रनागा॥ किसियाथंस्वान॥ मृ
सहिमुखानामयक्रनागा॥ स्पसयाथंस्वान॥ ने॥ मृवसुमुखानामयक्रनागा॥
सनयाथंस्वान॥ वा॥ खनमुखानामयक्रनागा॥ कृयाथंस्वान॥ ००॥ धथिं
पिनागाविष्का॥ ॥ तदनेवविविधकाकाउलकंगधंगरा॥ स्वान
गन्धकः सर्पसदकानय॥ तदत्यसिद्धिविद्याधनयद॥ यक्रनाकतः व्यनानदय
०००॥ सुसंतहास्मभानः सध्वराकव्या॥ ॥ रागिष्यसध्वयाकनमेवनामृतगड

कूकूधनसाः कलउनका॥ गधः धनः विचाः विः व्यानः ध्याकनः सवमाइः यत्र
लाकाः विद्याधनलाकाः सिध्दधनः गनः थथिन्यपिजात्रगनः व्यक्तगनः रक्तग
नः कडीः रवाकाः थथिन्यपिसमस्तगनउलाओचानः समगनयामध्द सइलसा॥
हृत्तनृधधेयधायः कूकूधलसाः॥ ॥ वज्रप्रणाममचेन्य॥ पूर्वसविश्याकक॥
सूकवर्ध॥ ॥ नकप्रणाममचेन्यः पितवर्ध॥ दक्षिणसविश्याकक॥ ॥ पश्चिमप्र
णाममचेन्य॥ नकवर्ध॥ पश्चिमसविश्याक॥ ॥ विश्वप्रणाममचेन्य॥ रुद्रिवर्ध॥
उरुनसविश्याक॥ ॥ विमलप्रणाममचेन्य॥ वधूतवर्ध॥ ॥ अग्निसविश्याकक
धर्मप्रणाममचेन्यः गोपीपितवर्ध॥ नेष्टनसविश्याकक॥ ॥ कनकप्रणाम

मधेभ्यःविश्ववर्षः। नानावर्षः॥ **वायुव्यसविश्ववर्षः॥** ॥ मनिप्रसन्नामचेन्म॥
यकूवर्षः॥ ॐ गानसविश्ववर्षः॥ ॥ हनज्जयवेष्टागधाय कू कू धालसा॥
मनिलिगधेनः। गा कर्ष्वव॥ कूरुध्वः। किध्वव॥ गरुध्वः। रुनिकध्ववः। गरुध्व
त्राविकमध्ववः। अथित्यपि वेत्तागनउलाअचान॥ ॥ शिष्यसः। धपूर्वॐ उरुल
सां। निलवर्षः। श्याअविश्ववर्षः॥ ॥ हनदक्षिनसज्जन्मदेवताः। हनिकवर्षः। श्या
अविश्ववर्षः॥ ॥ **हनपक्षिः। वनूनस्विकवर्षः। श्याअविश्ववर्षः॥** ॥ हनभूग्न
सम्प्राप्तिदेवताः। वकवर्षः। श्याअविश्ववर्षः॥ ॥ **हननेष्टसः। वाकसदेवताः। च**
कवर्षः। श्याअविश्ववर्षः॥ ॥ **हनवायुव्यसः। वायुदेवतास्यामवर्षः। श्याअविश्व**

[illegible]

आकध्वरा॥ वडुमुखधायप्यपातरच्चात्रधवलपाठाविश्याकम्॥ वडुमुखवडु
वक्रवेहावः वडुवक्रविशितम्॥ मेनिकावृक्षसूदिताः उष्यक्रामेताकथमिति
लावन॥ ॥ **शशिप्यसः** ध्वजगणसंसारक्रायायकावनः नाकहिनयायनिमिरि
न॥ ॥ **कचथरुत** ॥ ॥ समस्तलाकहिनयायनिमिरिनं॥ ॥ **सूदिता** कथरुत॥
समस्तलाकयातहर्षमानयायनिमिरिनं॥ ॥ **उष्यक्रा** कथरुत॥ ॥ समस्त
कयातकुमायायनिमिरिनः थथनवडुमुखध्वरात्रपाठाविश्याम॥ ॥ **शरावत**
कृष्णवर्ष॥ हाकृष्णावः आलितासनसंस्क्रितः॥ ॥ **ध्वजलसश्लसा** अडापाडु
नितलप्यनकाडाः पडापाडुनियनषूनाडाविश्याकम्॥ **सहारय** कलनूपधलन

पाठाविश्वकर्म ॥ कारिका निमोदिनं ॥ ॥ आलिकालिवंधनयानां वि
श्वकर्म ॥ हनथश्चपयमथवनश्चनसां आलिरानयानां विश्वकर्म ॥ ॥ वदि
यावलिरुविनं ॥ ॥ **वज्रघट्टधनं** ॥ ॥ श्वलिसूयानाहामिनं वघं १४ शानां म
यायां विश्वकर्म ॥ श्ववज्रघट्ट कूयाकाजनः कूयानिमिरुति शानां विश्वकर्म
सा ॥ श्ववज्रघट्ट यानां गदनः निपुधायगारुहवनश्चय कूयाकाजनसः श्ववज्रघट्ट
शानां विश्वकर्म ॥ ॥ इति यरुजाणां गजचमावनधनं ॥ ॥ हननिकागया
हामिनः किमिया कूयालि शानां विश्वकर्म ॥ ॥ मितियरुजाणां दसनृखत्वागध
नं ॥ ॥ हनस्यकागया हामिनः दसनृखत्वागधनलपाठा विश्वकर्म ॥ ॥ हनचरु

र्थरूजास्याः पनगुपागधनं ॥ **हृत्यकारनाहमिति** ॥ पनगुपासुशानाशवि
श्याक ॥ पंचसरूजास्याः कर्लिकवारधनं ॥ हृत्याकारनाहमितिः कर्लिक
पात्रजानाशविश्याकः ॥ षट्सरूजास्याः क्षिप्रवृक्षसूडाधनं ॥ हृत्युका
वाहमितिः क्षिप्रवृक्षसूडाधनं ॥ द्वादशरूजास्याः क्षिप्रनि
कारनाहमितिः धनलपाशविश्याकः ॥ कृष्णवर्णः वसुमखः नकः पितः धन्य
पात्ररत्नावधनपाशविश्याकः ॥ कृष्णधनः आकासयावर्णश्याशविश्याक
ः ॥ स्वामधनः ॥ अउरवानः नकधनः ॥ अउरवानः पितधनः ॥ अउरवानः
वः ॥ पितमखः रत्नपतिः ॥ अउरवानः धनलपाशविश्याकः ॥

वज्रमालात्रकृतं ॥ कथनमालात्रकृतं ॥ ॥ **धनलिः** कपालसुशुलसाः वज्रमात्रा
काशनमालाः धर्मधवलपाठाविश्याकम् ॥ ॥ स्वपत्रः श्रुद्धवदध्वनिनं ॥ वि
ववज्राकांतमोनिनं दन्ति (य) कामदन्ध्रत्रा ॥ ॥ श्रुद्धियाचन्द्रमाधवलपाठा
विश्याकम् ॥ विववज्रकामकृतयाचासविश्याकम् ॥ गडाद्व्यायाखावमस्तः २ नक्रिला
यविश्याकम् ॥ ॥ विष्णुगानननः दक्षकृत्तलिषनः गंगायादिवसावितं ॥ ॥ हनअक
एककननकयाठाविसहायकनमूर्हियान्यविश्याकम् ॥ गंगात्रयायगुनिमहान
सयानाठाविश्याकम् ॥ ॥ व्याधुवर्त्मानिधसुनः सुवाटतलसिन्त्रमात्रासुद्धध्वनिनं ॥
हनव्याधया ऊगलिनमूलिकालियाठः सनूष्याया ऊनमालानकाखायाठावि

आका॥ ॥ अवहगवताहगवत्त॥ श्रीचक्रसंस्वर आत्मानरावयत्त॥ ॥ थथित्यस्र
पत्रमंश्वरः एगवतिवज्रवाहाहिः नक्रवर्धः श्रीचक्रसंस्वरेयावर्धसकन्यधून
आशिवज्रवाहाहियानामकदुडा॥ थथित्यस्रवज्रवाहाहिः रुगवामिष्काडरवालः थक
सखरूपानरवायः द्विरुजासाः निवानाहातः डिन्युस्यकाडमिरवाः मकुनकं ग
हवानमकुनपूयाडाः धनलिस्सुनकयाडाविश्याकभ्रः नागनवसुसदयकाडा
विश्याक॥ ॥ खधुसदित्तसखलाः ऊरुलसाकूपतिनाडाविश्याकभ्र॥ ॥ दक्रिनक
र्जयन्तिः दिगासर्वान॥ ॥ हनऊडादखचानगवालायचिनकलय्यनकाडावि॥ व
ऊककिंजानाडाविश्याकभ्र॥ ॥ वासरुजालिगगाकपावधलं॥ ॥ खऊनाहकनक

पात्रज्ञानाञ्जविष्णुकाय॥ ॥ कपाग्निसहस्रं जायते विष्णुधित्तपिया॥ ॥ हनकव
त्पगालिनशूलसां मिच्छात्थं महाज्ञानयानाञ्ज॥ कवत्पथ्याञ्जुसिशूलसां
हिपिहानाञ्जत्थ॥ अउयाञ्जाना॥ ॥ अद्याद्यानमहातमापिनाः महासूषः कव
त्पसिकाञ्जुवत्पथ्याञ्जुगवामिनावयत्प॥ ॥ हनञ्जनिगालिनापयानकाञ्जः महासूष
नः समस्तसमावयनाञ्जः कवत्पयानाञ्जविष्णुका॥ थथित्यञ्जवञ्जानाहियाजनन
स्काययाञ्ज॥ थथित्यञ्जपनमञ्जवञ्जुद्वयत्पयानाञ्जविष्णुकाः थथित्यञ्जपनमञ्जव
दग्नितयानापूषनः ॥ इहलाकससूषसंपकिः पयलाकससूषकियानाञ्जः नञ्जयानाञ्ज

विश्वायमाला ॥ ॥ यतदक्रिमामयवाः थकिधूनकाः आसंखदिकया ॥ स्वाहवाय ॥
थनधनमृतय ॥ धनपूजकशायक ॥ गजसुलदनक ॥ बलियविय ॥ विशर्जनयाय ॥
थननिराजनः मकरमालवानः सगानकाय ॥ वियमजिअनि ॥ थनपचारिखकविय
थनवाहकशायकय ॥ ॥ उं वाधिवजनवृद्धानाः यथादृष्टंमसामरु ॥ मसापिमान
ताथयः खवजादिदंदाहिम ॥ ॥ हनाथहगुरुः पूजापूर्वकावसः शिवकृतत्वपरमः
ध्वस्यतः सावसिंहनखनः अन्यमागतः उत्पत्तिरुजः वज्राहिरवकविलं ॥ थथ्वजि
नविलकलपालस्यनः थगमूरिखकावकायगानरुयमाला ॥ कृयानिमिर्कितधा
यसा ॥ समस्तसत्त्वनकायायवाचनसा ॥ ॥ यतगयातकिजन ॥ ॥ उं विप्रान्करु

नदं॥ ॥थनसिष्याया मालसकवसकय॥ ॥बुद्धनामहिष्यकस्तु॥ इगतातायवकि
न॥ गताकनायथादत॥ नथादतधमस्यहि॥ ॥हनाथहगवुःथमवजसत्त्वयवस्य
नस्यनःश्रुनुरुवसम्यकंवाधियाहानउत्परियायसःगताकनसात्त्वसिंहस्यनःश्रु
तिरवकविला॥थथांजिनधगरदवाहिधकनाचकपगनरुयमालधवःविमनिया
न॥ कुर्याकधालसाःसमस्तसंसारनक्तनवप्यथाकः॥ ॥थनलंरहायक॥ ॥उं
त्मगलसकलसत्त्वहृदिस्तिरःसवांसकस्यःसर्वकुलाधियस्यःनिस्यधस्यःजनकस्यः
महापुषस्यःनत्सगलरुवनुरुःपनसाहिधका॥ ॥रुगिष्यसःथगुम्भिरवकधया
प्रदार्थःमगलपदार्थःसमस्तसत्त्वयाश्रुत्माश्रुयाश्रुवानगलिःसमस्तयाददयमना

नमः समस्त कलया अधिपति रुपाञ्जानामः अधिन्यगः अरिष क ध्याया प्रदार्थना
लनाञ्जानामः अधिन्यगः उरु कारिष क कृपनिस्तु विया ॥ ॥ यतनमकुतनपुयक ॥
ॐ ॐ दनं सर्ववृद्धत्वं शिवमाकां पुरुषनाय च ॥ मकुतवच कुना कवः सर्ववृजामधि न
हामकुत प्रनिस्तु स्वाहा ॥ ॥ हागिष्यसः अधमकुत समस्त नथागतया वृजामधि ॥
पचवृद्धस्वरूपः समस्त नथागतया स्पतनमस्कार्या दनयागः ॥ अधिन्यगः मकुतारिष
क कृपनिस्तु विया ॥ ॥ अधिमकुतारिष क ॥ ॥ समस्त नहानसत्त्वसहवतथागतस्य
नविया ॥ ॥ यतनपना कारिष क ॥ ॥ अडवानगपन ॥ यतनवजनथिया ॥ ॥ ॐ ॐ अडि
त ॥ ॥ हागिष्यसः अधपनावातारिष क शलसां पचनथागतया विशा न्व ॥

ॐ कालनवाधिविद्या क्रवः॥ ॥ ॐ इकाननविद्या क्रवः॥ ॥ ॐ अकानननत्वसंरुववि
द्या क्रवः॥ ॥ ॐ ड्रीकानननृममरुवविद्या क्रवः॥ ॥ ॐ खकानननृमाचसिद्धि
विद्या क्रवः॥ ॥ थूनिहाननस्यरावः॥ ॥ थनप्रहारिखककूपनिसुविद्या॥ ॥ ॐ
निपताकारिखक॥ ॥ थनवेज्जकारिखक॥ ॥ थनवज्जवित्तनय॥ ॥ ॐ मृयाकारिखक
त्वतसिबुद्धः वज्जकारिखक॥ ॐ दत्तं सर्वबुद्धत्वं मरुद्रवज्जससिद्धय॥ ॥ श्र
शिष्यगः थवज्जससक्तकथागतस्यनः धननपाशतयाविषय॥ पत्रत्तधयास्व
रूपः मृसयवज्जः सत्तानरुदयायुसज्जिः थथिन्पगवज्जकूपनिसुविद्या॥
ॐ निवज्जकारिखक॥ ॥ थनघ १४ विद्या॥ ॥ ॐ वज्जाधिपनित्वमसिबुद्धः वज्ज

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ **रुग्निष्वासाः धवजस्य ४ कथनित्यन धवलप्यमालधकः ध**
वज्रगधित्यग्वधवसाः प्रहापावमितासमस्तकथगकयासाताः थथित्यग्वधथारिखक
कथनित्यविषा ॥ ॥ ॐ तिष्ठ धरिखक ॥ थनना ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वः त्वमहिष्वासा
वज्रनामानरिष्यकः श्रीहवुकवज्रनामकथगकवस्वइ ॥ ॥ ॐ तिनामारिखक ॥ थ
नवजघा ४ वियाडातया ॥ मकननपूयक ॥ ॥ ॐ वज्राचार्यरिष्यकस्तुः दहिमश्चक्रपा
निधि ॥ स्वपनार्थसमर्थस्वार्थः कनाहन्ताप्रसादन ॥ ॥ रुग्निष्वासाः आचार्यरिष्यक
धायानाम ॥ धमपवम्यवरीनः वज्रसत्त्वस्य नः थमउत्पत्तिरावनानकपायान ॥
ॐ तिआचार्यरिखक ॥ ॥ थनावज्रविषयकया ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वत्रयध्वात्वा ॥ आनादि

निधनसत्त्वा॥ वरुसत्त्वमहाधनं॥ समनरुडसत्त्वात्माः वर्जगर्गपतिः पवनमायपुत्रुषी
रुगवनिनि॥ ॥ श्रीगिष्पश॥ श्ववजनउं कानउत्यरुि रुड॥ पवनरथागतयात्तुकि॥
मादिनं नूनुरुवमड॥ सहज्जकल्पमानयानाअचान॥ थथिंत्यगव रु हा रकपनिरु
विया॥ ॥ थनघं १० विया॥ ॥ उं घ १० श्रीनरु ध्वात्वा॥ ००० यसासर्ववृक्षानांः घ ध्वा
घात्वा सनरुगसुता॥ त्यायापिहि सदा ध्वात्वा॥ वाधिनं गजिने मता॥ स्वरावउद्धाहिरुवं
स्वरावे विरुक्तं॥ स्वरावसत्त्वः किंपयमारुव॥ ॥ श्रीगिष्पशः श्वघशवसांः सम
रुगथगतयाः हानहनुयाप्ररावनंः श्वरुयाकनंः थडी हानउद्धात्मा यानाअः घ
नलयाअचीन्यमाल॥ ॥ थनवरुघ १० रु नश्रीमालिगतयाचव॥ ॥ मूडासमयया

फं मनासु किदिट्त्वं नः सर्वसु किध्वय ननः ननसु डाप्रतिता ॥ **॥ रागिष्यः सन**
यसु डाध्वकः नाम आलिगनयानाशान्त्यगुलि ॥ धसु डावजसत्त्वस्यपकागयादय
त्रमहानविव ॥ **॥ ॐ तिहानसुडा ॥** ॥ उं सुप्रतिष्टवजं स्वाहा ॥ **॥ धनमृडगात्रः**
लिकायवजनधियाश ॥ ॥ धनमृलिगनयाचक ॥ ॥ प्राशिषास्वादुसमालिग्वः पद्म
वेत्तादगादिताः घल्लवजासमागाधः आचार्यस्यवनतपदा ॥ **॥ रागिष्यः स**
आलिगनयानाशान्त्यायाः स्वरुवराथधलसा ॥ क्रिसपूदयावेगयास्वरुवः मृहि
त्वकविल ॥ **॥ धनगापविय ॥** ॥ गयनसलुवन्या ॥ ॥ उं त्वशुनाहं हं रुद्र स्वाहा ॥
इष्टाहिमयारुगवनः प्रितनिहिनारुवः गृहिनासिमयारुगवनः प्रितनि

हिमो रुव ॥ ॥ रुग्गावन रुग्गाव ॥ थथित्यगसुडुथथयसः कलपालम्यनप्रगन
इयागमलिः वरुद्य ८८ याः उपायप्रक्षमा रुजिनसिवनप्यनिश्चयन ॥ जिकहिनाथ
महामनुद्वानयारव कनाउपगनइयमाल ॥ ॥ **थनकिमनय ॥** थनसिद्रमा रु
नितिवक ॥ मिषास अरुलनउलागवना ॥ न्यासुयाकावनन ॥ ॥ उं वरुते न
परुनपकवद्रि ॥ ॥ अरुहानपववत्सः श्रुपनिकदिवन ॥ सनाकालवेशवाद्रस्य ॥
यथालाकस्यनिसिव ॥ ॥ **रुगिष्यमः** अरुहानथाध्रयगथिदगः सित्वानम
खनथ ॥ पुन्ययासार्गसमखककडा ॥ थप्रकथागननश्रुमश्रुधकानसदयव
लं ॥ गथध्रलसाः वेशपनिस्यनः नारासुडयवाययाताथः निसापूर्थयासा

गमखनिडा॥ ॥ ^{श्रु}थुक्तिरुताहिरवका॥ थनप्राउरुसाविया॥ वअथून्यःवववि
कया॥ ॥ थनश्राकुरुविया॥ पाउविया॥ ॥ गडवीलमहायाकुसिज्ञानामनमः
दिनःवुअरुडीयःउकवरुपवरुका॥ ॥ ^{श्रु}गिष्यसाःवअरुलसाःअगीरुलसां
वेस्रइनसाःसुउइनसाःथकालिरुलसाःकोकालिरुलसां॥ थकआतकावयाउ
थपाउकायमाल॥ ॥ थननाहकवाअका॥ थनअसकनकान्य॥ ॥ प्रकिविंसुस
माधर्माःश्राआसूर्याहिरावियाःश्रुअहअनूकपावःहुरुकर्मसमुरुकव॥
रुगिष्यसाःहानधायःहुरुमाउ॥ हुरुधायकावेनमाउःगथधालसाःप्रकिवि
सुःअसकनसचानगकिपाथ॥ नाहानिनवियमजिडाःहनउ(ममषुःउइन

याउवाता॥ स्वयसः खनसप्रस्पृक् ॥ ॥ निदर्व्यनाहिष्यका॥ थनसत्रकपय
लालाउझाया॥ थस्वकाकास्वका॥ दगादिसासस्वयागव॥ कचाहिलक॥ ॥
ॐ सर्वरुथागनायानुरुनायागया॥ सर्वरुथागनानुनागायस्व॥ प्रहाधससुया
खाका॥ उपायगनंकस्पकाः सयसत्रविख्याताः विध्ववित्यनागने॥ ॥ शशिष्यस
थधनसधवलपाडीः दगादिगसंविश्याक॥ समसुकरुथासतापनिरुः नमस्वानया
नाउः समसुइष्टमालमनयनिनागकलधकः॥ ॥ थनवलझाय॥ थनऊना
सकुकनपूयक॥ खत्तागविय॥ कर्लिविय॥ पागुचिय॥ दमबुघरुविय॥ थन
सधुलप्रदक्रिता॥ गीकप्रसादिका॥ ॥ थनधूनकाजाथायसकया॥ ॥ थनयवा

पलनपूजायाय॥थनप्रदाकाय॥आचमनयाय॥थनविमनक॥ ॥ॐ॥
प्रनपायप्रगहनः प्राफमनूकायाकिया॥कस्तानकराकरिष्यकाशन॥कानुना
थमनूग्रहं॥ ॥रानाथःकलपालयाप्रगकायानःथथिहगदगाकिष्यकम
हाउत्तमपदविनायधन॥आराधयाकनस्यवगघाकिष्यकधयाप्रदार्थ॥प्रग
नश्यमालधक॥ ॥थनगनूयाककिबलननक॥ ॥थनिदगाकिष्यक॥
थनगघाकिष्यक॥गाकूपकयन॥गीकसहकस॥थनमृतिवसज्ञानाअगनु
साजाइविय॥थनमूलमनुनःआराडा॥बृगनाडा॥ॐकारचाय॥थनकस्तु॥
कय्यकयक॥ ॥कवादेवाआननि॥गीरगवानवाच॥ ॥गुद्वकसाहकान

यत् ॥ ॐ सर्वमथागतानुमानय ॥ स्ववज्रसन्धस्वरावसकाद्र ॥ बृहस्पति ॥ यथा
निरसि वज्रद्वारादिदि ॥ सिवामित्वाकथवसवाधिविरुनयानां ॥ ॐ ॥ रा
शिष्यस ॥ पत्रापूर्वकालसः प्रवज्रसन्धपत्रस्य धनम्यनं ॥ समस्तकथागतपनिस्त
वाधिविरुउत्पत्तियात् ॥ धधजिनकपनिस्तवाधिविरुयासनविया ॥ ॥ **थन**
सिष्यपनिस्तनमृहसूखधयक ॥ थनगकुलिकाय ॥ थनसहजराजनयाय ॥
गीतकात्रयि ॥ धूमागालि ॥ थनकलकय ॥ थनमासिप्यल ॥ ग्वयग्वल ॥ हन
थरुतयाडाः गहकय ॥ गन्तुमाजस्यनं ॥ थनवज्रसनप्रपनयाय ॥ गीतकिपु
नप्रसथनि ॥ ॥ थनकनादिवाग्मानकिश्चयक ॥ थनगलिगनमृडायाचक ॥

रुद्रनृतामन्यक॥समयसर्वत्रभामनारुया॥जीवनाया॥ **॥थनगत्रयाववनद**
भाडा॥ **॥रागिष्यस॥**थगघ्कारिष्यककायाथयसःथडाससउत्तःथडास्त्री
इलसां॥म्यवयास्त्रीइलसां॥सन्दवीजीरुनरात्रय्य॥ **॥वाधिसनरुवासर्वी॥**
मालिगनसखासनं॥ **॥समस्तसंसारकलत्रप्ययानिनिर्किर्ति॥**वाधिसन
उत्पत्तिरियाय॥जीरुनस्त्रीडानापप्यत्रलय्य॥ **॥प्रानाप्रानिपदाग्याःसाक्रि**
म्यरुथगताः॥ॐयक्षत्रतीरमाःसर्वावृद्धाप्रकासिता॥ **॥धनलिःगिष्यया**
लिगनयानास्यरावसमस्तमथगतासाक्रि॥ **॥चक्रकप्रमातागधतःसमाखा**
दयउत्सखं॥ **॥वक्रकपप्यवत्रानिष्य॥मन्यनराकसिञ्जयन्॥** **॥रागि**

पुम॥ द्रुक्रया कमलनः नारिद्रदिसर्गसथत्राकसिचं॥ ॥ आशषगलिवक
यथनंहिलाउः वरुहानउन्यरिशयिउः श्वथ्वथ्वहानयाकनः सवगाहानदयि
उमषु॥ ॥ ॐ निप्रवाससयविधि॥ ॥ साकिवांकुमादिकि॥ सगधीक
पमवलंलदर्गयिकि॥ सिष्य॥ ॥ राशिष्यसः श्वक्रशिष्यनशलसांः कुकुमा
दिः यचगधनचपनयानाथः प्रवाचनगरुतसिष्ययारखालस्यय॥ ॥ थ
नकपुत्रकायक॥ कसुविधपथन्य॥ ॥ प्रहाउवाचउ॥ ॥ किंमत्वामसहव
सविममृदिहजनः चकसुजकथासातः विनारुविकथपन॥ ॥ राशिष्यगः आ
उरुनकुवाकायानाः थथिदगप्रहाहानारिष्यकनायसगियाउकक॥ प्रना

र्थरुद्रयपिडा॥ ॥ किंचाहन्त्यासहृदविः शुक्रवमादिरुक्मंनकार्यरुवमिसदाकि
नाः नृवनरुगसवच॥ ॥ हृदविः शुक्रवमादिरुक्मनयायसः रुक्मधायथः ॐ ह
लाकासः पत्रलाकासः व्याफमानशयिडाः थथिं ह म्रधमदियायासखः सिडा नय्यस
थथ्यहर्खमानशयिडा॥ ॥ म्रहासदिपम्रसर्वसखः ससपितयः स्पवमिविधा
नः रुः नरुम्पाहमगकथिगः॥ ॥ थनदविनशवसां म्रहादयकल॥ हनाथम्र
हाम्रावर्यथगलिपम्रकागिनिगः सससं सखयाथन॥ म्रनूरुवह्यनयाविडा॥
उपकायाकः थनयाकनविधिपूर्वकनस्पववपिडाः दवि॥ ॥ थनदविनम्र
हादयकाडाविद्यागं॥ ॥ कानूपम्रयथाकार्यः संवृद्धानाधनाधिपः स्वयमहा

सखं॥ वाजावा॥ श्रीगोवर्धिसदास्तुत॥ ॥ अथ यथाशक्ति निमज्जलसां गन्धवा
कास्तुत॥ मृत्वाकार्यकार्यनया॥ गन्धध्वजध्वजसा॥ समस्तसखयावाजयाथान॥
॥ ॥ आवककुबूकशानि॥ वाधिविरुविसननाप्रवप्रमिसविच्छिन्ना॥ किंसव्यानन्दर
सखं॥ ॥ ~~वचनवक्त्रशानि~~ नः श्रीरिष्यकविमजनयातः॥ अशानिनिनंप्रदानया
गः सखसलाकसिय॥ ॥ प्रमितावाधिविरुदुः सर्वसिद्धिनिधानक॥ मुक्तिरत्यन्धवि
दानः कृतसिद्धिबविदिता॥ ॥ वाधिविरुउत्पलिरुलः पचदानउत्पलिरुअसिय॥
अतनूपवदनासंस्तुतसखावविदान॥ अथयाकनमवनासिद्धिनायिअ॥ निश्चयनम
षुः॥ ॥ प्रहाससक्कचः श्रीमानतन्त्रः समयलव्ययतु॥ वरुपश्चाकनः चिन्मन्त्र

तमिश्चक ॥ ॥ वप्रप्रदातमाशुकिशुभः प्रः उ प्रथी मन्तधाय ॥ थप्रसरज्ञानन्दधा
या ॥ ॥ थनमकुलिकाय ॥ ॥ ॐ नित्यदाहानारिष्यका ॥ ॥ थनलियाचतुथारिष्य
कयाखकद ॥ ॥ ॐ न्दानिहानविश्वधनार्थः यथाकाविधिनास्पष्टानागृहितप्रदा
हानारिष्यकस्यवका ॥ चतुर्थारिष्यकाशुलरुनमरिष्यका ॥ नन्ववकवः नानास्पसस
कृतिरुयाक ॥ ॥ थयाशुनरसः समहानविशुद्धियायनिमिरितः प्रदाहानारिष्यका
याविधिपूर्वकतः यत्नारिष्यकाज्ञाय ॥ चतुर्थारिष्यकाचकर्मनाचकसन्तुयारुदप
यम् ॥ ॥ यइतकाः तस्यादत्तारिष्यकाविधियथातसिष्याधिसृष्यमनसासतिका ॥
उद्यालगारिलयाधिसकाः वाचेदद्यादष्यकात्रत् ॥ ॥ थकयाकानययाकतंविधिय

वृकनः सिष्यश्रुधिस्त्वनयानां गन्मनसस्तानपाठाः सिष्यया आत्मा न शोधन्य स्वयां
नत्वारिष्यकवियः ॥ सुरुका वत्तमखा रोरुनेः हर्वा रुनी नचने ॥ अत गृह्णाति नत्व
दृक्ता नत्व नपश्चि ॥ ॥ वश्रुहानि विचक्षुः पश्चि न क्रयति ष्यया रत्ना वस्वया ॥ चन
कन कथं पश्यन्त्यनथं ॥ महा हर्वा मानयानां पाठा नः थथि हर्वा सिष्य स्वयां ॥ नस्य उ
पद भावियः ॥ य इ न रुगवताः श्रुतिष्य कश्चि धा दुश्चिनः श्रुस्मि नतः प्रकाशिता
आचार्य गच्छ प्रकाशिता ॥ वदुर्थतपूतनथा ॥ गथि वम रुस ह्नास्य नल
थ श्रुतिष्य कश्चाप्यपदार्थः स्वना प्रकाशिता आचार्य रिष्य कधकाः पु ह्ना ह्ना
रिष्य कधकाः गच्छा रिष्य कधकाः ॥ स्वना श्रुतिष्य कधकाः निश्चयेया

या॥ अर्थतः चतुर्थं लिख्य कथय॥ ॥ आनन्दयमपवमावेवः विवसासहजान्ता॥ वि
चिञ्चिविविधाय्यान्॥ पवमानन्दविपाकयो॥ ॥ हवसाः चतुर्वानन्दयाखविस्कारन
कादन्त्यडाधकं आनन्दधायप्रदार्थः विचिञ्चयस्तः पवमानन्दधायस्यसाधु॥ मञ्जनि
विपमानन्दधाय॥ थमनत्थथमनस्वरावउत्पत्तिः धप्यतायाखचतुर्वानन्दधाय॥ ॥
विचिञ्चिविविधाय्यान्॥ आलिगानचूवेनादितः विपाकविपाकान्ता॥ ॥ आन
न्दयाप्रदार्थः विचिञ्चयताः तानाप्रकाशनः कवनाहिरासुनासुः पवनन्दयाद्यनम
नाकानि॥ विवसामानन्दधायः पापनंतात्रुः अन्यगालिः सहजानन्दधायः सदास
र्वकानसुखयाथय॥ ॥ विमात्राचनपाकयोः सखरुक्पयज्ञाचः विलगिनचधर्मि

न्याः न्याः (गानागविवर्जितः ॥ विप्रमानन्दध्यायप्रसार्थः ॥ आनाचनसः सदा सर्वकाननं
पुष्पयागनीलः नृजनः यास्ववृषः आनन्दपत्रमानन्दः ध्वस्वनाया कनः उत्पत्तिध्यायध्यान
सहजानन्दध्यायः ॥ अकृज्याहनः न्याः (गानविनागचः साधमानोपनयनः न्यानव
रुताहवः सहजवाधित्वाकः ॥ आनन्दध्यायः पत्रमानन्दध्यायप्रसार्थः विप्रमानन्द
ध्यायप्रसार्थः ॥ ध्वस्वनाउत्पत्तिः वाधिविजध्यायप्रसार्थः सहजानन्दध्यायः वस्वस्वनध
प्यनायासलनाकः ध्वस्वनवाधिसामनाकः ध्वस्वनाकननागद्वयमाहसायाः ध्वप्यना
कालनाडीः महाउत्तक्रान्तिशूलः ॥ ॥ श्रीसाजाकः साधुजनसंज्ञागताय नमः वनिक
वर्गः वज्रपद्मसमाज्ञागता उत्तसाधनमुख्यः ॥ ॥ ग्वगलि साधनयानाडी शूलः ॥

गत्साधनपः गत्थध्वलताः वज्रपद्मसमाश्रुयानाडीः ध्यानामउपसाधनधाय ॥ ॥
मृतयवाहाश्रुत्तमृत्तननसशक्तसहि ॥ नउरुवनउनिवान ॥ ७ इत्यसहस्रस्य ॥ हन
पत्रमानन्दश्रुपानह ॥ ॥ हनसहजानन्दध्यापदार्थः ॥ आदिमः श्रुत्तमः स
ध्वसमपुः उत्पत्तिमपुः निर्वानमपुः पत्रिमानवायमजिउ ॥ ॥ पुनहनं पत्रमानन्दन
रुवपाहुनिवायनः अविनागनः सध्वमानन्दसहजसखिवर्जित ॥ ॥ पत्रमानन्दउ ॥
श्रुतनुडीः ध्वनिग्यातध्वसः सहजानन्दश्याडीः श्रुतन्दसध्वसः विप्रमानन्दध्व
पाप्रदार्थः ॥ निर्वानपदकालु ॥ ध्वन्याकनः सहजानध्यापदार्थः कडाधरुव
रु ॥ ॥ श्रुतादिनिधनसाक ॥ रावारावमकापि ॥ ७ न्यनाकावृत्तिनः बाधिवि

रु०००मिस्सुतं॥ ॥ हनथनलिआदिसडःश्रुतमडःताकआत्मायाहावःश्रुतावमडः३
न्यतावःकवृभावःथवृयावतवाधिविलाउत्यर्लिइयिअः॥ ॥स्वसवंद्रमिताहन्
वाग्धथाहितगभवतं॥श्रुधिस्त्रानपयगंनहाहाननमय॥ ॥सर्वहानधायःवचन
यागभचरमडःथवचनज्ञानानेद्रायमडिअःथिलनवानमयःथमथथमनसिध
वरु॥ ॥यथकययमिसखवाजः७ककाजनहिमंसडाहिमंरंगगायस्यडुनिगव
वनदलिडावरुवलसर्वहा॥ ॥सर्वहहानधायप्रदार्थगथिंवधालसा॥ ॥
मिसयसससससपयानकिःथनसियमडःलारुयानादिनालडु॥थथिदगसर्वह
हानधाय॥ ॥गवा ॥ननवागनूकह०००ननंपूजयिमःगहजावधथःश्रुमयलत

कासुकां हि ॐ निसा ॥ ॥ हनसज्ञानन्दधाय हानयानसः धनया कनवक्रगुननका
नसां थडागदयडाः वप्रस्यप्यनठनसां थडागदयडा ॥ ॥ श्रुतिविस्तनयस्तस्यासम
कागन्नुसाताधसगिष्यकायनया कवगि ॥ महासखगुणः ससिविदितं करुव ॐ तिप्राफ
वकिजककृत्यकुर्यात् ॥ ॥ गगिष्यसः वलिचिनः समाजनसज्ञास्यतयाः श्रुतिविस्ता
नयानाधज्ञायडडाः थनया कनगगन्नुप्रशानाधशाययधकाः आवजसत्त्वस्यनश्रा
हादयकलः ॥ ॥ अयमसरुलजस्तः सरुलजिवित्तम ॥ अयवृद्धकुलज्ञानाः वृ
रूपुतासिसाप्रन ॥ ॥ हनाथरुगन्नुः थथिवसज्जुथयसः कलपालयाप्रगद
तः थनिजिज्ञत्तकायासासाहृत्तः थनिजिपनिम्बानायासाहृत्तः थथिप्र

मथागतयाकुलसज्जनकायायासाकल्पशूलः थथिदमकलपालयाचजनयाप्रभदने
वृद्धीरिष्यकयाप्राफनाम॥ ॥ॐ॥ त्रिदशुर्थीरिष्यकयाविधिजन॥ धयालिडासिष्य
पनिसयानाहमसिलसमयक॥ ॥ नदनकनः तस्यप्रहापानिथिनसियान्पादन्वाः स्वक
यनधत्वाः सर्वज्ञसिष्यस्यः सिनसिदत्वासरुषिनीय॥ ॥ रुगिष्यसः थथिन्यथानेस
कप्रतिसमस्तुमनः वाहमसिनसदकायाडोगयाः थयालकशसमस्तुमथागतयनि
साक्रियानास्वरावने॥ ॥ उं नान्पायन्यः वृद्धत्वं शुद्धचन्दनजगतयः तस्यादिया
गमनेसासाखित्वाकावने॥ ॥ रुगिष्यगः थथिदवृद्धस्वपदनानाः धगालिउया
यनः शिष्यवृषविज्ञागश्यसज्जिडाः थडासनसरुगनपमन्यडाः॥ ॥ॐ॥ दक्तसर्ववृ

ज्ञानाविद्यावरुमनुरुव ॥ अत्रिकासमिकासूत्रासिद्धिस्तनवीरुम ॥ ॥ **हागिष्यसः** ॥
श्रविद्यावरुधयाप्रदार्थः ॥ कडाधदप्रदार्थधका ॥ वमस्तनधवलपलाडीमननुष्यन
संम्यक्वाधिहाननानाडी ॥ वमसिष्यनश्रविद्यावरुधयाप्रदार्थः ॥ वमसिष्यनला
धनायायुडी ॥ श्रमसिष्ययासिद्धिरुलनागश्रयिडी ॥ ॥ **थनवजनथियाडीलिवा**
काय ॥ ग्राहाननज्ञानकमय ॥ वज ०० **निवुरुविद्यानविधि ॥** ॥ **तनुगिष्यावजस**
त्वा ॥ नृपध्मत्वा ॥ ०० दकसंर्ववृद्धत्वं वजसत्त्वकनस्त्रिंशः सत्त्वपिनाडापिहिसठाश्रवज
पानिलहृद्धक ॥ ॥ **हागिष्यसः** ॥ थपनम्यवववजसत्त्वयावृपः थथिववजसदाधनल
प्रागम्य ॥ ॥ ॐ सर्वकथागकसिद्धिवजसमयद्विंश ॥ जलत्वाधनयामि ॥ वजडीडी

झीझीइं॥ ॥हनाथ कलपालस्यनः आह्वयकाथं; सिद्धिदानधनलप्यमालमिनि॥
निश्चयन॥ ॥ॐ निवृत्तवर्तुनायाविधि॥थनसूडाकायकलकाय॥ कृपानशक्तयाडा
वाकि काय॥थनसूडान्याग॥खन्वागः दसनृपाडः व्याघ्रवर्मा॥रुतामकृन्त॥रुसश्चकता
लनाचकाडा;थनप्रचसुक्तानहिनाडा;सूडान्यागयाय॥थनवलि कृपाकविय॥गन्धमधु
लः निनाशनः आपधूपः आकर्षनस्वानवाय॥थनपवापहानपूजा॥थनगीतधनधन॥
॥ ॥ॐ श्रीकायचक्रिन्पनः श्रमकारु कुशलनिववत्तसंक॥थमानायाहकधेनाचना
नासमृताः स्यलनायास्त्रिनाः श्रमोदपचनथागर्गद दसनविलखन्वागः उसनृपाड
ध॥शिवरुसत्यसः सूडयवहिना आसस रुवायगगनमनधमूलरुलसर्वरुकाय

समाचनत ॥ **॥थनमूद्रानिचयः॥** गीतहस्तश्रुवननाथनमस्तुलप्रदक्रिष्ण॥
गीतचक्रिचक्रि॥ **॥थनपूजाश्रावगविया॥** गीतचक्रिकुल॥थनपचाप्रह्वनपूजा
कुमापनः ॐ निचयविरुनयाविधि॥ **॥थनतथागकचय्याया॥**थनपिष्टपात्र
क्रिजिलिकाः उष्यलाकक्षमाखपात्राहानिपूक्तकाः इपात्राहानिनश्रुयमूद्रा
याचकनया॥ **॥नखाइव्याकनामित्यावद्रसत्तकथागतः** सर्वइगर्तिकाधः श्रुयनक
वसातयक॥ **॥शागिष्यतः** श्ववद्रसत्तकथागतस्यतः ध्वावनपतयाहानिजितः क
पानिसमस्तयातविया॥ कृयानिमिरुिनधालसाः इगर्तिकागयायश्रुयनितः॥ ॥
थननामकृया॥ **॥उंश्रुसकनामकृवनामकथागतकृवकृवस्व॥** **॥थनपृष्यपान**

नया मूनु कालनः नाम कृया ॥ ॥ ऊचेव व्याक्रियता ॥ सर्वतथागतं मवाधिनता ॥
रागिष्यसः स्वसमस्तथागतपनिस्यनः ॥ आह दयकनयाः पत्रमसिद्धिया सन ॥ स
कुसङ्गास्पनया इः गथ्य धालसाः ॥ स्वकपनिसमस्तया कविया ॥ ॥ थन नृवायिन
निचका ॥ ॥ ॐ निव्याकनयविधि ॥ ॥ उतानि विशावरुचर्या निवरु व्याकनना क
विरुगानी ववद्वतानि ॥ ॥ रागिष्यसः गलिच्छि सनत कुसकुसङ्गास्पनया इ ॥
गथ्य धालसाः ॥ थन समस्त विशावरुनधकाः चर्यावरुनः व्याकननः ॥ थन हानश
वसाः ॥ कपनिसमस्तननाधका ॥ ॥ थनयंचविनवियानिलवउविद्य ॥ गमथ
॥ ॥ ॐ सर्वतत्त्वहिताथयः सर्वतत्त्वषु सर्वयथाविनयः ॥ उताविश्वः धर्मवकं

पवरुया ॥ **॥थननत्रयाचिद्रविया॥** ॥उं रुरुयमिसर्वतथागमाधिपतया॥
धर्मचक्रपवरुया ॥ **॥थनवक्रविनतया॥** ॥उं यथाविनतयाविश्वःधर्मवत्त
नयवरुया ॥ **॥थनपद्मविविया॥** ॥उं वज्रनत्तसर्वधर्मविशुद्धिदानत्रागपद्म
स्वरावद्रिओ ॥ **॥थनविश्ववज्रविया॥** ॥उं वज्रकर्मविशुद्धिदानः सर्वपूजास्वरा
वम् ॥ **॥थनसंखलओझाय॥** ॥उं वज्रराखनः आकाशजगत्तः दक्षिणहस्तः श्रुत्य
कत्वनजाः घण्टा पुरुकचवास्य ॥ **॥थनपुरुकसद्रविया॥** ॥उं आसनखन
सर्वआकाशचाप्यवः आकाशसमन्ताजगत्तवागसमन्ता ॥ **॥रागिष्यस**
सर्वतसंसाजआकाशथं ॥ श्वर्गयाकाशतः समस्तजगत्तः आकाशथं ॥ रा

दय्या ॥ अथ परमि सद्रचिन्तादमाहः धर्मचक्रप्रवर्तय ॥ **॥ आशिष्य ॥**
थनियाम्भ्यापिनिस्यः धर्मचक्रप्रवर्तयः गालवद्रघ रयावायः प्रवर्तनाः
यायनिनिर्दिन ॥ ॥ उं सर्वसत्त्वहिताथयः सर्वसत्त्वधसवः यथाविधिमनाविध
धर्मचक्रप्रवर्तय ॥ **॥ आशिष्यः समस्तसत्त्वहिताथयानिमिर्दिनः** थथिन्य
धर्मचक्रप्रवर्तय ॥ ॥ उं प्रहयायस्वनूपायः चिन्तामनिलिवाह
नः श्रुतिनाविगतासु गतसत्त्वार्थकृत्सावक ॥ **॥ आशिष्यः कल्पाजनः सत्त्व**
पाहपायः प्रहयास्वनूपशयाः चिन्तामनिकल्पथः महाज्ञाहलमाननप्य
॥ ॥ नदनुगिष्यावाच ॥ यथाहपयमिः तथाजयंकलिष्यामिसिद्धिरुवन्तु

॥ ॥ **हताथहगान्गथ** आहदक ॥ अथ जिन धन लप्यः समस्त सिद्धि या रुल जाः
 यमाता ॥ ॥ **किञ्चन कथा विधि** ॥ थया लिङ्ग मथुल प्रद क्रिष्णः गीत स प्र कि
 मथि क ॥ ॥ **पुवद्वानसि नसि रुः** प्राफयेन ॥ ॥ **धन लिथय स कथा** ॥ **धन द**
 ता ख क ॥ ॥ अय निव्यदि न सिष्य कथा ल रु विष्य कि ॥ नुवमं थुल मन्प सिष्य
 स्व हृद ग म क ॥ ॥ **राशि व्यसः** गथ आग नून आह दय कलः अथ ध्व मथुल मा
 दिन पूजा या ताङीः समस्त मनुः ककु सिष्य यान गल स इ हान नान व्य ॥ ॥ अधु
 ना मथुला चार्य्य म क ध नो रुथे क ॥ बुद्धाना वा धि सत्त्वानाः दव नाना च स म क ॥
 ॥ ॥ **राशि व्यसः** आङी रुल साः आचार्य्य पथ ग ना नाः समस्त दव ना मथुल वाय

इन्द्रकालमधिवालशुडी॥ ॥ अदहिषिताशष्माशः सर्ववद्धः सर्वजिनः देवाहु
कमहावाजः विस्वामिताः ॐ निनिश्चिन्तं॥ ॥ **आमि** **सः** थनियाम्रयापिनिस्पः क
पनिसतसुं स्वर्तमध्यापानात्रयाथकुलसः गथिरुपायकुनूमइरुलः थथिठध
सुं कुनमइरुनः थथकुनागडाविनागडीधकङ्गास्यतल॥ ॥ ॐ सर्वकापर्वका
ग्याकुनमत्वचकुमारुय॥ पचमासासुतुरुय्यनयान्यसमझारुवने॥ **आमि**
सः श्वरुयायावनयाकनः समस्तउपरागधुः कृष्णसः मनवाकायानाडीः प
चमात्पादिः समस्तपायकालकाडीसुखरुगधनायुडी॥ ॥ नहिपानवद्धकार्य
नि॥ तत्त्वनयकङ्गाः आवाय्यकनसत्याङ्गा॥ सर्वनाइनकिकुमनाकिः किनिनकार

वाः प्रहयायः नवतसां ॥ ॥ **लागिष्यतः** प्राशिवधयाय नम्यताः धनलिथडा मुनीना
लस्यमन्यताः हाफनं आचार्यनालनडा मम्यताः वमस्यनः धनननालनसाः ध
म्याकवधनः नृपनाधजायुताः ॥ ॥ **माकविना** किनं पापकथागतववायथ
॥ ॥ **हासिष्यतः** वमसिष्यनथ थथातः डीम्यातसमसक्तपापरुयनदयाताः थ
थवकं श्रीकथागतपनिस्यनः आहादयकाडा विद्यातं ॥ ॥ **श्रुपि** वधसर्गनाय
दविथविधविहिकुपियपुत्रवः कप्रतनामनारिकल्यानायवसर्वसिद्धिसर्वस
त्वाक्रीयतामिति ॥ ॥ **लागिष्यतः** धसमस्तमृषिकयाकथानः समस्त
थागतपनिस्यनः गिवनपाडा कयाताः विखयनाडा रुलसाः कपनिसमस्त

नं॥ रुद्रनाया इत्यथ काः थअममना अकाय रानप्यमाला॥ ॥ **ॐ ति आस्वाम**
नविधि॥ ॥ ॐ शिष्यचउवनधालि र्निष्यकाः आस्वामुद्धननमनसा, उवं
कलिष्यामि॥ ॥ **रुद्रनाथः** धर्मनाया प्रकावतः श्रुतिष्यकाकनाशः महाश्रु
नन्दशुलः॥ समस्तसारुल्यशुलः॥ ॥ अथमसरुलजन्तः सरुलशिवित्वम
अथबुद्धकालजानाः बुद्धपूजासिमाप्रतः॥ ॥ **रुद्रनाथः** आशुलसाः कलपा
लयाप्रगादनः शिपनिमस्तुयासारुल्यशुलः शिपनिम्वानायासारुल्यशुल
यीरुथागतयाबुलजन्तकायायासारुल्यशुल॥ शीरुथागतयापूजयादंजन्तका
यायासारुल्यशुलः॥ ॥ **गास्वाकरुलसिद्धिस्तु॥** ॥ नउगन्वचदक्रिस्त

स्वागः कनिष्ठुनंगनत्तगाति॥ सनायव्यालवालवक्तुः स्वम्यहिर्यः दासिदासः कर्म
कनादिः नतिपुरुइहिरुः सवकागधभाकितादद्यान॥ ॥ असिष्यसः आगून्या
तदक्रितावियः धनकाशागधः विसः सनः नत्तः उधः वक्तुः म्यवः साः ल्यानिनिः कर्म
कनादिः निम्बकर्मयायकलनः धनगीगून्यातवियकागधकलः धनगीगानविय॥
सिरुतनूया॥ स्वानकिरुनका॥ गउवृजादक्रिषः गानत्रकु॥ ॐ निसक्रफमृहिरव
कयाविधि॥ ॥ पूर्वकसमाफं॥ शुभनक्त॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमः श्रीवज्रवार्ताहीदवीनमः॥ ॥ धनलिसिधुलमधुलयापानमानथथ्य॥
धनरुधिलमधुलवाय॥ सिंधुनसधुलवाय॥ थापनायाय॥ चन१किरि

कलसः सगधलिः ग्वगनासः सिद्धसाहनि ॥ वनधषतविनिकलसः वनरूपवसानि
वनरूपवपात्र ॥ पात्रथापि ॥ नडाधनः पचकप्रतयाशा ॥ नकसुत्रकाय ॥ अथनिः
थापनाधनकाडा ॥ धनसूर्याधियाय ॥ धनपचगव्य ॥ गानयाय ॥ ॥ धनपूजाहल
डापक ॥ दवयासुर्लिनस्वरूपजायाय ॥ मानपूजायाय ॥ नडाधनपूजाय ॥ ॥ दग्
समयकाय ॥ गीतश्रुदग्गाचन ॥ ॥ विसृजत ॥ धनसिधुनयाय ॥ नरुस्यकाय ॥ द
गलिदत्त ॥ ॥ गीतश्रुनिल ॥ धनकलसपूजा ॥ गीतकलगाचन ॥ धनकुरुन्याग ॥
गीतवारुनिल ॥ धनपात्रपूजायाय ॥ गीतपचनलपात्र ॥ धनलिविधिथयपूजाया ॥
मरुलपूजा ॥ ॥ धनदवपूजायाय ॥ मानधूपचया ॥ छिचक ॥ धनपूजायाय ॥ ॥ गी

तपुर्वदीर्घतः ॥ **थनदगवलि विया** ॥ ऊजमानमानमधुलदनकः ॥ **थनस्वान**
किन्त्या ॥ गन्तुजापूजाः दक्षिण ॥ **थनदिनविया** रुल ॥ **थननायाक्रिया** ॥ **थ**
नधमपनिस्वन्प ॥ **पानकमधुलजाविनमधुलथिलक** ॥ **गाविनस्वान** वाया ॥
थनपचगव्यविया ॥ **विगजन** ॥ **थनगन्तुमाडाइरुनविद्यावक** ॥ **दववास्तकधूप**
थन ॥ **हनपिहानुअनाअनाडासिष्यपनिरुधूपथन्या** ॥ **ग्राव्यसनयाय** ॥ **थनस्वा**
नकिवाय ॥ **थनगन्तुमाडाउपाध्मा** ॥ **वचापा** ॥ **मधुलयाग्रहसइहानुअयरुल**
॥ ॥ इरुकात्रकृणादाषा ॥ **क्रिद्रिवात्ररुयाकः** ॥ **लिनावऊप्रगानिन्मः** ॥ **वज्रव** ॥ **गान**
मधुल ॥ **थनस्वानकायवाव्याय** ॥ **थनदिगायुजाः** ॥ **गिरुचरुग्रहस्मगान**

॥ **॥** यत्नश्चाचार्यप्रवृत्तः ॥ यत्नश्च न श्रुतिगन्तमृदयानां ॥ दत्ताश्रित्या ॥ **॥** यत्न
उपाध्यायनपत्रपत्र ॥ ॥ ॐ श्रुवा ॥ ॥ पादनविनत्वा ॥ श्रुतादिनिधनपत्रः स ह्यवज्जत
मयत्तत्तः श्रुत्वाः वज्जदसिद्धिभ्यां विदोषसात्तत्त्वगश्रुति ॥ सर्वजागन्तुजाग
तं ॥ तत्त्वतसिद्धिभ्यः रुगावतमहागागमहात्रत ॥ श्रुत्यक्तुर्द्धः धर्माग्रह ॥ आदिम
किं तथागत ॥ समन्तरुदसर्वान्तावाधिसत्त्वप्रसिद्धिभ्यां सवाहिसमहासिद्धिः मह
सूर्याप्रमृदयाः सिद्धिवज्जामहाकावविज्जगताप्रमममः सर्वसत्त्वमनाव्यापिः सर्व
सत्त्वद्रुदिष्ठिता ॥ सर्वसत्त्वपिनाचैमाकायः समयागिनीः यत्नसमन्तसंस्तनः पश्यपा
यममधुला ॥ ननसंस्तननमानार्थः कामास्तोपनिपूनय ॥ **॥** यत्नकिं ननय ॥

थनक्रसकनकन्या॥ ॥प्रतिविवसमाधर्माश्राकसय्याहिनाविलाश्रयाश्राकृत
कापाचःह्रुकर्मसमरुहव॥तथगतात्वनिर्याताः००॥नित्तमनमधुलःप्रतिवि
वृद्धिगिष्या॥सर्वपेगधुकर्मधा॥ ॥००॥प्रथमया॥ ॥थनदवनाकनाश्रा
चार्यनस्त्रया॥ ॥००॥तिश्राचार्यप्रव्यसन्नविधि॥थनचमिसविश्या॥थनसिद्धमा
हनिताधनयाय॥गन्धमधुलदन्या॥तिसमादिदन्या॥ग्रापधूपनिनागना॥सतहमान
चानताय॥ ॥थनपाशादितया॥थनस्यानवाय॥मागुयाऊमापनयाय॥विशर्जनयाय
थनदवनायातश्रागतस्य॥गन्धमागस्यनमिचवै॥कसाथ्यकथनमिचवै॥धूनकाडा
चमिसविश्या॥ ॥थनमात्रज्ञाय॥गन्धमाहात्य॥थननदीपन्या॥पचसुरुकाय्यन

थनज्ञापयाय॥ ॥ उं नमो वक्रसवनाय॥ ॥ हस्तवक्राधुः खडः ग्रहनविसगिरुतः गान
कामनगंगं। जामदिचक्रः वातः प्रकिमिपनिविरुः कास्का कातयसः मशुगोचदुविन्द
वनसत्रिनसलिः सागनगाधुनवाः हस्ताद्रुमपाशः नरुवक्रुवकु॥ योचक्रनाथस्वन
स्यः श्रुपिचः सा॥ जामासराचक्रः विनचयः मिमिनः सतिशोगमहताः साधुयस्यप्रसादा
दिसिस्तनिरुवः स्वासिननिष्पपचः कचयस्वामयः समदयमिः सपस्वीनाशालसूक
कृष्णितस्याधिपप्रः सिनसिविनयः ततगन्सर्ववानः श्रुपिचः जस्याचक्रुकाति काति
गठनपप्रनिष्पः प्रप्यनसुनिरुः सपाठुवक्रुः योपननिष्पवव॥ ॥ थनः नम
स्वानकाय॥ गीतधमादया॥ थनश्रुचविय॥ ॥ दवानिदवगन्माशस्यनविय

पाउसुहगीकईदित॥ ॥ थनधूनकाउः थनगान्मागसुनदवादेविलानयागः स्वस्तिवस्तं
स्यन्या॥ थनसिंधासनसविश्वचक्रं॥ ॥ थनउपाध्वानमृदान्नागयाय॥ ॥ गीतधनधन॥
थनमृदानमिचक्रं॥ ॥ गीतहउम्मारुनन॥ पदकिना॥ दिगपुजा॥ अयसंविश्वचक्रं॥
थनउपाध्वानिहानगनाडा॥ गीतकयाकासचउत्रवलिचक्रपातविय॥ मृध्वनगागकः
त्वाककाय॥ ॥ थनउपाध्वाननदीपनप्य॥ गीतहउसिल॥ थनमृध्वयाचक्रं॥ मृध्विमा
निहानविश्वचक्रं॥ ॥ सिंधासनसविश्वचक्रं॥ ॥ वायुअन्यडाः गीतकुलिकाय॥ पिहा
नविश्वचक्रं॥ गीतकिरुवन॥ थनगान्मनिस्रयाय॥ नडावरुस॥ स्वर्गन्नासयाय॥

पाठकृत्विक्। विष्णुनयकं॥ नृपचिन्तनय॥ मूडावर्कतन्यासयाय॥ चउदिगसधून
काशः श्रुतिं घातनसविष्णुवर्क॥ ॥ **थनसिष्यपतिस्तु॥** उष्णश्रुत्पुत्रय॥ श्रुत्मा
नकायायकं॥ ॥ **थनइतयड॥** मदलप्रदक्षिण॥ गीतद्विदसत्रा॥ उपाध्मश्रुत्॥ थन
दगानाखकन्या॥ ॥ कस्त्वपिहासुनतपिय॥ सुहृन्महमहासख्यनि॥ ॥ **हमहात्तापुन**
थसहामुलयासमिपसः श्रुतिनसतशश॥ कपनिश्रुयिगस॥ हनाथहगून्ः कल
पालयाचननकसलसः स्ववन्पाशवीना॥ शिष्यनिश्रुलसांः कलपालयासिष्यथकाध
कः॥ ॥ **ॐ निश्रुत्यापचयनासयाय॥** ॥ उं पूर्वद्वान्नश्रुतिदविपूजापस्तनयाग
साननिर्यागयामि॥ ॥ सुकवसत्त्वपनिमाजानार्थय॥ श्रुत्ताननिर्यागयामि॥ ॥

हनाथः हग्नः पूर्वदीगसविष्णवाक्षः जाकिशीदविपूजायायनिमिर्हितः क्रिसनील
साधनदाहलापाः थजाकिशीदविनश्लसांः थजाकिशीदवि। क्रिपनिरुपदितायाद
पुगाइन्त्रश्यसाला॥ ॥ पूर्वया॥ ॥ ॐ उरुनद्वानः नामादविपूजापुखानायात्ताननि
प्राप्तिमि॥ सर्वसत्त्वपनिताथय॥ आत्ताननिष्पत्तियामि॥ सर्वसत्त्वपनिताथयः आत्त
माननिष्पत्तमि॥ ॥ हनाथः हग्नः उरुनदीगसविष्णवाक्षः नामादविपूजायायकर्मप्र
वर्तनायायनिमिर्हितः क्रिनथशालिनसाधनदाहलापाः थक्रनासादविनश्लसांः क
तुग्रहयातागप्रगान्त्रश्यसालधका॥ ॥ उरुया॥ ॥ ॐ पश्चिमद्वानखशुनाहादवि
पूजापुखानायात्ताननिष्पत्तियामि॥ सर्वसत्त्वपनिताथयः आत्ताननिष्पत्तिया

मि॥ ॥ **हनाथः हगन्तः** पश्चिमदिगसविष्ठाकः खधुना हदविपूजावर्कनायाय
निमिर्कितः क्रिसत्रिनमापुनदाहनपा॥ **थ** अखधुना हदविनशलासाः धर्मवुरुषगान
इयसालधका॥ ॥ **पश्चिमया**॥ ॥ **उं** दक्षिणघानः नृपिषीदविपूजायस्वनायाः आत्ता
ननिर्याक्यामि॥ सकलसत्त्वपनिनाथयः आत्ताननिर्याक्यामि॥ ॥ **हनाथः हगन्तः** द
क्षिणदिगसविष्ठाकः नृपिषीदविपूजायायनिमिर्कितः क्रिथशसलिनमापुनदाहन
पाः **थ** अन्नृपिषीदविनशलासाः क्रियनिमूधिसूतानथानाशपुगान्नइस्यविष्ठायसाल
॥ ॥ **दक्षिणया**॥ ॥ **उं** गगन्तवन्तः प्रस्वनायामाकमाननिर्याक्यामि॥ सकल
त्वपनिनार्थयः आत्ताननिर्याक्यामि॥ ॥ **हनाथः हगन्तः** कुलपालइयिआराथिद

अधलासाः दक्ष्यान् दवमाः गन्तुचन (य कलपोलयापाइका सः नमस्कात्रयादः शिन
थगसलिलमाइराध हनपाः कलपोलयावा समस्तसत्त्वयातनकाया यनिमिर्कित
कलपोलयापाइससिवनपाः कलपोलस्यसद्विद्यानाअपुगान्नश्यमालधकं ॥ ॥
अथत्वसर्वगथागनकुलप्रतिष्ठः सुदहसकवग्न हानमूत्यादयासिः शिन हाननंत्यसर्व
सिद्धिर्नपिपापस्यास्यः किंमूक्तान्यासिद्धिर्निति ॥ ॥ **हवन्तः** अथधनियाम्नापितिस्य
सर्वगथागनामाः समस्तगथागनः दक्ष्याकुलसद्विलः पुनहनन्यमानायायनपू ॥
विग्रहान्तउत्परिहोयसः अथग्नहानयापुगादगानः समस्तगगातपानिस्यनः नादासि
द्धिर्नाथिडा ॥ सिद्धिकथरुतः अथसिद्धिरुयिडागथिदः पूर्वग्ननामन्वाला ॥ ॥ नचत्व

यत॥ मूकमशुलपुत्रस्यः पुनकतव्य॥ ॥ **हवत्त** ॥ थकयानिमिर्दिनः थयारवमशुल
स्वडीधकः मूकित्वकसनाकस्रकृत्यकृत्यसक॥ ॥ थनसिनसवजनथिया॥ मूयकसस
यावजः सुबान्तस्कातयिष्यति॥ यदि कत्वमिदकश्चितः यदि कयामिमकूनु॥ ॥ **हवत्त**
थमहायानयागरास्यतः सूर्याकृत्यकृत्यसां॥ थवजनवसचलकास्यः थवजनल
काकृत्य॥ मूककृत्यकृत्यधकः थकयानिमिर्दिनः थयारवमहागफयाकृत्यः सिद्धि
लजायिगी॥ ॥ **थननृगनसवजनथिया॥** ॥ **उं** वजसत्वस्वयकः मूहदयसमयसिक्त
निहयनकृतनयाक॥ यदि कयामिमकूनु॥ ॥ **हवत्त** ॥ मूयथनिमूयापिनिस्यः व
जसत्वपनिस्पनः कृपनिनृगनसहानथापनायानाविलो॥ कश्चित्सहकाय॥ थकि

नः श्रव्याखरुकिहिनाथयाङ्गान्त्यज्ञानसाः श्रवणनक्षत्रपनिसयान्गनचलकास्पपिहा
नशायुशथकाः श्रवणानिमिरुिनः श्रवमसरापकयायमात्र ॥ **थनधुपदानयाय**
थनपुष्पाकयाय ॥ ॥ उं किष्कवर्गद्वयमरुव ॥ साहकोस्यरुवः हृदयश्रुधिरुकि ॥
सर्वसिद्धिमपीय ॥ इहहहहाः श्रवयिनः सुसाः कृत्समाजलिनाथः हा ॥ **थनसशुन**
सुहयकाशः सिष्ययाकस्यानकुवर्ग ॥ थनपुष्पागनयाश्रुनूयन ॥ पचकथमनयाकुल
सिय ॥ ॥ **तिपुष्पागनरिष्यका ॥** ॥ उं वरुससत्त्वस्वयणार्थः चक्रउयाननपल
उगद्यानयतिसर्वीश्रानरुन ॥ ॥ **हवन्तः श्रवणनसश्रवणवर्गस्यनः थमथमनवि**
याना ॥ ॥ कृपनिससस्यापापवर्गः काकायाडाः पूम्भयाचक्रकल ॥ **थनवरुनधिया**

[illegible]

शुलसविश्वकर्मणा वरुणाहिदविः धसंसाजसव्याफमानशयाशविश्वकर्मः समस्तसं
सानलजायायनामाविश्वकर्मः थथिंद्रशिवरुवाहिः समस्तससाननरुलसां नमस्का
ययायमालधकः शिवरुसत्त्वगुरुनरुलसाः आहदयकाशविश्वकर्म॥ धसशुलशयिडा
गथित्यधलसाः डिकानत्रयाशवानगः शिवरुवाहाहिदवियागर्लशयाशवानगः धकिवा
नसाविश्वकर्मः यागिपतिस्तुधकंधानसाः बुद्धजकितायागिशाः वरुवर्दीयागि
शा॥ वरुवेजाचमीयागिशाः तत्सधधयादयुसकानुमशुलः वरुवाकाननवानगः स्वय
नापेमनाहनशयाशवानगः धयानापीत्यधकधाननयाशवानगः धपनकानसः ध
धविनसंशकशयाशवानः वः धयपिथआदिनः धयपिथप्यगउपपिथनसंशक

शुभाशुभान्तर्गः दयवन्नम्रकमानान्तर्गः शुभाशुभान्तर्गः शुभाशुभान्तर्गः ॥
शुक्लवर्तनं ययसा ॥ शुकादिषादगस्यनं ॥ ॥ १६ ॥ ककानादिचतुर्गुणिसति ॥ ३४ ॥ व्यज
नं शुभनं ॥ शुभकृत्तपतिकृत्तमयागिशिविद्यनाश ॥ शुभशुलकवाकनउलाशविद्याक
शुभकृत्तयागिशीयात्रुपशुभाशुविद्याकः चित्तामसिदवविक्रः कासदवसधनरुद्रच
त ॥ ॥ शुभतसंशुकाशुभाशुविद्याक ॥ ॥ चतुर्विष्टिषु यागिनगनसंस्थिताः चतुर्विष्टि
ष्टिषु वरुणु यागगोरोक्तथावतं ॥ कालासनासहादिव्यासर्वनकृतयुता ॥ जाकिन्त्या
दिचतुर्दविचतुपाठं विनाशिता ॥ विश्वदत्तपकृष्टु हर्षनातेन सर्वसंस्थिता ॥ ॥
शुभजाकिनि यागिनी ॥ नासायागिनीः खयनासायागिनीः वृषिणीयागिनीः आह

नपलस्यानसः थडा २ पाउ जाना डमहाडा कल्पमानयाना डविद्याकः ॥ ~~बहुषदिपय~~
षु ॥ ॥ हनषुयप्यहलापका डालिसः यागिनिगनविद्याकः ॥ षुयप्यचलवडा डालिस
जागानीगनविद्याकः जाला डालिन उला डद विव्यमाननविद्याकः समसुनरुननमं
रुकरुया डविद्याकः थस्रयागिनिगनगथिंद पिधलसाः सध्वा दसियोगिति ॥ १
कलिमयागिनी ॥ २ ॥ ~~डा डयागिनी~~ ॥ ३ ॥ कश्चित्कियागिनी ॥ ४ ॥ सनी ॥ ५ ॥
सोनाडि ॥ ६ ॥ मयनि ॥ ७ ॥ विगि ॥ ८ ॥ डवदि ॥ ९ ॥ तनगि ॥ १० ॥ सातगि ॥ ११ ॥
सहननि ॥ १२ ॥ वनडि ॥ १३ ॥ कामनूपि ॥ १४ ॥ जाहनि ॥ १५ ॥ धविद
वि ॥ १६ ॥ रुडात्रि ॥ १७ ॥ नादि ॥ १८ ॥ मागदि ॥ १९ ॥ तिनपूदि ॥ २० ॥

दहनि॥ २१॥ नपात्रि॥ २२॥ मूत्रवासिनि॥ २३॥ नाटि॥ २४॥ टिकुलि॥ २५
वगालि॥ २६॥ खादिहनि॥ २७॥ कलकि॥ २८॥ सुवर्धदीप्ति॥ २९॥ सिगानि
॥ ३०॥ जमजी॥ ३१॥ कलानकि॥ ३२॥ सिधुहिमालयि॥ ३३॥ कुजी॥ ३४
कूत्रजी॥ ३५॥ गलडि॥ ३६॥ पिथि॥ ३७॥ जर्ज्वनि॥ ३८॥ ननूया॥ ३९॥
आदियानि॥ ४०॥ लपाकि॥ ४१॥ जालाधलि॥ ४२॥ मूवृद्धि॥ ४३॥ कस्ति
मिनि॥ ४४॥ कोगनि॥ ४५॥ काचि॥ ४६॥ जयनि॥ ४७॥ जीगकी॥ ४८
वस्ति॥ ४९॥ नूहनि॥ ५०॥ पुनराहिकि॥ मूनमूनि॥ ५१॥ काकाजि॥ ५२
हडालिकि॥ ५३॥ गृहदवति॥ ५४॥ पुनपूत्रि॥ ५५॥ वरुनि॥ ५६॥

प्रवलि॥ ५१॥ उपपवलि॥ ५८॥ गमगानि॥ ५९॥ ~~उपगमगानि॥~~ ५०॥ महादः
धि॥ ५१॥ ~~रुद्रि॥~~ ६२॥ गशि॥ ६३॥ मृच्छि॥ ६४॥ सर्वदगक्रियागिधो॥
॥ ६५॥ श्वकयागिनिगनपनिस्यनउलाअवानगशवक्रवानाहियागमथुलशुलतां
स्वयाअः नमस्कात्रयायमाल॥ रामिष्यसः श्वधर्तदियाधायामथुलयासध्वसः उिको
रुयायअवानगः श्वउिकोनसविद्याकमः साक्राककानरुपिः महाक्राकल्पमानमानाअ
थहातविद्याकः सतसुथगक्यामासशयाशविद्याकः क्रिसपूदयावैगशुयाअविद्याकम
महायमसुदनिशयाअविद्याकमः दधससात्रयाकल्यानायकशयाशविद्याकः हन
प्रकानाकननः पल्पस्यानककालजानाअविद्याकमः श्वपल्लस्यानयामध्वसः श्वस्य

यागुरुजवनीवनशुभाविद्याकर्मः धार्ष्टिकमथुलसमहाज्ञाकृत्यमानतननरुथुलाअ
विद्याकर्म॥ धर्मशिवजवानाहिदविडत्यर्हिरुभाअविद्याका॥ धर्मवजवानाहिरुयि
अगथिन्यमधालसा॥ दिरुजाभयः निकात्राहानितंधनलपाअविद्याकः द्विसूखभय
तिपातरत्नालः शित्यजुधयस्वचनमिषाधननपाअविद्याकर्मः पचसुजानतियाशः ग
कालि२ शुभाअवक्तुमदयकाअविद्याकर्म॥ हतषशनाहानतपाहुक्रानाअविद्याक
मरुजनाहाननकर्हिरुज्ञानाअविद्याकर्मः पनयागिषासमाननरुभाअविद्याकर्म
जिससुदयाधेतशुभाअविद्याकर्मः समस्तमानगतनाशयानाशः पचवृद्धयासकृतने
पूयाअविद्याकर्मः हतकपाकुनियनपूनाशः कपाकुनितचूयाअविद्याकर्म॥ हतपं

पुष्पवत्तुशयिगथिदम्भधनसाः तकि कु तुल करि नाचकुमषनः धन्याताम्राहन
नतियाडाविष्ठाकम्भः श्रुष्टिनियाचन्द्रमासिनसधन पाशविष्ठाकम्भः शिरालस्थानयाव
श्याडाविष्ठाकम्भः श्रुष्टिधखिलारुसूषः कृष्णमूलमुखधननपाशविष्ठाकम्भः ॥ समस्त
सप्तानयागद्वयसदयकाशविष्ठाकः महाकनूषाचायाशः सूर्यविष्ठाडाः स्वर्गमध्यामान
सः चक्रावजश्याडाविष्ठाकम्भः थथिदम्भवजवानाहिदविमपुल्लयामध्वसविष्ठाकः सि
पुष्पनिस्पनश्लसाः यकमतयानागद्विधकः श्रीरत्नश्रुतसाश्रुहादयकाशविष्ठा
ताहनेश्रुक्तालडा आकाशानिधनश्रुक्वतनः ब्रह्मावयनिउत्पल्लिश्याडाविष्ठाकः ॐ
कालडाः ॐ कानडा निधनश्रुक्वतनः साहचरीयागिशाउत्पल्लिश्याडाविष्ठाकः ॥

उवाच ॥ उवाच ॥ अनि वनम् अननः कातात्री यागिनी उत्पत्तिरुया अविद्या कः ॥ ८ ॥
अः ॥ ८ ॥ अनि वनम् अननः विष्णु विद्वि उत्पत्तिरुया अविद्या कः ॥ ९ ॥ मृकाचः मृकाच
अनि वनम् अननः वाताहियागिनी उत्पत्तिरुया अविद्या कः ॥ १० ॥ उवाच ॥ उवाच अनि वन
मृकाचः ॥ ११ ॥ द्यायनिद्वि उत्पत्तिरुया अविद्या कः ॥ १२ ॥ मृकाच अनि वनम् अनन
तहाल श्रीयागिनी उत्पत्तिरुया अविद्या कः ॥ १३ ॥ कवि रुयमनुन स्वरूपतयागिनिमनवि
द्या कथयिष्यामि यागिनिगनपनिस्तः ॥ १४ ॥ द्वाजरावयानाः निवर्तिता ॥ १५ ॥ कायाना
थयागिनिगनयापाइसः काकपूयाशनमस्काजयाधकः ॥ १६ ॥ आग्नूत रुलसा आहादय
कलां ॥ ॥ **थनलिः** हनथ मरुकाचनसविद्या कः ॥ विनश्चपनिगथिद्विधातः ॥

[illegible]

पूजाताविद्या क॥ षडंगसहस्रकान्तः कपायस्वत्वागधनसज्जानाविद्या क॥ पंचम
जानमियाशविद्या क॥ ॥ **हनथ प्रयगाहिद** विरुयिगगधित्यपिधलसाः स्वपान
स्वानः शुक्लाहातधनलपाशविद्या कः स्वपानस्वानः थपनिगथिदपिधलसाः द्वा
उरुपातः असिबर्ह कपात॥ अरु कपातः ऊडाहातनः वृक्षशृङ्गाः कर्किजानाश
विद्या कः खडाहातस्वकान्तः कपालपातः खत्वागधनलपाशविद्या कः थनधुलयाग
स्वतलसः शिकानसस्वप्रयागिशानविद्या क॥ थयगिनरुयिगगधित्यपिधलसा॥
सशकाकलिश्शयाशिवानः वृद्धाकिशायगिशाः वृद्धवर्षीयागीशाः वृद्धवेनावशीया
गीशा॥ थपनिस्वप्रयगर्ममध्यापातानसव्याफमानशयाशविद्या क॥ ॥ **हन कपात**

रवानः निकाजा हानिनं कर्त्तुं कपान् शीनाडा विद्या कः प्रः थथिन्यमशुलया मध्यस्तः शिवजवा
नाहिद विनः समस्त संसा न उ धालया नाडा विद्या कः थथिन्यमशुलया नाहिद वीया न॥
सिष्यपुरुषि समस्त पति स्य नवान् वानः नमस्तानयाय सालध्वकः पुनवान् हनः श्रमस्तना
दविगाथिन्यमशुलयाः किन्सागन समुद्रमथनया कव्यलसः थमस्तनाद विउत्पत्तिरु
याडा विद्या कः सा ऊरु काम नृपि रुयाडा विद्या कः शास्ययाथ कडवला वल रुयाडा विद्या
कः समस्त नत्वनियाडा विद्या कः किमव्या काना रुतध्वल पाडा विद्या कः सा हा काना रुने
विऊन उत्पत्तिरु रुयाडा विद्या कः नानामस ध्वल पाडा विद्या कः स्वर्गमध्य पातालया लाक
समस्त वरुया नाडा विद्या कः थथिन्यमशुलया मध्यस्तः शिवजवा नाहिद वीया न॥

धकंशीगत्रनरुलसाश्राहादयकलं॥ अमसामकिदविशयिगगथिदमभालसाः रुश
जाहातगुकातंः खर्जपागः श्रुकुगः कपात्रः वरुः अरुः गदाः घृष्टः वनदानाः अतंगता
धनजपाडाविश्यावाभः क्रिमपुदयोवेत्तशयाडाविश्याकभ॥ ॥ **हृन्तखडागहातनरु**
ककाः धनुषः पागः खल्पागः कनसः डिगुलः मरुलः विश्याः अतधनजपाडाविश्याकभः स्व
यमित्वाधनलपाडाः समस्तदवनायासितमहासदनिशयाडाविश्याकः जाकिशीगालाप
रुनिः विनगानसंजागशयाडाविश्याकभः अमसमस्तदविगानयकस्वनरुशयाडाः श्रुम
रुपशयाडाविश्याः कः अश्रुमस्तकुशुधमादिसासवानगः श्रुमस्तधकंश्राहादयक
लं॥ गगश्रुमस्तडागशावजकाशिधीधकः गगसामकिउगहृन्तकभनस्यधनध

कः गगवातनाडा गवातनात्रतुवधकः गगवातदउगवातनधकाः अभाघसिद्धि
धकाः गगवातनाडा गवातनात्रतुवधकाः आहदयकलां ॥ **॥ हनप्यगुपिथः प्यगुक्रु**
प्यगुउपपिथः प्यगुक्रुदुः प्यगुस्यलाकपः प्यगुसगानः थननसंशकशयाडावा
नगः ससुउसमक्रुनधकाः आहदत ॥ थमासकिदविश्रयिपिगथिपिधलसाः पि
रुक्रुसंसदवपुजासंः मानूष्ययाकः विवाहाकर्मसंः यगधकर्मस ई ॥ नाशयासुया
ससः वेगधयामंगलकर्मसुदः सुदयासिद्धिसिद्धिसाधनकर्मसः ॥ प्रवक्ष्यकर्मस
१० पूजायायजागस ॥ ११ ॥ **॥ उकर्मस ॥ ११ ॥ दीर्घव्याख्यानज्ञायत ॥ १२ ॥**
प्रतिष्ठाकर्मस ॥ १३ ॥ पीथपूजास ॥ १४ ॥ निमिरुस ॥ १५ ॥ योगिनीपूजाः

यायस १६ मनुसाधनयायस १७ मंगलकर्मस १८ ॥ श्वरं समहाउत्तमधकः
श्वरसासकिदापमइधकं पूनापु च्चकालसः शिवरसत्त्वपगनूनरुलसाः आहादय
काशविष्णुतः ॥ ॥ हवत्तः श्वसासकिदविः उं आरुं मनुनमूधिष्ठानयाय ॥ हा
हाडिमनुनयधनयाय ॥ हकारमनुनवर्धिसनयाय ॥ हाकारमनुनः गधनासने
नासयायः ॥ डि कारमनुनः विरुहजनयायः थथिदगमृत्तनयास्यशयाय ॥ श
गुनपुरुतिरंससुसिथपनिस्वनः यायडा ॥ गधकः श्वरस्यनमसिलः श्वरसासकि
यातनिडायातः मृनादनयातः श्वरयासनुसिद्धिरुयिडासपूः समरुजागिता
काधरुयाडाः मानवतनकसः पारवयायिअधकः शिवगनूनरुलसाः आहादयकाश

हवत्सः च भवत्सवानाहिदविश्रयिडागथिठभ्रधातसाः स्वर्तमध्वजवेवक्तासुसविश्या
कभ्रः गतकिप्रनपसागाश्यातजडावनावनश्याशविश्याकः कवल्यमिक्काशथः स
हाडाकल्पमानयानाशविश्याकः स्वर्तमध्वपातात्रयालाकसमस्तवस्ययानाशविश्या
कः संः च भ्रसकसदयकाशविश्याकः भ्रसककानाशभ्रयानभ्रसकधनाहायकाश
विश्याकः भ्रः आवृद्धयासनसनसश्याशविश्याकः समस्तपापयाविषयसदयका
शविश्याकः सर्वकारं महाश्रानेन्दयानाशविश्याकः तावधायजिवादिदयाशव
क्वस्यकाविश्याकः भ्रः तावधायः सिः भ्रतः ल्याहवा॥ सिमाथथिचविलयसविश्या
नाशः सतात्रधनयानाशः महाविलयश्याशविश्याकः ननधयनिर्मानिवक्ता॥ सं

तागवक्रः नारिः हृदायः क॥१८॥ श्वगवक्रः सव्याफमानशयाशवावः कृत्स्नानां कपूया
अविद्याकम्पः थथिहमवक्रवानाहिनशलासांः कृपानि समस्त संतानल जायायनाल॥
हतेथमवक्रयागिति शयिआगथि हमधालसाः पुकोनाहाने धनलपाडाविद्याकम्पः स्थ
श्वमिरवाकनाडाः काठिआसूर्ययासमन शयाशविद्याकम्पः धूया कृगुलितहमाडानन
सिनमात्मानकाषायाडाः सतिमात्मानकोत्वायाडाविद्याकम्पः जिनपूदयोवेसशयाडाः ॥
कठठवक्रयाडाः थडा मयवावावावाननूनाडाः स्वधियापायनगहानाडाः कनकन
कानाडाः नूयाद्युमानातयागस्पषनाधायः श्विननजसहिताडाविद्याकम्पः त्वडानामि
सफपागानः श्वडानाहानिसकर्कि॥ हतेडासुडलालस्वानेः त्वडासकर्किमूडुः हने

ऊअतः खगड॥ खअसः पासः थर्धनलपाडाविश्याकः कपाडुनियनषूनाडाः कपाडुकि
नचूयाडाविश्याकः पनयागिनिडावर्धवलर्शयाडाविश्याकः मृगि काला मास ध्यस
विश्याकः मृतकनागनऊनासहिनाडाः मूर्धचन्द्रसिलसधनलपाडाः महाधलायमान
नविश्याकः वासकिनागनं कलसहिनाडाः महापर्वनागनऊसहिनाडाः स्पष्टनागनग
लसकाखायाडाः कर्कनिकनागनऊनासहिनाडाः तऊकनागनखडाहासिहिन
डाः वनूतनागनऊडासपनसहिनाडाः कलिकातागनखडासपनसहिनाडाः पर्वना
गनऊडासहिनकाडाः गंखपावनागनखडासहिनकाडाः नानाकुलासानियाकि
सानियाडा॥ महाजाकल्पसानयानाडाविश्याकः॥ ॥ हनपचवृक्षयामकाहनय्याडा॥

[illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ विद्याः कांतिरनन्तमस्मान्मयायमात्मनः ॥ ॥ शुभं शुभं शुभं सर्वदा
॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लृप्ते लिलमं शुभं दधति ॥ ॥ थनदं क्रिनामयकां ॥ थनप्रतिमादग्नितयाचकां
थनसिद्धयन्तिकामाकाशतयाशः गन्तुमशुलदधकां ॥ ॥ लाकपालवलिद्विधा विर्जन
थननिनाशनमकरुणालवान्तः सगन्तुमाय ॥ थनकृत्तिकलसमालसगन्तुमगलगन्तु
पत्रय ॥ ॥ उल्लङ्घनीधनकाचतप्रवरः केलीकलतथं तिसिलप्रहिनेः वृद्धाविवृद्धावृद्ध
पुनः कलमगलरुवकुर्गः पत्रमारुष्यकां ॥ ॥ थनप्राप्तकसरुयकां ॥ थनमशुलदध
नयाकां ॥ वज्रादिष्यकां ॥ थनद्रोपनययकां ॥ ३ ॥ ॐ सर्ववृद्धवृद्धासहिमसामवृद्धप्रति
स्वाहा ॥ थनप्राप्तमालानडा स्वाहा ॥ गन्तुमनुकन्य ॥ थनसिद्धनाहनितिवकां ॥ थनति

घासनसविद्यानागिवाङ्गवियका॥ ॥ साङ्गाङ्गनपाङ्गवियका॥ सिष्यपनिर्गुलः॥ थनगुन
नग्राङ्गवियका॥ साङ्गाङ्गनपाङ्गवियका॥ पचगालिसमङ्गागः॥ पचान॥ ॥ थनपुष्टकाय॥
पाननयाय॥ ॥ थनगुलाङ्गसाङ्गाङ्गनसधुलपुदकिष्ठा॥ ॥ गीतचकिङ्कुल॥ थनगानमि
काय॥ ॥ सिधुनगुलाङ्गाय॥ ॥ थनसविद्यायका॥ ॥ थनपचापचानपूजायाय॥ थनस
डालिहानविद्यावका॥ थनग॥ ॥ सपूजायाय॥ गीतधनधन॥ हाङ्गगुलननः॥ चकिङ्कुल॥ थनम
धुलपुदकिष्ठा॥ गीतगङ्गमूला॥ थनसविद्यावका॥ ॥ थनपचापचानपूजायाय॥ हाङ्ग
॥ ॥ थनसिष्यपनिर्गुलसकस्यनदकिष्ठाकाय॥ ॥ गीत॥ ॥ सलिहानविद्यावका॥ ॥ थन
सिधुवायाविधि॥ शल॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ धनमधुलप्रदं किं नायाय ॥ ॥ धनश्रीगान्धर्वप्रदं किं नमस्य न
मधुलप्रदं किं नाया नाश ॥ नमस्त्यागयाय ॥ ॥ धनलिङ्गमाकाशयाय ॥ ॥ ॐ नमो ज्ञाना
निवन्धुपूजाकर्तुवन्मादय ॥ सुनायको ह किं कविष्यामि न ज्ञानं हं न वाञ्छेन ॥ न ज्ञानं उह
त्वस्य नृपं न्यंगीरन् न वागनं ॥ ज्ञानाभिः कर्मवाहकैस्त्वं च न धाक्य ॥ साह किं हृदि
संक्षेपं निष्पूजापूजयन् ॥ न कृता इर्न गिन्नाथ ॥ सयदन्वावत्राचरन् ॥ अपत्राटस
हृत्प्राप्तिक्रियं ॥ हं निसमया ॥ दासी इहं मितिसामन्वाकृतस्वपत्रम्यश्वत्र ॥ आवाह
ते ज्ञावामि ते ॥ वज्ञानाभिपूजनं ॥ ध्यानविगर्जनवापि कृतस्वपत्रम्यश्वत्र ॥ यत्कृतं
इत्थं किंचित्त्वेयामुदधियापूनः कृतं व्यक्तुस्वयात्ताथः यदि सा जाहिदादिनाः कृत्य

उभयननाः कित्वमवसत्रशक्तनरस्याकाग्रपुत्रावन्तत्र क्रमापन्नस्यथन ॥ ॥थननमत्का
त्रकाय ॥थनविशर्जनयाय ॥ ॥थनवज्रनमधुलनायनयाय ॥थनवज्रशक्तमस्तुयाग
नित्वयै ॥थनसागादवयाथास्तक्रमास्तुयानाभिः विशर्जनयाय ॥थनमृदाविशर्ज
न ॥ ॥थनखानूदिक ॥द्वदिक ॥थनकालसतालशङ्काय ॥थनप्रियेय ॥ ॥थन
काथकूपवाविय ॥ ॥थनकिलनदवलिय ॥ ॥थनरुतनमाशदगकीधयात
श्रुक्विय ॥थनमधुलयासिक्रशयाशकाय ॥ ॥मधुलसकीतालिय ॥थनकोमा
नियागोषविय ॥ ॥गनत्रक ॥कननकाय ॥थनरुमिधधनः सखसुधिकाय ॥
थुतिप्रधियाविधिशल ॥ ॥

धनगरपुत्रायाय न विधि दय कं थुति ॥ ॥ साइइ ॥ पचासुत ॥ किसलि ॥ दाखीखा
नकवा ॥ कलसपूजाकलमालका ॥ समधोपनिपात ॥ ॥ चवचन १२ ॥ मोह
द ४ दासचन १ किसलि ॥ द ४ धलसुन्ननं; नगानत्तया १ दाखीखान ॥ नाय।पा
नाय ॥ धंधूपाया ॥ सिद्धगग ॥ पचसुत्तका ॥ पचनत्तना ॥ पचविहि ॥ पचगंध ॥
पचपल्लव ॥ पचगंध ॥ रुतः पूजा ॥ पुनरुलमालका ॥ समयधालामालका
गाकसहेनकमस्याय ॥ ॥ विष्णु ॥ भक्तिगरपुत्रायापूजाकमस्यायविधिइल
थनकिनयाकदयकं थुति ॥ ॥ पचगंधः पचासुत ॥ पचसुत्त ॥ पचनत्त ॥ पच
विहि ॥ पचगंध ॥ पचपल्लव ॥ पचः पीरु ॥ रुलरुल ॥ न्यामगुपात ३ ॥ अहया

अगसा न वा ॥ इति नृपल ॥ अहयापय ॥ प्रवपताक ॥ कर्धपताक ॥ सक्कुइडात्र
धा अइडात्र ॥ नायुअइडा ॥ वरुया माल कय म न ॥ नाहिकित अहया म पु १ ॥ स
स १० गधन के माल ॥ पु १० किन न कि ॥ ०० काप का ॥ सुमन स्या न ॥ अत्र न नाय ॥ कुत्र
का ॥ अय वा निना ग ॥ खन १ क स या पा ३ ॥ आस धि माल का ॥ गथि वा धन २ व अ
ध ४४ः सख म य ॥ सत्रा वि हि ॥ मत्रि स ह ॥ अघ पा ३ ॥ रूपू का का रूप ॥ कय ख प ॥
नाय य नान प न ॥ ओ म धि इ ८ ॥ दा रु खान क वा ॥ नाय य नाय ॥ धंधु पासः सि इ
न ॥ गग सा इ इ थ कि कि न न या न रु ल ॥ ॥ ॥ संव न ००१ मि अ उ न उ रु या ५
ध पु न थ स रु सि ध य का य न रु ल ॥



































